भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 270 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 24 सितम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

रावेश अस्थाना की नियुक्ति के खिलाफ याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका का कॉपी-पेस्ट, दिल्ली हाईकोर्ट ने याचिकार्ता को चेताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी राकेश अस्थानाकी

दिल्ली पुलिस कमिश्नर के पद पर नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिका को गुरुवार को 'कॉपी-पेस्ट' बताया और ऐसा करने वाले को चेतावनी दी कि वह भविष्य में ऐसा कुछ नहीं करें। हाईकोर्ट ने इस पर भी नाराजगी जताई कि याचिकाकर्ता के वकील याचिका में लिखी बातों को समझा पाने में असमर्थ थे, जोकि कथित रूप से नकल की गई थीं। चीफ जस्टिस डी.एन. पटेल और जस्टिस ज्योति सिंह की बेंच ने कहा कि इससे पहले सुप्रीम कोर्ट में दायर दो याचिकाओं से पूरी की पूरी याचिका नकल की गई है, यहां तक कि अर्द्धविराम और पूर्णविराम भी।

भारत संग पार्टनरशिप पर गर्व

मोदी संग बैठक पर बोले क्वालकॉम के सीईओ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन दिवसीय अमेरिका के दौरे पर गए हुए हैं। अमेरिका दौरा पर गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज ग्लोबल सीईओ के साथ बैठक की।

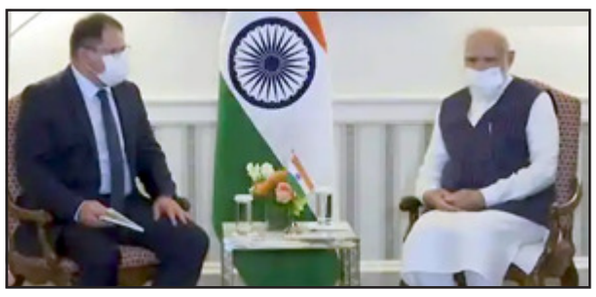

पीएम मोदी ने अपनी यात्रा के पहले दिन क्वालकॉम, एडोब, फर्स्ट सोलर, जनरल एटॉमिक्स और ब्लैकस्टोन जैसी पांच प्रमुख कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष (सीईओ) के साथ एक-एक करके मुलाकात की। प्रधानमंत्री मोदी ने जिन पांच कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों से मुलाक़ात की, उनमे एडोब के सीईओ शांतनु नारायण और जनरल एटॉमिक्स के सीईओ विवेक लाल भारतीय मूल के अमेरिकी हैं। प्रधानमंत्री मोदी और क्वालकॉम के सीईओ क्रिस्टियानो आर अमोन के बीच सफल बैठक हुई और अमोन ने भारत में 5जी और अन्य क्षेत्रों में काम करने की इच्छा जताई। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी बुधवार को अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर वाशिंगटन पहुंचे। अपनी यात्रा के दौरान वह अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के साथ पहली बार आमने- सामने की बैठक करेंगे। विदेश मंत्रालय ने बताया कि पीएम मोदी और अडोबी के सीईओ के बीच भारत में चल रही गतिविधियों और भविष्य की निवेश योजनाओं पर चर्चा की। स्वास्थ्य, शिक्षा और अनुसंधान एवं विकास जैसे क्षेत्रों में डिजिटल इंडिया के प्रमुख कार्यक्रम का लाभ उठाने के विचारों पर भी चर्चा की गई।सूत्रों ने कहा कि पीएम मोदी ने जोर देकर कहा कि भारत के पास महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिए पैमाना है। उन्होंने कहा कि भारत ने 5ञ मानक तैयार किए हैं और क्वालकॉम से सक्रिय रूप से भाग लेने का आग्रह किया है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि चूंकि क्वालकॉम ने पहले से ही भारतीय प्रतिभा पर भरोसा किया है, इसलिए वह पीएलआई योजना के लाभ के साथ निर्माण शुरू कर सकता है। उन्होंने नई उदारीकृत ड्रोन नीति के बारे में भी बात की और कहा कि क्वालकॉम नए उभरते बाजार में नए अवसरों में भाग ले सकता है। व्यापार को बढ़ावा देने में पीएम मोदी के नेतृत्व को लेकर क्वालकॉम के अध्यक्ष और सीईओ क्रिस्टियानो अमोन ने कहा कि मुझे लगता है कि भारत को निवेश के लिए एक डेस्टिनेशन बनाने में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने का दृष्टिकोण बहुत सफल रहा है और हम इसका स्वागत करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमने सेमीकंडक्टर्स पर बात की जो बातचीत का एक महत्वपूर्ण विषय है।

फिर भूपेश बघेल लगाएंगे दिल्ली की दौड़

राहुल गांधी के बस्तर दौरे को देंगे अंतिम रूप

नई दिल्ली (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ कांग्रेस में जारी आंतरिक कलह के बीच राहुल गांधी के बस्तर दौरे को अंतिम रूप देने के लिए राज्य के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अक्टूबर के पहले सप्ताह में दिल्ली आ सकते हैं। इस बात की जानकारी सीनियर मंत्री और सरकार के प्रवक्ता रविंद्र चौबे ने बुधवार को दी। चौबे ने कहा कि राहुल गांधी की यात्रा की तैयारी पूरी है और बस्तर के कोंटा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक आबकारी मंत्री कवासी लखमा ने कुछ दिन पहले इसकी समीक्षा की और कार्यक्रम के संभावित स्थान का सुझाव दिया।

प्रेस मीट में चौबे ने कहा, पिछली बार जब बघेल जी ने (भूपेश बघेल) दिल्ली का दौरा किया था तो उन्होंने राहुल जी (राहुल गांधी) को राज्य में आमंत्रित किया था। राहुल जी ने यात्रा के लिए अपनी स्वीकृति दे दी.. हम सभी तैयार हैं और अब मुख्यमंत्री के अक्टूबर के पहले सप्ताह में दिल्ली जाने की संभावना है और फिर वह डेट फाइनल करने को लेकर राहुल जी के साथ चर्चा करेंगे। मंत्री ने आगे कहा कि राहुल गांधी राज्य के सरगुजा संभाग और छत्तीसगढ़ के मैदानी इलाकों में यात्रा कर सकते हैं। बता दें कि दो दिन पहले ही टीएस सिंह देव भी दिल्ली दौरे पर आए थे। दरअसल, जब पिछले महीने छत्तीसगढ़ कांग्रेस में मुख्यमंत्री कुर्सी को लेकर झगड़ा सामने आ गया था तो 28 अगस्त को कांग्रेस आलाकमान के साथ लंबी बैठक के बाद यह सुझाव सामने आया कि राहुल गांधी खुद राज्य का दौरा करेंगे और उसके बाद ही विवाद पर कोई फैसला होगा। दिल्ली दौरे के दौरान भूपेश बघेल ने दावा किया था कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी अगले सप्ताह राज्य का दौरा करेंगे, खासकर उसे देखने के लिए जो बस्तर में जो काम हो रहा है। हालांकि, अगले ही दिन जब सिंहदेव लौटे तो उन्होंने कहा कि उन्होंने नेतृत्व से भी बात की थी और लीडरशिप ने निर्णय सुरक्षित रख लिया है। तुलसीदेव सिंह की मांग है कि उन्हें अब राज्य की कमान सौंप दी जाए। टीएस सिंह देव के समर्थकों का कहना है कि मुख्यमंत्री पद को लेकर ढाई-ढाई साल का समझौता हुआ था। हालांकि, बघेल खेमा इससे इनकार करता रहा है।

टीकाकरण के बाद भी क्वारंटाइन रहना जरूरी क्यों? भारत ने यूके के नियम को बताया भेदभावपूर्ण

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने ब्रिटेन के उस फैसले को भेदभावपूर्ण बताया है जिसमें कोविशील्ड टीके की डोज लेने के बाद भी वहां की यात्रा करने वाले लोगों को 10 दिन का क्वारंटाइन अनिवार्य किया गया है। भारत सरकार ने गुरुवार को कहा कि उम्मीद है कि इसका एक त्वरित समाधान मिल जाएगा। ब्रिटेन के नए यात्रा नियमों के बाद सरकार की हो रही किरकिरी के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने कहा कि दोनों देश इस मामले पर बातचीत में लगे हुए हैं। स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने कहा कि हमारा मानना है कि ब्रिटेन में 4 अक्टूबर से जो व्यवस्था लागू करने का प्रस्ताव है, वह भेदभावपूर्ण है। दोनों पक्ष बातचीत कर रहे हैं और हमें विश्वास है कि एक त्वरित समाधान निकाला जाएगा। हम इसी तरह से बदले का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। ब्रिटिश उच्चायुक्त एलेक्स एलिस ने गुरुवार को कहा कि भारत और ब्रिटेन ने वैक्सीन प्रमाणन के मुद्दे पर उत्कृष्ट तकनीकी चर्चा की। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि किसी भी पक्ष ने एक-दूसरे की प्रमाणन प्रक्रिया के साथ तकनीकी चिंताओं को नहीं उठाया। एलिस ने बुधवार को कहा था कि कोविशील्ड वैक्सीन में कोई समस्या नहीं है, लेकिन मुख्य मुद्दा भारत के एंडेंग पोर्टल के माध्यम से किया गया वैक्सीन प्रमाणन है।

एमपी में भी प्रयोग करेगी बीजेपी?

2 माह में 5 बार दिल्ली की दौड़, नड्डा-चौहान की मुलाकात के बात सियासी सुगबुगाहट तेज

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की बुधवार को दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात को राजनीतिक दृष्टि से काफी अहम माना जा रहा है। बीते दो माह में शिवराज चौहान की दिल्ली यात्राओं को लेकर तमाम तरह की अटकलें रहीं हैं। माना जा रहा है कि दो महीने में अब तक करीब पांच बार शिवराज दिल्ली की दौड़ लगा चुके हैं। चौहान के अगले सप्ताह फिर से दिल्ली आने की संभावना है। गौरतलब है कि हाल में भाजपा व कांग्रेस ने अपनी सत्ता वाले कुछ राज्यों में नेतृत्व परिवर्तन किए है। माना जा रहा है कि दोनों दलों ने सत्ता विरोधी माहौल को खत्म करने के लिए यह बदलाव किए हैं। भाजपा ने हाल के महीनों में उत्तराखंड,

गुजरात व कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन किए हैं तो कांग्रेस ने पंजाब में मुख्यमंत्री बदला है। सूत्रों के अनुसार, भाजपा नेतृत्व अपनी सत्ता वाले सभी राज्यों की व्यापक समीक्षा कर रहा है और भावी चुनावी रणनीति के अनुसार बदलाव कर रहा है। इसमें हरियाणा, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश व हिमाचल प्रदेश शामिल हैं। मध्यप्रदेश में हलचल काफी ज्यादा है इसका अंदाजा मुख्यमंत्री के दिल्ली दौरों और पार्टी के केंद्रीय नेताओं से मेल मुलाकातों से लगाया जा सकता है। सूत्रों की मानें तो मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बीते दो महीनों में पांच बार दिल्ली आ चुके हैं। जुलाई में जहां चौहान ने तीन बार दिल्ली का दौरा किया था, वहीं अगस्त में वह एक बार दिल्ली आए थे। हालांकि, अब तक स्पष्ट नहीं है कि आखिर किस मसले को लेकर लगातार शिवराज दिल्ली आ रहे हैं।

भारत ने जो किया, कोई अन्य देश नहीं कर सकता : एससी

केंद्र की तारीफ, कहा- आज हम बहुत खुश

ई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना से निपटने में केंद्र सरकार के इंतजामों और कोविड-19 से मरने वालों के परिजनों को 50 हजार रुपए देने के केंद्र सरकार के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने खुशी जाहिर की है। कोरोना से जान गंवाने वालों के परिजनों को मुआवजे के तौर पर 50 हजार रुपए देने के फैसले पर खुशी जाहिर करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आज हम बहुत खुश हैं और भारत ने जो किया है, ऐसा किसी अन्य देश ने नहीं

किया होगा। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार की इस फैसले पर विचार किया और अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। अब इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट 4 अक्टूबर फैसला सुनाएगा।सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्र सरकार के इस कदम से उन लोगों के परिजनों को थोड़ी सांत्वना मिलेगी, जिन्होंने अपनों को खोया है।जस्टिस शाह ने कहा कि हमें खुशी है कि पीड़ित व्यक्ति के आंसू पोंछने के लिए कुछ किया जा रहा है। केंद्र की ओर से सॉलीसीटर जनरल तुषार मेहता ने कहा, हम जीवन को पहुंची क्षति की भरपाई नहीं कर सकते लेकिन पीड़ित परिवारों के लिए देश जो कुछ कर सकता है, किया जा रहा है। जस्टिस शाह और एएस बोपन्ना ने भी कोरोना वायरस महामारी से निपटने के लिए भारत के इंतजामों की सराहना की। पीठ ने कहा हम खुश हैं कि पीड़ितों को कुछ सांत्वना मिलेगी। यह कई परिवारों के आंसू पोंछेगा। हमें इस तथ्य का अवश्य ही न्यायिक संज्ञान लेना चाहिए कि लोगों की कई सारी समस्याओं के बावजूद कुछ किया जा रहा है। भारत ने जो किया है, कोई अन्य देश नहीं कर सका है। न्यायालय अधिवक्ता गौरव कुमार बंसल और कोविड-19 के चलते अपने परिवार के सदस्यों को खोने वाले कुछ लोगों की याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। बता दें कि केंद्र सरकार ने बुधवार यानी 22 सितंबर को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि कोरोना से मौत पर परिवार को 50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। केंद्र ने स्पष्ट किया था कि यह मुआवजा राज्य सरकार की ओर से दिया जाएगा ।

'हंटर किलर' से कांपेंगे दुश्मन

भारतीय सेना को मिलेंगे और 118 अर्जुन टैंक, सरकार ने दिया सप्लाई का ऑर्डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना की ताकत में और इजाफा होने वाला है, क्योंकि भारत सरकार थल सेना के लिए सरकारी क्षेत्र के उपक्रम हैवी वेहिकल्स फैक्ट्री (एचवीएफ) से नई क्षमताओं से लैस 118 मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन एके-1ए खरीदेगी। सेना की लड़ाकू क्षमताओं में इजाफे के लिए एक बड़ा कदम उठाते हुए रक्षा मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को 7,523 करोड़ रुपये की लागत से भारतीय सेना की खातिर 118 मुख्य युद्धक टैंक (एमबीटी) अर्जुन की खरीद को लेकर एक करार को अंतिम रूप दिया। मंत्रालय ने अर्जुन एमके-1ए टैंकों के लिए हेवी व्हीकल फैक्ट्री (एचवीएफ), अवडी, चेन्नई को यह ऑर्डर दिया है। यह एमबीटी एमके-1ए अर्जुन टैंक का नया संस्करण है, जिसमें 72 नई विशेषताएं और एमके-1 संस्करण से अधिक स्वदेशी उपकरण हैं।

मंत्रालय ने एक बयान में कहा, 'रक्षा मंत्रालय ने 23 सितंबर को भारतीय थल सेना के लिए 118 मुख्य युद्धक टैंक (एमबीटी) अर्जुन एमके -1 ए की आपूर्ति के लिए हेवी व्हीकल फैक्ट्री, अवडी, चेन्नई को एक ऑर्डर दिया।' इसमें कहा गया है कि 7,523 करोड़ रुपये के इस ऑर्डर से रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' पहल को बढ़ावा मिलेगा तथा यह 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में एक बड़ा कदम है। मंत्रालय ने कहा कि टैंक दिन और रात के दौरान सटीकता के साथ लक्ष्य को साधने के अलावा, सभी तरह के इलाकों में सहज गतिशीलता सुनिश्चित करेंगे। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने अर्जुन एमबीटी अद्यतन करते हुए इसे विकसित किया है। अर्जुन भारतीय सेना का मुख्य युद्धक टैंक है।मंत्रालय ने कहा कि एमके-1ए सटीक मारक क्षमता वाला टैंक है और सभी तरह के क्षेत्रों में गतिशीलता में सक्षम तथा उन्नत प्रौद्योगिकी प्रणालियों से लैस है। यह दिन और रात, दोनों स्थिति में दुश्मन से मुकाबला कर सकता है। इसने कहा कि हेवी व्हीकल्स फैक्ट्री को मिले इस आर्डर से 'एमएसएमई' सहित 200 से अधिक भारतीय कंपनियों के लिए रक्षा निर्माण में एक बड़ा अवसर खुलेगा और करीब 8,000 लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। मंत्रालय ने कहा है कि यह निर्णय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों की दिशा में बड़ा कदम है। गौरतलब है कि पीएम मोदी ने पहला एमके-1ए टैंक 14 फरवरी 2021 को थल सेना प्रमुख जनरल एम एम नरवने को चेन्नई में सौंपा था। इन टैंकों के मिलने के बाद भारतीय सेना जमीन पर पहले से और ज्यादा मजबूत हो जाएगी। इस टैंक के डिजाइन को डीआरडीओ ने तैयार और विकसित भी किया है। बता दें कि भारतीय सेना के बेड़े में पहले से ही 124 अर्जुन टैंक शामिल हैं।

विकास के लिए सकारात्मक सोच चाहिए जो केंद्र और राज्य की सरकारें कर रही है : सीएम योगी

गोरखपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विकास के लिए सकारात्मक सोच चाहिए। जहां सकारात्मकता नहीं, वहां विकास भी नहीं। यह सोच संस्कार से जुड़ कर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है। इसी सोच को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गांव, किसान, महिला, नौजवान, गरीब सब के कल्याण के लिए अपने वास्तविक एजेंडे को जोड़ अनेक जन कल्याणकारी कार्यक्रम शुरू किए। आज केंद्र एवं राज्य में राष्ट्रीय मूल्यों की सरकार है, इसी सकारात्मक सोच के साथ काम कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, गुरुवार को महंत दिग्विजयनाथ पार्क में युग पुरुष ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ की प्रतिमा का अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उनके साथ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान भी मंच पर उपस्थित रहे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री उज्जवला योजना ने देश में ग्रीन एनर्जी के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति

पैदा की।केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के पेट्रोलियम मंत्री के रूप में कार्यकाल का जिक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा कि उन्होंने सीएसआर योजना के माध्यम से रसोई गैस देने की योजना की शुरूआत गोरखपुर से की। बताया कि कैम्प लगा कर गोरखपुर में तकरीबन एक लाख से अधिक कनेक्शन वितरित किए। बाद यह योजना 2016 में देश में स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में नई क्रांति करते हुए उज्ज्वला योजना के रुप में आई जिसकी शुरूआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूपी से की। अब उज्ज्वला योजना के दूसरे चरण भी शुरू हो चुका है। बिना भेदभाव हर गरीब को योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है।सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारत को एक वैश्विक मंच प्रदान किया है। जब हम 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाते हैं तो यह भारत की ऋषि परम्परा के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव प्रकट करता है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने योगीराज बाबा गंभीरनाथ को श्रद्धांजलि स्वरूप दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में यूजीसी की शोध पीठ स्थापित करने की घोषणा कर नाथपंथ, गोरक्षपीठ और उसके योगियों की हजारों वर्षो की विरासत को वैश्विक फलक पर प्रतिष्ठित करेगा।

जल्द मिल सकती है सिंगल डोज की वैक्सीन, भारत स्पुतनिक लाइट टीके के निर्यात को इस महीने दे सकता है मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस के लिए देश में बन रही रूसी वैक्सीन स्पुतनिक लाइट को भारत सरकार की ओर से जल्द ही निर्यात की अनुमति मिल सकती है। सूत्रों की मानें तो निर्यात की अनुमति इसी महीने मिलने की संभावना है। हालांकि, अभी तक देश में इस वैक्सीन के इस्तेमाल को मंजूरी नहीं मिली है। स्थानीय मीडिया के हवाले से बताया कि भारतीय दवा निर्माता कंपनी हेटेरो पहले ही इस सिंगल डोज वाली कोरोना वैक्सीन की 20 लाख से अधिक खुराक का प्रोडक्शन कर चुकी है। वैक्सीन को मंजूरी देने के लिए देश के दवा नियामक ने एक अलग इम्यून-ब्रिजिंग क्लिनिकल ट्रायल की मांग की है।एक सूत्र ने कहा, 'स्पुतनिक लाइट का निर्यात इस महीने से शुरू होने की उम्मीद है। लाइट भारत में स्वीकृत वैक्सीन नहीं है और स्टॉक उपलब्ध है। सरकार पर निर्यात का दबाव है।

खबर संक्षेप

सोशल आडिट टीमो का तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

प्रतापपुर। जिला ग्राम विकास संस्थान बसनेहटा मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत मांडा एवं सैदाबाद विकास खंड की नवगठित सोशल ऑडिट टीमो सोशल आडिट विषयक तीन प्रशिक्षण के समापन के अवसर पर जिला प्रशिक्षण अधिकारी डॉ.संजय कुमार ने प्रतिभागियों को सोशल आडिट की अवधारणा, प्राविधान, टीमो के कार्य एवं दायित्व का विस्तार से प्रकाश डाला।उन्होंने मनरेगा ड्राफ्ट प्रतिवेदन तथा आडिट के सूक्ष्म बातो की जानकारी दी।सत्र प्रभारी गौरीशंकर ने सोशल आडिट का मॉक डील कराया तथा मनरेगा के साथ रजिस्टरों तथा कार्यो की फाइल सहित समस्त अभिलेखो पर बिंदुवार समझाया परीक्षण में 35 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग लिया।इससे पहले संत रविदास नगर के भदोही, औराई, प्रयागराज धनूपुर, फूलपुर,हंडिया मांडा,सैदाबाद के सात सत्रों में 278 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

वैक्सीनेशन कैम्प में 315 नें कराया वैक्सीनेशन

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना की वैक्सीनेशन टीम ने विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत निरिया के प्राथमिक विद्यालय पर शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें वैक्सीनेशन कराने वालों कीं भारी भीड़ जुटी जिसमें महिलाओं ने वैक्सीनेशन कराने में सबसे ज्यादा दिलचस्पी दिखाई । वैक्सीनेशन कैम्प 315 लोगों का वैक्सीनेशन किया गया ।इस मौके पर व्यवस्था के आयोजक प्रधान प्रतिनिधि मुकेश कुमार नें गांव के सभी लोगों को कोविड महामारी के बचाव के लिए टीकाकरण कराने के लिए लोगों को प्रेरित कर वैश्विक महामारी बचाव के लिए वैक्सीनेसन कराने की अपील की ।इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित गांव के गणमान्य लोगों सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना के अधीक्षक नवीन गिरि समेत टीम को आभार व्यक्त किया ।

गडैला में ढाई सौ लोगों का हुआ वैक्सीनेसन

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना की वैक्सीनेसन टीम द्वारा ग्राम पंचायत गडैला में आयोजित शिविर में देर शाम तक हुए टीका करण अभियान में दो सौ पंचास लोगों का वैक्सीनेसन किया गया है । इस मौके पर ग्राम प्रधान विनय सिंह यादव लोगों को वैश्विक महामारी से बचाव के लिए लोगों को प्रेरित किया और बड़ी संख्या में लोगों नें देर शाम तक कराया वैक्सीनेसन ।इस मौके पर विद्योतमा, मधुबाला स्वास्थ्य टीम को प्रधान विनय सिंह यादव ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त किया।

लोकतांत्रिक और आर्थिक अधिकारों का राष्ट्रीय प्रतीक बन गया किसान आंदोलन : राजिंदर सिंह

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। तीन कृषि कानून के खिलाफ किसान आंदोलन देश के आजादी के बाद से सबसे बड़ा आंदोलन है और यह किसान का आंदोलन लोकतांत्रिक और आर्थिक अधिकारों का राष्ट्रीय प्रतीक बन गया है। उक्त बातें घूरपुर मे आयोजित संयुक्त किसान मोर्चा के जनसभा को संबोधित करते हुए सभा के मुख्य अतिथि कीर्ति किसान यूनियन पंजाब के उपाध्यक्ष राजिंदर सिंह दीप सिंहवाला ने कही। आगे उन्होंने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में आंदोलन बढना सफलता की एक कुंजी है, क्योंकि यह मोदी सरकार इस आंदोलन को हराने के लिए जातिगत व साम्प्रदायिक लामबंदी पर निर्भर है। आगे कहा कि पंजाब ने दिल्ली के बाहरी इलाके में बड़ी संख्या में एक साथ आकर विरोध प्रदर्शन पर लगे फासीवादी प्रतिबंधों को चुनौती दी है। हमने कोरोना लॉकडाउन को तोड़ा, हमने पानी की बौछारों और लाठी का डटकर मुकाबला किया, हमने सड़क ब्लॉकों और खाइयों को पार किया। उस एकता, साहस और दृढ़ संकल्प ने मोदी सरकार को बैकफुट पर धकेल दिया है। ऐसे ही आप सभी से मुकाबला करने के लिए तैयार होना पड़ेगा। कहा कि मोदी किसानों की मांगों को स्वीकार नहीं कर रहे हैं क्योंकि वह भारतीय लोगों के हितों का नेतृत्व नहीं करते हैं, बल्कि बड़े कॉरपोरेट्स और विदेशी शोषकों के

संयुक्त किसान मोर्चा जन सभा को सम्बोधित करते किसान नेता व जनसभा को सुनते किसान

हितों का नेतृत्व करते हैं। बीकेयू के सीनियर उपाध्यक्ष राजेश चौहान ने किसानों को बेवकूफ बनाने के लिए मोदी की आलोचना की। कहा कि वे अब अपनी फसल कहीं भी बेचने के लिए स्वतंत्र हैं, जबकि वास्तव में वह सरकारी मंडियों, सरकारी खरीद और एमएसपी को बंद कर रहे हैं। एआईकेएमएस महासचिव, डॉ आशीष मित्तल ने बड़े कॉरपोरेट को राहत देने के लिए सार्वजनिक धन का उपयोग करने के लिए सरकार को पर आरोप लगाया। कहा कि इसने दूरसंचार क्षेत्र की देय रकम ट्वाईलेट और कॉर्पोरेट के 2 लाख करोड़ रुपये के एनपीए रहा किए है, जबकि यह ईंधन और उर्वरकों पर कर बढ़ा कर अपने घाटे को पूरा कर रही है। यह सड़कें, प्राकृतिक गैस संसाधन, हवाई मार्ग, बंदरगाह, भूमि, खदानें, नदियाँ और जंगल बेचकर अपने नुकसान की भरपाई करते हैं।

मित्तल ने कहा कि पूर्वी यूपी में संघर्ष का बिगुल फूंका गया है। यह तब तक उठेगा जब तक इन कानूनों को दफन नहीं कर दिया जाता है और लोग भाजपा को लोगों के खिलाफ उसके अपराध की सजा नही दे देते। सभा को राम कैलाश, विनोद निषाद, सुरेश, दिनेश पटेल, भीम लाल, आकृति, रामू निषाद, शीटू नेता अभिनाश मिश्र, ऐटू नेता कमर उसरी, भूपेंद्र पांडेय, सुरेंद्र सिंह, ज्ञान सिंह पटेल, नुरुल इस्लाम, आदि ने सम्बोधित किया। अध्यक्षता कामरेड राम कैलाश, नसीर अंसारी, अनुज सिंह ने की।

बालू खनन का मुद्दा भी जोरों पर गूंजा...

संयुक्त किसान मोर्चा की जनसभा में बालू खनन का मुद्दा भी जोरों पर गूंजा। विगत पांच वर्ष पूर्व से घूरपुर इलाके में बालू खनन बंद किए जाने से भुखमरी के मुहाने पर खड़े हजारों बालू मजदूरो के मामले में भी सरकार पर निशाना साधते हुए नेताओ ने कहा कि कौशाम्बी मे मशीनों से बालू खनन कराया जा रहा है और वहीं यमुनापार मे ही बंद कराया गया है नाव से बालू खनन पर रोक लगा दिया है। जिसे सरकार शुरू कराए अन्यथा मजदूर सड़क पर उतर अनिश्चित कालीन प्रदर्शन करेगें।

लाल झंडे से पटा रहा घूरपुर इलाका

घूरपुर में आयोजित संयुक्त किसान मोर्चा की जनसभा के दौरान पूरा घूरपुर इलाका लाल झंडे से पटा रहा। बाजारों के लिंक मार्ग से लेकर बाजार के हाईवे लाल झंडे से पटा रहा।

नारे बुलंद करते किसान पहुंचे जनसभा में

स्थानीय क्षेत्र के भारी संख्या में किसान लाल झंडे व बैनर हाथों में लिए पकड़डियो के रास्ते और वहीं दूरदराज के किसान ट्रैक्टर ट्राली आदि वाहनों पर सवार होकर लाल झंडे लहराते किसान जिंदाबाद किसान कानून खत्म करो के नारे बुलंद करते जन सभा में पहुंचे। वहीं भारी संख्या मे किसान व मजदूर यमुना नदी के रास्ते नाव के माध्यम से भी पहुंचे।

चप्पे चप्पे पर तैनात रही पुलिस

संयुक्त किसान मोर्चा मे कई प्रदेश के दिग्गज नेता सहित हजारों की संख्या में पहुंचे किसानो के मद्देनजर चप्पे चप्पे पर यमुनापार की कई थानों की पुलिस पीएसी एहतियातन तैनात रही। कई गांवो के रास्तों सहित रेलवे क्रासिंग के समीप भी पुलिस तैनात रही। एडीएम प्रशासन विजय शंकर द्विवेदी, एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित, सीओ बारा अवधेश शुक्ल, सीओ करछना राजेश कुमार यादव, एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी, भी मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

वज्रपात से 20 बकरियों की मौत, बाल-बाल बचा चरवाहा

शंकरगढ़। गुरुवार को दोपहर बाद गरज-चमक के साथ कई स्थानों पर जोरदार बरसात हुई। इस दौरान वज्रपात की चपेट में आने से बीस बकरियों की मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन झुलस गईं हैं। समीप खड़ा चरवाहा बाल-बाल बच गया है। इसी तरह के हादसे में एक किशोर भी झुलस गया है। यह मामला जनपद के यमुनापार शंकरगढ़ क्षेत्र का है। यमुनापार के नारीबारी के ग्राम जरखोरी निवासी घनश्याम पुत्र राजधर दोपहर बकरियां चराने के लिए खेत की तरफ गया था। दूसरे पहर तेज हवाओं के साथ बरसात शुरू हो गई। इस दौरान आकाशीय बिजली भी गिरी, जिसकी चपेट में आने से खेत में चर रहीं 20 बकरियों की मौकेपर ही मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन झुलस गई हैं। बताया जाता है कि समीप ही खड़ा चरवाहा घनश्याम इस हादसे में बाल-बाल बच गया है। दूसरी तरफ क्षेत्र के बैरिहा में भीमसेन मांझी के मकान पर वज्रपात हो गया। इस हादसे में भीमसेन मांझी का 17 वर्षीय पुत्र भैय्यन झुलस गया। इलाज के लिए उसे समीप के अस्पताल ले जाया गया है।

बलात्कार के दो आरोपी चढ़े पुलिस के हत्थे

शंकरगढ़। यमुनापार के शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने बलात्कार के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मुखबिर की सूचना पर रानीगंज चौराहे से धरे गए अभियुक्तों पर आरोप है कि उक्त दोनों ने दरवाजा तोडकर आबरू लूटी थी। पूछताछ के बाद पुलिस ने दोनों का चालान भेज दिया है। शंकरगढ़ थानाध्यक्ष बृजेश सिंह ने बताया कि बेटियों की सुरक्षा के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति के तहत बलात्कार के दो आरोपियों राज सिंह उर्फ कपूर सिंह पुत्र स्व. रेवतीरमण सिंह उर्फ रामायण सिंह (जूही कोठी, शंकरगढ़) और गया प्रसाद पुत्र दिनेश कुमार (जूही कोठी, शंकरगढ़) को गिरफ्तार किया गया है। रानीगंज चौराहे से धरे गए दोनों आरोपियों के खिलाफ शंकरगढ़ थाने में अपराध संख्या 264-21, धारा 376, 452, 506, 427, 34 के तहत केस दर्ज किया गया है। एसओ ने बताया कि क्षेत्र की रहने वाली वादिनी ने तहरीर में बताया था कि उक्त आरोपियों ने उसके मकान का दरवाजा तोडकर उसके साथ गलत कार्य किया था। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई अवनेंद्र सिंह, कांस्टेबल मनीष कश्यप, सुनील कुमार यादव शामिल रहे।

बिजली की चपेट में आने से बच्ची की मौत

मेजा रोड मेजा तहसील के अंतर्गत ग्राम सभा भटौती में लाइन की चपेट में आने से बच्ची की हुई मौत। प्राप्त जानकारी के अनुसार भटौती गांव में अपने ननिहाल मे आए हुए बच्ची काजल 10वर्ष पुत्री अनिल कुमार शाम को शौच के लिए जा रही थी तभी गांव के ही मुंशीलाल ने घेरा बनाकर उसमें लाइन बिछाए हुए थे बच्ची कुछ समझ पाती तभी तार टच हो गया लाइन चालू होने से बच्ची की मौके पर ही मौत हो गई । परिजनों ने सुना तो मौके पर जाकर देखा तो बच्ची की मौत हो चुकी थी सूचना पर मेजा थाना प्रभारी अरुण कुमार चतुर्वेदी कोहडार चौकी इंचार्ज पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला भेजकर जांच में जुटे।

बीएड के प्रशिक्षणार्थियों का बिदाई समारोह संपन्न

करछना। के सोनाई गांव स्थित सावित्री देवी महिला महाविद्यालय में बीएड प्रशिक्षणार्थियों का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच बड़े हर्षोल्लास सहित विदाई समारोह बड़े धूमधाम से बृहस्पतिवार को आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण दीप प्रज्वलन के सहित सरस्वती वंदना से हुआ। समारोह में बीएड द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के छात्र व छात्राओं की ओर से सरस्वती वंदना स्वागत गीत कौव्वाली भक्ति गीत राष्ट्र गीत लोकगीत नृत्य प्रहसन हास्य व्यंग नाटक आदि का रोमांचक मंचन किया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे महाविद्यालय के प्रबंधक ज्ञान सिंह पटेल ने कहा कि शिक्षा के द्वारा ही सभी का संपूर्ण विकास हो सकता है। लेकिन छात्रों को अनुशासन का पाठ अवश्य पढ़ना चाहिए । जिससे वे अपने लक्ष्य को हासिल कर सके । इस मौके पर वही मौजूद रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ समीर श्रीवास्तव ने कहा कि सभी को सकारात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ना चाहिए। और सभी को सर्वप्रथम स्वयं की कमियों को दूर करना चाहिए । इस अवसर पर उन्होंने एक गीत भी प्रस्तुत किया । येहै जमी तुम्हारी ये आसमां तुम्हारा। कर लो जो हौसला तो सारा जहां तुम्हारा । अपने जड़ों की मिट्टी रखना सहेज कर ।नदिया भी हैं तुम्हारी सागर भी तुम्हारा । समारोह का संचालन डॉ अजय सिंह ने किया । इस अवसर पर राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव प्रकाश सिंह डॉ अजय सिंह उदयसिंह सुधा तिवारी एवं विनोद श्रीवास्तव ने भी अपने विचार रखे। बीएड के आस्था सिंह आभा दिवाकर नितेश पटेल आशीष सिंह सत्येंद्र कुमार यश वर्मा ने कार्यक्रम में बड़े हर्षोल्लास के साथ सहभागिता की ।

सरकार की कल्याण कारी योजनाओं की दी जानकारी

करछना। भाजपा के जिला उपाध्यक्ष यमुनापार विधानसभा प्रभारी ईजी जगदीश सिंह यादव गुरुवार को विधानसभा करछना के कयी गांवो में जाकर लोगों के बीच सरकार की कल्याण कारी योजनाओं की जानकारी दी । उन्होंने विभिन्न गांवों का भ्रमण करते हुए आम जनता में जाकर के भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की उपलब्धियों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी है एवं 2022 के चुनाव में करछना विधानसभा को जीताते हुए एक बार पुनः उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने के लिए अपील किया ताकि निकट भविष्य में उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार द्वारा विकास कार्य बहुत तेजी के साथ होना शुरू हो जाए क्योंकि कोरोना के कारण कुछ विकास की गति धीमी पड़ गई थी ,पुनः विकास को पटरी पर लाया जा सके।

संगठन में आईटी और सोशल मीडिया टीम की अहम भूमिका

प्रतापपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रतापपुर विधानसभा आईटी सेल और सोशल मीडिया टीम की परिचय बैठक बृहस्पतिवार को ठाकुर नारायण सिंह राजपति सिंह उ.मा.विद्यायल नेवादा में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि एमएलसी सुरेंद्र चौधरी का भाजपा कार्यकताओं ने जोरदार स्वागत किया इस अवसर पर कार्यकताओं को संबोधित करते हुए एमएलसी सुरेंद्र चौधरी ने कहा कि संगठन में आईटी और सोशल मीडिया टीम की अहम भूमिका है।आईटी और सोशल मीडिया टीम का मुख्य कार्य संगठन के कार्यो एवं योजनाओ का प्रचार-प्रसार करना है। उन्होंने कार्यकताओं को आगामी विधानसभा चुनाव में कड़ी मेहनत के साथ जुटकर भाजपा की नीतियां आमजन तक पहुंचाने का आह्वान किया। कहा कि भाजपा ने हर वर्ग का बिना भेदभाव के साथ विकास किया है। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष भाजपा प्रतापपुर आशुतोष त्रिपाठी, निमिष खत्री, मुकुन्दलाल मौर्या, आचार्य मनोज सिंह, नौनिहाल सिंह, सूर्या यादव, सत्यप्रकाश जायसवाल, सूरज जायसवाल, अतुल सिंह, उदयवीर, लालेश पटेल, विनय दूबे, मलखान सिंह सहित तमाम भाजपा कार्यकताओं उपस्थित रहे।

पुरामुफ्ती पुलिस ने किया दो अभियुक्त गिरफ्तार

पुरामुफ्ती। पुलिस उप महानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी द्वारा अपराध एवम अपराधियो के विरुद्ध व वांछित अभियुक्तो की गिरफ्तारी हेतु चलाये गये अभियान के अंतर्गत यसपी नगर दिनेश कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में सीओ नगर द्वितीय सुधीर कुमार के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक थाना पुरामुफ्ती आशुतोष तिवारी के कुशल नेतृत्व में गठीत पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त 1,करन पुत्र कल्लू निवासी बमरौली उपरहार टिकुरी थाना पुरामुफ्ती जनपद प्रयागराज उम्र 19 वर्ष 2,बच्चा पुत्र स्व0 पंचम निवासी बमरौली उपरहार टिकुरी थाना पुरामुफ्ती जनपद प्रयागराज उम्र 42 वर्ष को गिरफ्तार किया गया।दैनिक आशा प्रहरी एवम अरुण मित्र समाचार पत्र से अरुण कुमार द्विवेदी व विवेक वाजपेयी।

भींटा विद्युत उपकेंद्र के कर्मियो ने किया कार्य बहिष्कार की नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। लखनऊ के इकोगार्डेन में विगत कई दिनों से चल रहे बिजली विभाग के दैनिक कर्मियों के क्रमिक अनशन की वार्ता विफल होने के बाद घूरपुर क्षेत्र के कर्मियों ने भीटा स्थित उपकेंद्र पर कार्य बहिष्कार करते हुए आंदोलन तेज किया है ।

बताते चले कि विगत दिनों से बिजली विभाग के कर्मी अपनी विभिन्न मांगों को लेकर लखनऊ इकोगार्डेन में कार्य बहिष्कार करते हुए अनशन पर बैठे हुए थे । सरकार से हुई वार्ता

भीटा विद्युत उपकेंद्र पर प्रदर्शन करते कर्मी

विफल होने के बाद घूरपुर के दैनिक कर्मियों ने भीटा विद्युत उपकेंद्र पर कार्य बहिष्कार करते हुए अनशन पर बैठ गए ।इनकी मांग है कि जब तक की जब तक मांगे पूरी नहीं की जाती तब तक कार्य बहिष्कार करते हुए संगठन के मुखिया के निर्देश पर अनशन जारी रहेगा । अनशन में फरीद अहमद,अजय कुमार,लक्ष्मी नारायण,राजकुमार ,कमलेश कुमार,रोहित कुमार, सुरेंद्र पटेल, बालमुकुंद, मनोज, शिवशंकर, उमेश, मुकेश, राम, दयाशंकर, रविन्द्र, विजय, जितेंद्र, नरेंद्र आदि आदि कर्मी मौजूद रहे।

आवास आवंटन में वित्तिय अनियमितता पर सचिव नेहा रोय हुईं निलम्बित

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड करछना में व्यापक पैमाने पर भष्ट्राचार में लिप्त सचिवो की प्रधानो व ग्रामीणो की शिकायत पर जिला प्रशासन द्वारा कराई गई जांच में दो दिन में दो सचिवो को दोषी पाए जाने पर कार्रवाई के दौरान निलम्बित कर दिया गया है । सचिव नेहा रोय द्वारा ग्राम पंचायत बसरिया गांव में अपात्रो को आवास आवंटन व पंचायत भवन निर्माण में वित्तीय अनियमितता तथा अनुशासन हीनता का दोषी पाए जाने पर जिला प्रशासन ने गुरुवार को निलम्बित कर दिया है । इसी तरह दो दिन पूर्व बृजेश कुमार सचिव विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत कौव में प्रधान मंत्री आवास आवंटन में अपात्रो को आवास आवंटन करने के आरोप में प्रधान सहित गांव के लोगों ने जिला अधिकारी से शिकायत दर्ज कराते हुए विकास अधिकारी बृजेश कुमार विकास खंड करछना पर गंभीर आरोप लगाया था । जिस पर जिला विकास अधिकारी की गठित टीम द्वारा जांच मे भारी अनियमितता पायें जाने पर निलम्बित कर दिया गया है । जांच टीम ने गांव में जाँच में पाया कि बिटोला देवी पत्नी भोला नाथ के पास दो कमरे का पक्का मकान बना था पहले से उसको भी प्रधान मंत्री आवास आवंटन कर दिया गया है, लालती देवी पत्नी सूरज दीन का आवास बना नहीं था कि दूसरी किस्त रिलीज कर दी गई, इसी क्रम में एक दर्जन से अधिक आवास आवंटन में ब्यापक पैमाने पर निर्माण कार्य तथा अपात्रो को प्रधान मंत्री आवास आवंटन में व अन्य विकास कार्यों में गंभीर अनियमितता , और अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना करने अनुशासन हीनता का दोषी पाए जाने आदि गंभीर आरोपो का दोषी पाए जाने पर विकास अधिकारी बृजेश कुमार विकास खंड करछना को निलम्बित कर दिया गया है ।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका मार्ग छतिग्रस्त

कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालय का क्षतिग्रस्त मार्ग

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। विकास खंड मेजा के मेजा खास पहाड़ी पर बना कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय मार्ग छतिग्रस्त है जिसके चलते लोगों को आवागमन करने में काफी दिक्कते झेलनी पड़ रही है। गौरतलब है कि मेजा खास स्थित पहाड़ी पर बना कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। विद्यालय तक पहुंचने के लिए कटीली झाड़ियां व कीचड़ युक्त सड़क से होकर गुजरना पड़ता है। जिसके चलते लोगों को जहरीले जीव जंतुओं का खतरा भी बना हुआ है। बारिश के दिनों में कीचड़ व सड़क के किनारे निकली कटीली झाड़ियां आवागमन करने वाले छात्राओं व शिक्षक शिक्षिकाओं के लिए मुसीबत बना हुआ है। सरकारी तंत्र इतना उदासीन हो चुका है कि उन्हें तनिक भी आवासीय विद्यालय से जुड़े लोगों का ख्याल नहीं है। विद्यालय तक पहुंचने के लिए काली रोड तो दूर सही तरीके से चकरोड़ भी मयस्सर नहीं है। यहां छात्रों के साथ ही अध्यापक और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कटीली झाड़ियों तथा कीचड़ से होकर गुजरना पड़ता है।

21वीं सदी में मेड़ों के सहारे विद्यालय पहुंच रहे मेजा के नौनिहाल

मेजा रोड। इसे शासन प्रशासन की लापरवाही कहें या फिर स्थानीय तंत्र की उदासीनता कहे। विकास खंड मेजा के अहिरन का पुरा गांव में 21वीं सदी में विकास की ऐसी गंगा बह रही है कि प्राथमिक विद्यालय तक पहुंचने के लिए नौनिहालों को मेड़ो का सहारा लेना पड़ रहा है। गौरतलब हो कि मेजा विकासखंड के अहिरन का पुरा गांव में बने प्राथमिक विद्यालय तक आने जाने के लिए सड़क का निर्माण नहीं कराया गया। विकास के नाम पर तमाम वादे करने वाले सरकारी दावों का पोल खोल रहा है। उक्त विद्यालय 21वीं सदी के विकास पथ पर अग्रसर देश को मुह चिढ़ाता नजर आ रहा है। बारिश गर्मी ठंड किसी भी मौसम में मेड ही मात्र एक सहारा है। देखा जाए तो घास फूस की वजह से नौनिहालों के लिए जहरीले जीव-जंतुओं का खतरा भी बना रहता है। लेकिन सरकारी तंत्र इतना उदासीन हो चुका है कि उन्हें तनिक भी नौनिहालों का ख्याल तक नहीं है। उक्त विद्यालय तक पहुंचने के लिए काली रोड तो दूर, चकरोड भी मयस्सर नहीं है। यहां छात्रों के साथ ही अध्यापक और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को मेड़ों से होकर गुजरना पड़ता है।

फूलपुर ब्लाक में दिव्यांग प्रमाण पत्र व कृत्रिम अंग के साथ ही अन्य सुविधाओं के लिए लगेगा कैंप

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी के निर्देश पर जनपद के सभी ब्लाकों में लग रहा दिव्यांग शिविर, फूलपुर में 28 सितम्बर को होगा दिव्यांग शिविर का आयोजन

फूलपुर। दिव्यागों को शारीरिक व आर्थिक रुप से सबल बनाने के उद्देश्य से शासन द्वारा जनपद के सभी विकास खण्डों में दिव्यांग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जहां दिव्यांगों को यूडीआइडी कार्ड जारी करने के साथ ही कृत्रिम अंग उपकरण के लिए चिन्हित किया जाएगा। जिलाधिकारी के निर्देश पर आगामी 28 सितम्बर को फूलपुर विकास खण्ड में लगने वाले दिव्यांग शिविर की सूचना देते हुए एडीओ (समाज कल्याण) प्रकाश पटेल ने बताया कि शिविर में ऐसे दिव्यांग जिन्हें तीन वर्ष पूर्व योजना से लाभान्वित किया गया हो, उनके साथ ही अन्य जरूरतमंद दिव्यांग को कृत्रिम/ सहायक उपकरण की पात्रता हेतु चिकित्सकों द्वारा चिन्हित किया जाएगा। खण्ड विकास अधिकारी कविता तिवारी ने बताया कि शिविर में दिव्यांगो को दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा दिव्यांग पेंशन, दुकान निर्माण एवं शादी प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चिन्हित कर उन्हें लाभान्वित किया जाएगा। उन्होंने ग्राम विकास अधिकारी व ग्राम पंचायत अधिकारी को पत्र जारी कर कार्यरत ग्राम पंचायतों में शिविर की सूचना का व्यापक प्रचार प्रसार करने का निर्देश दिया। वहीं प्रधान संघ अध्यक्ष योगेंद्र भारतीय ने ग्राम प्रधानों से अपील करते हुए कहा कि गांव के हर जरूरतमंद दिव्यांग को शिविर में जरूर लेकर आएं।

शिविर में यह प्रपत्र लेकर जाएं दिव्यांग

शिविर में लाभ प्राप्त करने के लिए दिव्यांग जन को आय प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बैंक पासबुक, दिव्यांग प्रमाण पत्र,/यूडीआइडी कार्ड की छायाप्रति के साथ चार फोटो (जिसमें दिव्यांगता प्रदर्शित हो) अनिवार्य रूप से लेकर जाना होगा।

क्या है यूडीआइडी कार्ड

दिव्यांगजनों को राष्ट्रीय पहचान पत्र देने के लिए सरकार विशिष्ट दिव्यांगता प्रमाण पत्र (यूडीआइडी) बनवा रही है। कई दिव?यांग ऐसे भी हैं, जिन?हें इस योजना के बारे में जानकारी नहीं है। नतीजतन वह यूडीआइड कार्ड नहीं बनवा पा रहे हैं। इसलिए अब कैंप लगाकर यूडीआइडी कार्ड बनाए जा रहे हैं।

निम्न सुविधाओं के लिए लगेगा कैंप-

1- दिव्यांग प्रमाण पत्र व यूडीआईडी कार्ड

2- दिव्यांग पेंशन

3- दुकान निर्माण/संचालन व शादी प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चिन्हांकन

4- कृत्रिम अंग/उपकरण के लिए चिन्हांकन

5- तीन वर्ष पूर्व योजना से लाभान्वित दिव्यांग का पुनः चिन्हीकरण

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा के शिक्षक आंदोलन के राह पर

अखंड भारत संदेश

जंघई। लंबे समय से सरकार के द्वारा उपेक्षित महसूस कर रहे उच्च शिक्षा के शिक्षक अब आंदोलन करने के लिए विवश हो गए हैं। नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई जौनपुर में हिंदी विभाग में विभागाध्यक्ष और उ प्र विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक महासंघ के विशेष आमंत्रित सदस्य डॉ गंगेश दीक्षित ने बताया कि सरकार अपने तो पुराना पेंशन ले रही है और हम लोगों को जबरदस्ती नया पेंशन स्कीम थोप रही है। प्रोफेसर पद नाम आश्वासन देकर भी नही दे रही है।माध्यमिक शिक्षकों की भांति उच्च शिक्षा में भी स्थानांतरण की प्रक्रिया लागू किया जाए।आमेलन से वंचित मानदेय शिक्षको का आमेलन किया जाया । जिन मानदेय शिक्षको का आमेलन हो चुका है उनको यू जी सी नियमावली के आधार पर कैरियर एडवांसमेंट योजना का लाभ दिया जाय। शिक्षकों के प्रमोशन की विसंगतियों को दूर किया जाय। सेवानिवृत्ति की उम्र केंद्र और अन्य कुछ राज्यो की भांति 65 साल किया जाय। पी एच डी धारी शिक्षको को केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षकों की भांति 5 वेतन वृद्धि का लाभ दिया जाय। पुस्तकालयाध्यक्षों की वेतन विसंगतियों को दूर किया जाय। नई शिक्षा नीति को भी टाला जाय।

इन सभी मांगों को लेकर उच्च शिक्षा के सभी शिक्षक 5 अक्टूबर को अपने विश्वविद्यालय पर धरना देंगे। अगर उसके बाद भी सरकार को नही समझ में आता है तो हम सभी शिक्षक अपने प्रदेश संगठन के नेतृत्व में लखनऊ की सड़कों पर उतरेंगे जिसकी जिम्मेदारी खुद सरकार की होगी। पिछले लगभग साढ़े चार साल से शिक्षको को बेवकूफ बना रही सरकार के अब चुनाव में जाने का समय आ गया है। अगर हमारी मांगे नहीं मानी गई तो हम भी सरकार को अपनी ताकत का एहसास करा देंगे।

खबर संक्षेप

वन जी.पी. वन बी.सी. योजना के अन्तर्गत बी.सी. सखियों की कार्यशाला का किया गया आयोजन

प्रयागराज। उ0प्र0 राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत ह्लह्लवन जी0पी0 वन बी0सी0 योजना के अन्तर्गत बुधवार को जनपद में कुल चयनित एवं प्रशिक्षित में से 72 बी0सी0 सखियों की कार्यशाला का आयोजन विकास भवन, प्रयागराज के सरस हाल में किया गया, जिसमें सी0एस0सी0 द्वारा बी0सी0 सखी को डिवाइस के माध्यम प्रशिक्षित किया गया, जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि समस्त बी0सी0 सखियॉ बैंक आफ बड़ौदा की बी0सी0 के रुप में कार्य करेगीं जिससे गॉव के लोगों को अपने ही गॉव में बैंकिग से सम्बन्धित समस्त सुविधाएं प्राप्त करने में आसानी होगी। इस क्रम में जून, 2020 से डी0जी0 पे बी0सी0 सखी के रुप में विकास खण्ड करछना के ग्राम पंचायत अमीलो से कार्य कर रहीं श्रीमती मंजुला देवी द्वारा अपना अनुभव साझा किया गया। इनके द्वारा अब तक लगभग 22.00 लाख रुपये का ट्रांजक्शन किया गया, जिससे लगभग 22 हजार की आमदनी कमीशन के रुप में प्राप्त की गयी। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी श्री शिपू गिरि, उपायुक्त (स्वतः रोजगार) श्री अजीत सिंह, जिला मिशन प्रबन्धक श्री विजय गुप्ता एवं सी0एस0सी0 से श्री मनदीप सिंह व श्री पंकज आदि उपस्थि रहे।

योगी सरकार में प्रदेश का चहुंमुखी विकास हुआ

प्रतापपुर। एमजीएस इंटर कॉलेज प्रतापपुर में भाजपा की एक विशाल बैठक को संबोधित करते हुए जिला उपाध्यक्ष श्याम बिहारी पांडेय ने कहा कि एक्सप्रेस-वे, बेहतर कानून, नई स्थापित होती औद्योगिक यूनिट, खुशहाल किसान, नौजवान, महिला एवं आमजन आत्मनिर्भर भारत की पहचान बन रहे है।उन्होंने कहा साढ़े चार साल में हुई तरक्की यात्रा ने प्रदेश की सूरत बदल दी है।बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी, संचालन जंघई मंडल प्रभारी मनोज आचार्य ने किया।इस अवसर पर जिलामंत्री हरिभूषण सिंह, पंडित विजय शर्मा, संजय बनकटा, क्षितिज प्रताप सिंह, जमुना प्रसाद आदि उपस्थित रहे।

लापता छात्र के बैग से सुसाइड नोट बरामद, परिजनों में मचा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के पीडीए कॉलोनी से बीते कुछ दिन पूर्व एक छात्र संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। परिजनों की तहरीर मिलने पर नैनी कोतवाली में गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज की गई है, लेकिन पुलिस कई दिन बीत जाने के बाद भी लापता छात्र का सुराग नहीं लगा पाई है। वहीं गुरुवार को उक्त छात्र के बैग से सुसाइड नोट मिलने से परिजनों व मोहल्ले वासियों में हड़कंप मच गया। लापता छात्र जिस स्कूल में पढ़ता है। उस स्कूल के एक शिक्षक पर गंभीर आरोप लगा है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है।

जानकारी के मुताबिक मूलरूप से शिकोहाबाद के रहने वाले सुधर सिंह पुत्र रामनाथ सिंह नैनी कोतवाली क्षेत्र के एलआईजी 405/11 चक नौनिया (पीडीए) एडीए कॉलोनी में परिवार समेत रहते हैं। वह एक प्राइवेट कंपनी से रिटायर कर्मचारी हैं, उनके दो पुत्रियों में दिव्यांशी जो शादीशुदा है और छोटी पुत्री हिमांशी पढ़ाई कर रही है। वहीं उनका इकलौता पुत्र उत्कर्ष सिंह उर्फ हनी (16) नैनी कोतवाली क्षेत्र के सरपतहईया रोड के समीप स्थापित सेट जॉन्स को एकेडमी स्कूल में कक्षा 10 में पढ़ाई करता है। वह 16 सितंबर दोपहर लगभग 12:40 पर स्कूल से घर पहुंचा और टी शर्ट व हाफ पैंट पहनकर घर से निकल गया। जब वह घंटों वापस लौट कर घर पर नहीं पहुंचा तो परिजनों ने उसकी हर उस स्थान पर खोजबीन की, जहां पर उसके मिलने की उम्मीद थी, लेकिन उसका कोई भी सुराग नहीं मिला। लापता छात्र के पिता सुधर सिंह ने नैनी कोतवाली पहुंचे और तहरीर देकर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराया। लापता छात्र के पिता ने जो रिपोर्ट दर्ज कराया है उसमें स्पष्ट एफआईआर में लिखा गया है कि उनका पुत्र कक्षा 10 में सेट जॉन्स को एकेडमी में पड़ता है, स्कूल

सेट जॉन्स को एकेडमी स्कूल के शिक्षक पर लगा गंभीर आरोप, आठ दिन से लापता छात्र को पुलिस नहीं कर पाई है बरामद

लापता छात्र उत्कर्ष सिंह उर्फ हनी की फाइल फोटो

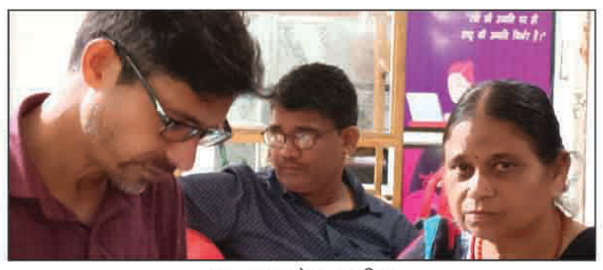

लापता छात्र के माता-पिता

लापता छात्र के बैग से सुसाइड नोट बरामद होने पर परिजन व मोहल्लेवासी पहुंचे नैनी कोतवाली

के उप प्रधानाचार्य और आनंद द्विवेदी (शिक्षक) ने फोन करके बताया कि आपके पुत्र को 10 दिन के लिए स्कूल से निष्कासित कर दिया गया है। परिजनों का आरोप है कि बस इसी बात को लेकर छात्र काफी परेशान चल रहा था और स्कूल से घर आने पर वह बिना किसी को सूचित किए, कहीं चला गया। हालांकि पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज रिपोर्ट के आधार पर जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। पुलिस के मुताबिक बुधवार को उक्त स्कूल से जुड़े शिक्षक आनंद द्विवेदी को पूछताछ के लिए नैनी कोतवाली में बुलाया गया और पूछताछ कर उसे छोड़ दिया गया। वहीं परिजन लापता छात्र की खोजबीन हर उस स्थान पर करते रहे, जहां पर उसके मिलने की उम्मीद थी, लेकिन उसका कोई भी सुराग नहीं मिला। गुरुवार दोपहर में लापता छात्र उत्कर्ष सिंह उर्फ हनी की मां मधु देवी दोपहर में उसका बैग चेक करने लगी तो बैग में एक सुसाइड नोट मिला, सुसाइड नोट पढ़ वह दंग रह गई और परिजनों व मोहल्ले वासियों में भारी हड़कंप मच गया किसी अनहोनी की आशंका से वह डरे व सहमे हुए हैं। सुसाइड नोट में लिखा था कि मैं उत्कर्ष सिंह सेट जॉन्स को एकेडमी स्कूल में पढ़ता हूं। अभी जो भी मेरे साथ हुआ मुझे सस्पेंड किया गया। यह सब मुझसे गुस्सा गए हैं। सुसाइड नोट में उत्कर्ष ने उसके साथ पढ़ने वाली एक छात्रा समेत तीन छात्रों सहित उक्त स्कूल के शिक्षक आनंद द्विवेदी को जिम्मेदार ठहराते हुए आगे लिखा है कि मेरे मरने के बाद मैं चाहता हूं इन सबकी जांच हो जांच हो अच्छी से और जो जो गलत पाया जाए उन्हें सजा दी जाए और मेरे मौत का जिम्मेदार आनंद दिवेदी है। सुसाइड नोट बरामद होने पर परिजन मोहल्ले वासियों के साथ नैनी कोतवाली पर पहुंचे और बरामद सुसाइड नोट को पुलिस को सौंपी दिए। वहीं पुलिस ने लापता छात्र के और उसके दोस्त समेत जहां जहां पर उसके मोबाइल द्वारा बातचीत चैटिंग आदि की जांच पड़ताल करने में जुट गई। परिजनों का कहना है कि बीते कुछ दिन पूर्व स्कूल में एक छात्रा मोबाइल लेकर आई हुई थी। जबकि स्कूल में मोबाइल ले जाना प्रतिबंध था। जिसकी शिकायत उसने स्कूल प्रशासन से कर दिया था। जब स्कूल प्रशासन ने छात्र-छात्राओं के बैग चेक किए तो मोबाइल बरामद कर लिया गया। परिजनों का आरोप है कि अपने आपको स्कूल का देखभाल करने वाले उप प्रधानाचार्य बताने वाले शिक्षक आनंद द्विवेदी से छात्र उत्कर्ष सिंह की कहासुनी हो गई थी। जिस पर एकतरफा कार्रवाई करते हुए उक्त शिक्षक ने छात्र को सस्पेंड कर दिया गया। इतना ही नहीं छात्र के मोबाइल पर दो अन्य बाहरी छात्रों ने कॉल कर उसे एक सुनसान स्थान पर भी बुलाने की बात बताया गया। हालांकि छात्र उनके बुलाने पर वहां पर नहीं गया। परिजनों का आरोप है कि उक्त शिक्षक इससे पूर्व भी स्कूल में पढ़ने वाले कई छात्रों को मानसिक रूप से प्रताड़ित कर चुका है। जिसकी लगातार शिकायत स्कूल मैनेजमेंट सहित प्रधानाचार्य को दी जाती है, लेकिन स्कूल प्रशासन उसके खिलाफ कोई भी कार्रवाई नहीं करते हैं। परिजनों ने बताया कि जिस दिन छात्र लापता हुआ था तो सड़कों पर लगे सीसीटीवी कैमरे को खंगाला तो काजीपुर रोड स्थित एक कैमरे में उत्कर्ष सिंह की फोटो कैद हो गई। वह तेज गति से आगे की ओर जाते दिखा। हालांकि पुलिस ने प्रत्येक पहलुओं पर जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

प्रयागराज पहुंची सीबीआई टीम एसआईटी के साथ की बैठक

● प्रयागराज पहुंची सीबीआई टीम, एसआईटी के साथ की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध मौत की गुत्थी सुलझाने के लिए सीबीआई की टीम गुरुवार दोपहर दो बजे प्रयागराज पहुंच गई । टीम में पांच सदस्य हैं। योगी सरकार ने संतों की मांग पर बुधवार की देर रात सीबीआई जांच की सिफारिश की थी। आपको बताते चलें कि इस हाईप्रोफाइल मामले में महज 15 घंटे के अंदर ही सीबीआई एक्शन मोड में आ गई है।पुलिस लाइन में सीबीआई अब इस मामले की जांच कर रही स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम के अफसरों से जानकारी जुटा रही है। सीबीआई को महंत की मौत से संबंधित एफ आई आर केस डायरी और अब तक जुटाए गए साक्ष्य सौंपे जाएंगे। इसके बाद सीबीआई अपने स्तर पर नए सिरे से पड़ताल शुरू करेगी। वही सभी प्रमुख संत-महात्माओं ने महंत की मौत की सीबीआई जांच की मांग प्रदेश सरकार से की थी। प्रदेश सरकार इस चुनावी माहौल में संत महात्माओं की नाराजगी दूर करने के लिए यह कदम उठाई ऐसा लोगों का कहना है ' संतों का कहना था कि महंत नरेंद्र गिरि के कथित सुसाइड नोट पर भरोसा नहीं है। एक स्वर में सभी का यही कहना है कि महंत लिखने-पढ़ने के मामले में कमजोर थे। वह इतना लंबा सुसाइड नोट नहीं लिख सकते थे।

आखिर किस को लग रही थी इतनी गर्मी जो चला दिया पंखा...

महंत नरेंद्र गिरि के आत्महत्या के तुरंत बाद सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हुआ था , जिसमें पुलिस के पहुंचने से पहले ही गेट खोल कर उनके मृतक शरीर को नीचे लिटा दिया गया तथा जिस रस्सी से उनके फांसी लगाने की बात कही जा रही है उसके तीन टुकड़े हो गए हैं और पंखा भी चल रहा है अब सवाल है कि इतनी बड़ी घटना के बाद किसको इतनी गर्मी लग रही थी कि पंखा चला दिया और रस्सी के तीन टुकड़े कर डाले यह सब सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है, अब देखना है कि सीबीआई कितने दिन में मौत के राज से पर्दा उठाएगी।

भयमुक्त समाज की स्थापना भाजपा सरकार की प्राथमिकता : डा0 कुंवर बी के सिंह

पत्रकारों से बात करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष डा. कुंवर बी.के. सिंह

अखंड भारत संदेश

हंडिया। भाजपा अपनी उपलब्धियों के चलते ही प्रदेश में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनायेगी। तथा भयमुक्त समाज की स्थापना भाजपा सरकार की प्राथमिकता रही है। उक्त बातें हड़िया कस्बा में स्थित अपने आवास पर भाजपा सरकार के साढ़े चार साल पूर्ण होने पर पत्रकारों से रूबरू होते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष प्रयागराज डा0 कुंवर बी0के0 सिंह ने कहीं । उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार के सहयोग से प्रदेश का बहुमुखी विकास हुआ है। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री जन-धन योजना, उज्जवला योजना, आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, कन्या शुमंगला योजना, पेंशन योजना, रोजगार योजना, कन्या विद्याधन योजना, कृषक दुर्घटना कल्याण योजना, गौशाला योजना, जन आरोग्य योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना,नमामि गंगे, स्मार्ट सीटी, आयुष्मान भारत योजनाओं की उपलब्धियों को गिनाई। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापरक शिक्षा और विकास कार्यों पर हमारी प्राथमिकता होगी। कहां कि आवागमन असुविधा को देखते हुए गंगापार व यमुनापार को पक्के पुल से लक्षागह के पास जोड़े जाने की कवायद तेज हो गई है। जल्द ही इस सुविधा का लाभ लोगों को मिलेगा। कहां कि हड़िया में 300 बेड वाला उच्चीकृत अस्पताल का निर्माण होगा। इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य राम अधार बिंद , कुन्दन मिश्रा, सुबेदार गुप्ता, अनुराग पांडेय आदि मौजूद रहे।

DECLARATION

I, Anju Dwivedi Spouse of No 15582621X Rank Hawaldar Name Neeraj Mishra. S/o Mool Chand Mishra Unit-101 Engr. Regt. C/o 99 APO. Hatigor, Presently Residing at. Vill.-Amwa, Po.-Newada, Tech.-Chail, Dist.-Kaushambi, U.P.-212218 by an affidavit before Notary chail declare that by actual & correct name is Anju Mishra instead of Anju Dwivedi in all purpose.

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भूलवश मेरा नाम आकाश पुत्र श्री शिव सागर सिंह अभिलेखों में दर्ज हो गया है जो गलत है मेरा सही नाम आकाश सिंह पुत्र श्री शिव सागर सिंह ग्राम व पोस्ट कशिया पूर्व चायल जनपद कौशाम्बी है।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भारतीय जीवन बीमा निगम की पॉलिसी नं. 311912133 में भूलवश नग्गन पुत्र सिराजुल हसन दर्ज हो गया है, जो गलत है सही नाम मोहम्मद शफीक पुत्र सिराजुल हसन निवासी चक इस्माइलपुर अफोही खागा जनपद फतेहपुर है।

महंत नरेंद्र गिरि की मौत की साजिश रचने वाला तीसरा कौन !

सुशील केसरवानी

प्रयागराज। दो दिन पूर्व महंत नरेंद्र गिरि की मौत के बाद चारों ओर गम का माहौल व्याप्त हो गया महंत की मौत के मामले में आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के आरोप में पुलिस ने उनके दो शिष्य को हरिद्वार से गिरफ्तार कर आनन-फानन में जेल भेज दिया जबकि जिन शिष्यों को पुलिस ने जेल भेजा है वह घटना के वक्त प्रयागराज में मौजूद नही थे उन्हें हरिद्वार से पुलिस ने गिरफ्तार किया है पकड़े गए शिष्य इस घटना को साजिश बताते हुए महंत की आत्महत्या पर बार बार सवाल उठा रहे थे लेकिन पकड़े गए शिष्य की बातों पर परीक्षण करने के बजाए उसे दबाने का भरसक प्रयास पुलिस कर रही है आखिर सबकुछ जानते हुए पुलिस ऐसा क्यों कर रही है पुलिस के ऊपर किसका दबाव है जिससे महंत नरेंद्र गिरि की मौत की सच्चाई सामने लाने से पुलिस भय खा रही है मौके पर तमाम महत्वपूर्ण साक्ष्य को पुलिस ने नजर अंदाज कर दिया महंत नरेंद्र गिरि की मौत के खुलासे में पुलिस इतनी उतावली क्यों है महंत नरेंद्र गिरि की मौत के बाद तमाम अहम सवाल छूट गए हैं मौके की परिस्थिति जन्य साक्ष्य नरेंद्र गिरि की मौत को आत्महत्या मानने से इंकार कर रहे हैं सूत्र बताते हैं कि नरेंद्र गिरि की मौत को आत्महत्या मानने से पोस्टमार्टम ने भी इंकार कर दिया है लेकिन फिर भी कथित आत्महत्या पत्र को बिना जांच पड़ताल के पूर्ण आधार मानकर पुलिस महंत की मौत के प्रकरण पर कार्यवाही कर रही है कथित आत्महत्या पत्र की हैंडराइटिंग और हस्ताक्षर को महंत नरेंद्र गिरि के हस्ताक्षर हैंडराइटिंग से पुलिस ने मिलाने का आखिर प्रयास क्यो नहीं किया आखिर इस प्रकरण में पुलिस जल्दबाजी में खुलासा कर क्या छिपाना चाह रही है महंत नरेंद्र गिरि की मौत के जिम्मेदारों को बचा कर गलत साक्ष्य के आधार पर निदोर्षों को जेल भेजने के मामले में बिना सबूत जेल गए व्यक्ति भी अदालत से बरी हो जाएंगे और महंत की मौत के असली गुनाहगार का नाम भी सार्वजनिक होने से रह जाएगा। महंत नरेंद्र गिरि की मौत के बाद जिस वक्त मौके पर पुलिस पहुंची उस वक्त मौके पर आश्रम के कुछ संत मौजूद थे नरेंद्र गिरि का शव जमीन पर पड़ा था उनके गले के नीचे रस्सी का एक टुकड़ा था रस्सी का दूसरा टुकड़ा पंखे के ऊपर चुल्ले से लटक रहा था रस्सी का तीसरा टुकड़ा लाश के बगल में रखी मेज पर रक्खा था अब सवाल उठता है कि महंत नरेंद्र गिरि ने आत्महत्या किया है तो उनकी मौत के बाद किसने और क्यो रस्सी का कई टुकड़ा किया है किसके पास इतना शातिर दिमाग है कि महंत की मौत होने के बाद दुःखी शरीर मे रस्सी के टुकड़े कर सबूत से छेड़छाड़ करने में कौन मशगूल होगा इस घटना में मौके पर मिले रस्सी के कई टुकड़े कुछ अन्य कहानी बयां कर रहे है महंत नरेंद्र गिरि की मौत में दूसरा अहम सवाल यह है कि जब घटनास्थल पर पुलिस पहुंची तो मौके पर कमरे की छत में लगा पंखा चल रहा था और जिस चुल्ले से महंत के कथित आत्महत्या की कहानी गढ़ी जा रही हैं उसी चुल्ला से पंखे बांधा है यदि इस चुल्ले से महंत ने आत्महत्या की होती तो पंखा पहले से चलता हुआ ना मिला होता चलते पंखे से आत्महत्या किया जाना संभव नहीं है चलते पंखे के बीच चुल्ला से आत्महत्या किया जाएगा तो पंखे का पर टेड़ा हो जाएगा और पर टूट भी सकता है चलते पंखा से आत्महत्या किया जाना असंभव है पुलिस की यह कहानी भी महंत के कथित आत्महत्या को झूठा करार देती है चौथा सवाल यह है कि जब पुलिस मौके पर पहुंची तो कमरे का दरवाजा खुला था दरवाजा कहीं से टूटा नहीं है आखिर उनके शिष्यों का कहना है कि महंत ने दरवाजा बंद करके आत्महत्या किया है तो दरवाजा तोड़ने के निशान को देखने का पुलिस ने प्रयास क्यों नहीं किया है बिना दरवाजा टूटे दरवाजा टूटने की बात करने वाले उनके शिष्य को संदिग्ध मानकर पुलिस ने उनसे कड़ाई से पूछताछ क्यों नहीं शुरू की चौथा सवाल यह है कि जिस आत्महत्या पत्र की बात बड़े दावे से पुलिस कर रही है वह पत्र ही सवालों के घेरे में है आश्रम के ही लोगों का कहना है कि महंत नरेंद्र गिरि को हस्ताक्षर करने में कई मिनट लग जाते थे फिर उनके द्वारा आत्महत्या पत्र कैसे लिखा गया है तमाम लोगों ने आत्महत्या पत्र पर भी गम्भीर सवाल उठाए हैं लेकिन पुलिस ने कथित आत्महत्या पत्र के हस्ताक्षर और हैंडराइटिंग मिलाने का प्रयास करने के बजाय आत्महत्या पत्र को ही सच्चाई मान कर आनन फानन में दो शिष्यों को हरिद्वार से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया महंत नरेंद्र गिरि की मौत में पाँचवा सवाल यह उठता है कि घटनास्थल का फिंगरप्रिंट लेकर उसकी जांच रिपोर्ट आने का पुलिस ने इंतजार क्यों नहीं किया मौके के फिंगरप्रिंट पुलिस द्वारा उठाए गए होते तो महंत नरेंद्र गिरि के मौत के जिम्मेदारों के गिरेहबान तक पुलिस के हाथ पहुँच गए होते इतना ही नहीं महंत के आश्रम में सीसीटीवी कैमरा लगा होगा पुलिस ने सीसीटीवी कैमरा की फुटेज खंगालने का प्रयास क्यों नहीं किया उनकी मौत के कुछ देर पहले उनके कमरे में कौन पहुंचा सीसीटीवी कैमरा की पुलिस ने मदद ली होती तो नरेंद्र गिरि की मौत की सच्चाई आम जनता के सामने होती पुलिस की इस जल्दबाजी के चलते महंत नरेंद्र गिरि की मौत की हकीकत उजागर होने के बजाय दफन होती दिख रही है कहीं सोची समझी साजिश के तहत तीसरे शख्स ने महंत नरेंद्र गिरि को रास्ते से हटाते हुए आनंद गिरि को उनकी मौत के मामले में जेल भिजवाते हुए बड़ी साजिश तो नहीं रची है वह तीसरा शातिर शख्स कौन है जिसे महंत नरेंद्र गिरि की मौत के बाद लाभ मिलता दिख रहा है।

अहम साक्ष्य को नजरअंदाज कर महंत नरेंद्र गिरि के मौत का खुलासा करने में किसके दबाव में उतारू है पुलिस

माण्डा सीएचसी को 19 ऑक्सीजन सिलेंडर देकर दी खुसी

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। राज्य सभा सासंद कुँवर रेवती रमण सिंह ने मरीजों के बेहतर इलाज के लिए स्वयं की निधि से ऑक्सीजन सिलेंडर देकर बड़ी खुसी दी है। इसकी लोग जमकर सराहना कर रहे हैं। बतादें की प्रयागराज जनपद में समाजवादी पार्टी के लोकप्रिय व कद्दावर नेता के रूप में विख्यात राज्यसभा सांसद कुँवर रेवती रमण सिंह ने गुरुवार को माण्डा सीएचसी का निरीक्षण किया। उन्होंने सीएचसी को स्वयं की निधि से 19 ऑक्सीजन सिलेंडर अधीक्षक डॉ सुरेश सोनकर के जिम्मे दिया। उन्होंने कहा कि मरीजों का बेहतर इलाज किया जाए। आक्सीजन की बिल्कुल भी कमी ना हो। उक्त सांसद ने सीएचसी का निरीक्षण कर साफ सफाई पर ध्यान आकर्षित कराया। इसके अलावा उन्होंने स्वास्थ्य कर्मियों को आश्वासन देते हुए कहा है कि सूबे के समाजवादी पार्टी की सरकार ने पर इलाज से सम्बंधित और भी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी। आगे कहा कि किसी भी मरीज को बाहर से दवाएं न लिखी जाएं,यह अधीक्षक की जिम्मेदारी होनी चाहिए। इस अवसर पर श्यामकृष्ण यादव, संजय सिंह उर्फ कल्लू यादव, दिलावर सिंह, जिला पंचायत सदस्य प्रमिल यादव, देशराज पटेल, जोगिन्दर सिंह, मानिक चन्द्र पटेल सहित तमाम सपाई एवम स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित रहे।

राज्यसभा सांसद ने स्वयं की निधि से दिया सिलेंडर, बेहतर इलाज का निर्देश दिया

महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष का हुआ स्वागत

अखंड भारत संदेश

सहसों। भारतीय जनता पार्टी मंडल सहसों में नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष महिला मोर्चा का स्वागत एवं उनकी टीम का परिचय प्रदेश कार्यसमिति सदस्य महिला मोर्चा रीता सिंह मंडल प्रभारी के नेतृत्व में सभी नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों से एवं उनकी 21 सदस्यों की टीम से परिचय हुआ मंडल दुवार्सा धाम झूसी बहादुरपुर सहसों एवं फूलपुर में सभी मंडल अध्यक्षों से संपर्क किया। इसी संदर्भ में सहसो मंडल के महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष शकुंतला शुक्ला के आवास ग्रामसभा देवनागरी मैं मंडल अध्यक्ष का स्वागत एवं सभी सदस्यों का परिचय का कार्यक्रम रखा गया था यह कार्यक्रम महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष आरती अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ कार्यक्रम का संचालन साधना तिवारी ने किया उन्होंने बताया रीता सिंह बहुत ही मेहनती एवं कार्यकताओं के सुख दुख में हमेशा खड़ी रहती हैं। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने कहा कि आज महिलाएं देश का गौरव बढ़ा रही हैं भाजपा ही ऐसी पार्टी है जिसमें महिलाओं का हित है। महिलाओं की चिंता महिलाओं के सम्मान की चिंता उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने की चिंता केवल भारतीय जनता पार्टी ही कर रही है चाहे राशन कार्ड हो चाहे उज्जवला गैस हो जनधन खाता हो सभी में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सरकार दे रही है । मुख्य अतिथि ने कहा इस बार भी हम महिलाएं उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाएंगे इसके लिए हम लोग घर घर जाकर लोगों से संपर्क करेंगे जिला अध्यक्ष आरती अग्रवाल ने कहा हम लोग माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में देश को आगे बढ़ाने में प्रदेश को आगे बढ़ाने में जी जान लगा देंगे। इस अवसर पर मुख्य रूप से मीना जयसवाल, अनीता सिंह, रंजना तिवारी, फूला देवी बिंद, प्रतिभा चौरसिया, पुष्पा प्रजापति, नीलू देवी, उर्मिला देवी, रंजू शुक्ला, सुनीता देवी, अनीता देवी, रेशमा, प्रमिला, निर्मला कुमारी, उषा देवी, मुनिया देवी, बिटोला देवी, सोना देवी, महोबा देवी, लक्ष्मी देवी, लालती, तारा, नैना देवी एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहीं।

महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष का स्वागत करते

कार्यालय ग्राम पंचायत गगौर वि. ख. फूलपुर, प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा

वित्तीय वर्ष 2021–22 में मनरेगा/राज्य वित्त/15वां वित्त योजना के अन्तर्गत ग्राम पंचायत में कराये जाने वाले कार्यो के लिए कार्यस्थल पर इच्छुक फर्म/आपूर्तिकर्ता दिनांक 24.09.2021 से दिनांक 28.09.2021 तक कार्यालय ग्राम पंचायत से कार्य दिवस में 4 बजे तक शील बन्द लिफाफे में निविदा जमा कर सकते हैं, जो दिनांक 29.09.2021 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य के समिति के सदस्यों के समक्ष सायं 4 बजे खोला जायेगा। सामग्री का विवरण निम्न प्रकार है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईंट 150 एमएम प्रथम श्रेणी	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति बोरी
3.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
4.	ईंट 150 एमएम प्रथम श्रेणी	प्रति हजार
5.	ईंट गिट्टी 40 एम एम	प्रति घनमीटर
6.	काली गिट्टी (कंकरीट)	प्रति घनमीटर
7.	मोटी बालू	प्रति घनमीटर
8.	सरिया	प्रति कुन्तल
9.	ह्यूम पाइप	प्रति नग / आर.एम. रनिंग मीटर
10.	सोलर लाईट	प्रति नग
11.	स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
12.	इंटरलाकिंग	प्रति हजार
13.	आर.सी.सी. बेन्च सीमेन्ट	प्रति नग
14.	टाईल्स	प्रति नग
15.	हैण्डपम्प अधिष्ठापन	प्रति नग
16.	पल्स आक्सीमीटर	प्रति नग
17.	सफाई कर्मी किट इत्यादि	प्रति नग

नियम शर्तें:– 1. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार आधारित समय के अन्तर्गत आपूर्ति अनिवार्य होगी। 2. सामग्री दर लोक निर्माण विभाग से अधिक नही होगा। 3. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप न होने पर भुगतान की धनराशि से नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 4. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत अद्योहस्ताक्षरी का होगा। 5. अधिक जानकारी हेतु प्रधान/ग्राम विकास अधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीमती गुंजा गुप्ता
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत गगौर
वि. ख. फुलपुर, प्रयागराज

विनोद कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत गगौर
फूलपुर, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/2021–22/ दिनांक 23.9.2021

अपनी ग्राम पंचायत को आदर्श बनाएं ग्राम प्रधान

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत ग्राम प्रधानों को दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। ग्राम प्रधानों के प्रशिक्षण के प्रथम दिवस बिहार ब्लॉक में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नवनिर्वाचित ग्राम प्रधानों को पंचायती राज व्यवस्था, प्रधान के कार्य एवं दायित्व और ग्राम स्तरीय समितियां, ग्राम पंचायत विकास योजना के साथ ही केंद्रीय और राज्य वित्त आयोग और बेहतर कार्य करने वाली ग्राम पंचायतों को मिलने वाले पुरस्कारों आदि की जानकारी शासन द्वारा नामित मुख्य

प्रशिक्षक एवं पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी और नितेश श्रीवास्तव द्वारा दी गई। आज प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पर्यावरण सेना प्रमुख एवं मुख्य प्रशिक्षक पंचायती राज विभाग अजय क्रांतिकारी ने प्रशिक्षणार्थियों को पंचायती राज व्यवस्था और ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण के बताया। नितेश श्रीवास्तव ने प्रधानों को पंचायत समितियों के बारे में जानकारी दी। सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) सोमनाथ नायर ने सभी प्रधानों को प्रशिक्षण में सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया और ग्राम पंचायत को आदर्श बनाने हेतु प्रेरित किया। जिला क्षय रोग केन्द्र प्रतापगढ़ के जिला समन्वयक रामेंद्र तिवारी ने लोगों को क्षय रोग के बारे में जानकारी देते हुए ग्राम प्रधानों से अपने ग्राम पंचायत को टीबी मुक्त बनाने हेतु प्रेरित किया। इस मौके पर धर्मराज पटेल, निशा, धीरेन्द्र प्रताप, शीला देवी, आरती देवी, राम कैलाश और अमर नाथ मिश्र सहित कई लोग मौजूद रहे।

कबड्डी प्रतियोगिता में साई एकेडमी स्टेडियम की टीम विजयी

जिला कबड्डी एसोसिएशन के तत्वावधान में हुई प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पूर्व प्राचार्य स्व0 अमर बहादुर सिंह एवं लेखपाल स्व0 महेंद्र प्रताप सिंह की स्मृति में जिला कबड्डी एशोसिएशन के तत्वावधान में स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित जूनियर बालक वर्ग जिला कबड्डी चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले में साईं एकेडमी स्टेडियम की टीम ने दिलीपपुर की टीम को 59-49 के अंतर से पराजित कर चैंपियनशिप पर कब्जा किया।

इसके पूर्व आयोजक शिक्षक नेता राजीव सिंह,लेखपाल अभिषेक सिंह रामू ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर फाइनल मुकाबले का शुभारम्भ किया। समाजसेवी अश्वनी सोनी ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते हुए शुभकामनाएं दी। ककरहा, मान्धाता, शीतलागंज, रामपुर, कटैया, बेल्हा देवी, रखहा, पीबी इण्टर कालेज, कटरा गुलाब सिंह, सांगीपुर, देल्हूपुर, बजहा सहित

18 टीमों ने हिस्सा लिया। लालमणि सिंह, लालजी तिवारी, मो.इरफान, मो.आसिफ निर्णायक रहे। स्कोरिंग वीरेंद्र प्रताप सिंह, कौशलेंद्र प्रताप सिंह ने किया। संचालन डा. धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष त्रिलोचन सिंह, अजय कुमार सिंह, आदित्य शुक्ल, शोभनाथ यादव, राम सजीवन वर्मा, हरिकेश, हरिलाल आदि मौजूद रहे। अंत में संयोजक रवि प्रकाश सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

अवैध तमंचे व जिंदा कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार,वांछित को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मुखबिर की सूचना पर पट्टी पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली, पुलिस ने भरोखन नहर पुलिया के पास एक युवक को एक अवैध तमंचा व एक जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया । पट्टी कोतवाल गणेश प्रसाद सिंह अभिषेक सिंह राहुल यादव विकेश मिश्रा बुधवार को मुखबिर ने सूचना दिया कि एक युवक अवैध तमंचा व जिंदा कारतूस के साथ भरोखन नहर पुलिया पर खड़ा है।

पुलिस वहां पहुंची तो आरोपी युवक वहां से सकपका कर भागने लगा पुलिस ने उसे दौड़ाकर पकड़ा और तलाशी ली तो उसके पास से 12 बोर का एक तमंचा व एक जिंदा कारतूस मिला। करी करने पर उसने अपना नाम आस्कर सिंह पुत्र हरिप्रताप सिंह निवासी कर्माही बताया पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही की। उधर आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र में बीते 18 तारीख को पीड़ित पिता की तहरीर पर पुत्री के अपहरण के मामले में आसपुर देवसरा पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया था। मामले में अभियुक्त की फरार चल रहा था। पुलिस को आरोपी की तलाश थी। बुधवार को अभियुक्त संदीप विश्वकर्मा पुत्र नन्हे लाल विश्वकर्मा निवासी चारों पुर थाना महाराजगंज जनपद जौनपुर को थाना क्षेत्र के आसपुर देवसरा के भनईपुर गांव के पास से मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार किया गया।

35 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद, दो पर मुकदमा दर्ज

प्रतापगढ़। अवैध शराब की रोकथाम, उनके अनियमित निर्माण व व्यापार के विरुद्ध प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत आबकारी आयुक्त उत्तर प्रदेश के निर्देशन तथा जिलाधिकारी, प्रतापगढ़ व उप आबकारी आयुक्त, प्रयागराज प्रभार के कुशल मार्गदर्शन और पुलिस अधीक्षक व जिला आबकारी अधिकारी के नेतृत्व में जनपद के लालगंज तहसील के थाना लालगंज के देल्हूपुर, पकवा व उमरपुर में आकस्मिक दबिश दी गयी। दौरान दबिश गांव के संदिग्ध घरों व स्थलों पर व्यापक व सघन सर्चिंग की गई।

विधायक और जिलाध्यक्ष ने सरकार की उपलब्धियों का किया बखान

कहा-विकास के मुद्दे पर फिर बनेगी भाजपा की सरकार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी इन दिनों सरकार की उपलब्धियों का ब्योरा जनता तक पहुंचाने के लिये एक-एक विधान सभा क्षेत्र की उपलब्धियां पत्रकारों को बता रही है। गुरुवार को सदर विधायक राजकुमार पाल ने सदर विधान सभा क्षेत्र तथा भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र ने विश्वनाथगंज विधान सभा क्षेत्र में हुए विकास कार्यों का ब्योरा दिया।

सदर विधायक राजकुमार पाल ने पीडब्लूडी डाक बंगले पर एक प्रेसवार्ता कर विधान सभा सदर में

साढे चार वर्ष के किये गये 30प्र0 की योगी सरकार के द्वारा कार्यो को गिनाया। उन्होंने कहा कि जनपद में रूपये 2 अरब 40 करोड़ 65 लाख की लागत से एन0एच0-330 प्रयागराज-अयोध्या मार्ग पर नगरीय सीमा में लगने वाले जाम से लोगों को छुटकारा दिलाने हेतु बाईपास निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ है तो वहीं रूपये 213.01 करोड़ की लागत से जनपद में मेडिकल कालेज बनाया गया जिसमें लोगों को चिकित्सा सम्बन्धी सभी सुविधायें प्राप्त हो रही है। उधर जिलाध्यक्ष भाजपा हरिओंम मिश्र ने पीडब्लूडी डाक बंगले पर प्रेसवार्ता कर विधान सभा विश्वनाथगंज में सरकार के द्वारा कार्यो को गिनाया। श्री मिश्र ने बताया कि विधान सभा विश्वनाथगंज में एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण टूलकिट योजनान्तर्गत 200 लोगों को प्रशिक्षण एवं टूलकिट दिया गया तो वहीं प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत 18 उद्योग लगे जिसमें 300 लोगों को रोजगार दिया गया। मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना के अन्तर्गत 15 लाभार्थियों को निःशुल्क इलेक्ट्रानिक चाक का वितरण किया गया और मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजनान्तर्गत 27 उद्योग लगाये गये जिसमें 250 लोगों को रोजगार दिया गया। उन्होंने बताया कि सौभाग्य योजना में इस विधान सभा के लगभग 238 मजरों में निःशुल्क विद्युत कनेक्शन दिये गये 3.41 करोड लागत से लक्ष्मणपुर बालिका छात्रावास, 12 करोड की लागत से मानधाता और लक्ष्मणपुर ब्लाक का निर्माण किया गया।

बकुलाही नदी पुनरोद्धार से जन जन में खुशी

बकुलाही पुत्रो संग समाज शेखर ने किया स्नान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बकुलाही नदी पुनरोद्धार के नतीजे से भयहरणनाथ धाम के जन जीवन मे खुशी ही खुशी है। वहीं नदी की प्राचीन 21.4 किलो मीटर जल धारा में नदी में अथाह जल प्रवाहित हो रहा है जो आस पास सभी श्रोतों का पेट भर कर जल से संतृप्त कर दिया है। आज बकुलाही पुनरोद्धार अभियान के संयोजक समाज शेखर ने प्राचीन धारा का व्यापक भ्रमण करके नदी क्षेत्र का जायजा लिया।

संयोजक सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने सर्व प्रथम छतौना ग्राम में नदी का स्नान करके पूजन किया। यहां रपटा पुल बना था जो जल प्रवाह से बह गया है, जिससे मान्धाता मार्ग से संपर्क कट गया है। जिसके निर्माण की मांग हुई। जिस पर ग्राम प्रधान राम अंजोर

पटेल को जिलाधिकारी व विधायक के नाम प्रस्ताव बना कर देने का निर्णय हुआ। इसके पश्चात मनेहू ग्राम में ग्रामीणों ने पुलिया के क्षतिग्रस्त होने और पुल बनाने की मांग की। प्राचीन शिवरन देवी धाम से जुड़े शिवरा ग्राम में नदी के पुलिया के ऊपर पानी बह रहा है जिससे ग्राम से आवागमन पूरी तरह प्रभावित है। जिस पर ग्राम के युवा कार्यकर्ता दीपक सिंह ने ग्रामीणों की तरफ से सामूहिक प्रस्ताव बनाकर जल्द जनप्रतिनिधियों व जिलाधिकारी से यहां पुल बनाने का अनुरोध किया जाना तय हुआ।इस अवसर पर समाज शेखर के साथ भयहरणनाथ धाम के उपाध्यक्ष कार्यक्रम राज कुमार शुक्ल, बकुलाही पुनरोद्धार के समर्पित कार्यकर्ता गण राम लखन पटेल, देवी दत्त शुक्ल, मंगलम शुक्ल, मनोज कुमार आदि के साथ युवा कवि शिवम भगवती शामिल रहे।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, सीओ से फरियाद

लालगंज, प्रतापगढ़। शादी का झांसा देकर युवती के साथ दुष्कर्म करने तथा बाद में शादी से मना कर देने के मामले को लेकर लालगंज कोतवाली पुलिस आरोपित के खिलाफ कार्रवाई नही कर रही है। परेशान पीड़िता की मां ने गुरूवार को सीओ लालगंज को शिकायती प्रार्थना पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाई है। लालगंज कोतवाली के पूरे चिरंजीव बटौली गांव की महिला ने सीओ जगमोहन को दी गई तहरीर मे कहा है कि उसकी अठारह वर्षीया बेटी को शादी का झांसा देकर बीते आठ अगस्त को पडोसी गांव पूरे जोधा का एक युवक भगा ले गया। आरोप है कि युवती के साथ कई दिनों तक दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी ने उसे भगा दिया। घटना को लेकर पीड़िता ने बाइस अगस्त को लालगंज पुलिस को आरोपी के खिलाफ नामजद तहरीर दी।

साकेत गर्ल्स पीजी कालेज में हुआ योगाभ्यास

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा हुआ कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। साकेत गर्ल्स पीजी कालेज के योग केन्द्र में भारत सरकार के फिट इण्डिया फ्रीडम रन-2 कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष कार्याधिकारी डा0 अंशुमालि शर्मा द्वारा दैनिक योगाभ्यास का शुभारंभ किया गया। डा0 शर्मा ने महाविद्यालय की छात्राओं को भाग्यशाली बताया और कहा कि वे ऐसे महाविद्यालय की छात्राएं हैं जहां राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रमों को वृहद स्तर पर संचालित कराया जाता है। इस दौरान कार्यक्रम की अनुदेशिका डा0 सरिता सिंह एवं डा0 अनीता पाण्डेय रहीं। योगाभ्यास में पंतजलि योगपीठ के अनुदेशक और सेवानिवृत्त प्रवक्ता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के केपी त्रिपाठी द्वारा सूर्य नमस्कार से लेकर विभिन्न आसनों एवं प्राणायामों का अभ्यास कराये गये और योग से निरोग बनने के मूल मंत्र को छात्राओं में

उतार दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत साई वंदना, सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में आये हुए आगन्तुकों के प्रति आभार महाविद्यालय की प्राचार्या डा0 नीलिमा श्रीवास्तव व अरविन्द श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना के तीनों इकाईयों के कार्यक्रमाधिकारी डा0 अनीता पाण्डेय, डा0 अनंत प्रकाश शुक्ला एवं डा0 प्रतिभा मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डा0 सरिता सिंह, प्रभा शर्मा, कल्पना भट्ट, आरती श्रीवास्तव, आरती पाण्डेय, ज्योति सिंह, अजमत अली, रईस अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

मोबाइल की दुकान में घुसकर बदमाशों ने की तोडफोड़

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली लालगंज क्षेत्र के रानीगंज कैथौला पुलिस चौकी अर्न्तगत कैथौला बाजार में गुरूवार की शाम बाइक सवार बदमाशों ने मोबाइल की दुकान मे घुसकर तोडफोड की घटना को अंजाम दी। सूचना पर पुलिस पहुंची लेकिन तब तक बदमाश भाग गये थे। लालगंज कोतवाली अर्न्तगत रानीगंज कैथौला निवासी राजू केसरवानी पुत्र उमाशंकर बाजार मे ही अपनी मोबाइल की दुकान संचालित करता है। पीडित के अनुसार माह भर पहले उसके मोबाइल पर एक अज्ञात नंबर से फोन आया और उससे रंगदारी देने की मांग की गई। लेकिन आरोपी द्वारा फोन पर रंगदारी की रकम की बात नही कही गयी। पीड़ित का आरोप है कि आज गुरूवार शाम चार बजे वह अपनी दुकान पर बैठा था। इसी बीच बाइक सवार दो बदमाश पहुंचे और उसे गाली देने लगे। पीड़ित ने विरोध किया तो बदमाश उसकी दुकान मे लगे शीशे मे तोडफोड करने लगे। शोरशराबा सुनकर आसपास के लोग दौड़े तो बदमाश जानलेवा धमकी देते भाग निकले। रानीगंज कैथौला चौकी इंचार्ज राजेश शुक्ला का कहना है कि पैसे को लेकर आपसी लेनदेन का मामला है। रंगदारी मांगने की बात गलत है। पीड़ित के तहरीर देने पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

पेट्रोल पम्प पर हुई लूट की घटना ने तीन अज्ञात आरोपियों के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के लालगंज कालाकांकर हाइवे पर बीती बुधवार की दोपहर तीन नकाबपोश बदमाशों द्वारा पेट्रोल पम्प पर पचास हजार से अधिक की

नकदी लूट लिये जाने की घटना को लेकर पुलिस ने तीन अज्ञात आरोपियो के खिलाफ लूट का मुकदमा दर्ज किया है। घटना को लेकर छानबीन मे जुटी पुलिस तीन संदिग्ध लोगों को हिरासत मे लेकर पूछताछ कर रही है। लालगंज कोतवाली के बेलहा निवासी विष्णुदेव सिंह बेलहा मे श्रीशक्ति फ्यूल स्टेशन के संचालक है। बीती बुधवार को अपरान्ह करीब तीन बजे कोतवाली के तिना निवासी सेल्समैन राजन पाल पेट्रोल पम्प पर मौजूद था। इसी बीच बाइक से तीन नकाबपोश बदमाश वहां पहुंचे। बदमाशो ने सेल्समैन से सौ रूपये का पेट्रोल बाइक मे भरने को कहा। इसी बीच बदमाशों ने तमंचा निकाल लिया और सेल्समैन के पास मौजूद रूपयों से भरा बैग लेकर फरार हो गये। घटना को लेकर पेट्रोल पम्प के संचालक विष्णुदेव सिंह ने तीन अज्ञात बदमाशों के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर के आधार पर अज्ञात आरोपियो के खिलाफ लूट का मुकदमा दर्ज किया गया है। पूछताछ के लिए तीन लोगों को हिरासत मे लेकर कोतवाली लाया गया है, शीघ्र ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

एटीएम से धोखाधड़ी कर पैसा निकालने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

नौ एटीएम कार्ड, एक एमएसआर रीडर मशीन, लैपटॉप व मोटर साइकिल बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में पुलिस द्वारा अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने हेतु निरन्तर अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में स्वाट टीम व थाना मांधाता पुलिस द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र मांधाता के बकुलाही नदी पुल ग्राम बैशपुर के पास से एटीएम से फ्राड करने वाले एक व्यक्ति सूरज सरोज पुत्र रामसुख सरोज नि0 लाखापुर थाना मांधाता को बाइक के साथ गिरफ्तार किया गया।

गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से नौ एटीएम कार्ड, एक एमएसआर रीडर मशीन मय डाटा केबल, एक लैपटॉप मय चार्जर बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त ने पूछताछ में बताया कि मैं एटीएम से पैसा निकालने वालों के साथ धोखाधड़ी कर उनका पैसा निकाल लेता हूं। इसके लिए मैं एटीएम के पास खड़ा रहता हूं, जो व्यक्ति पैसा निकालने आता है उसके नजदीक खड़े होकर, उसका ध्यान भटकाकर एवं झांसा देकर उसका एटीएम कार्ड बदल लेता हूं, और उस कार्ड से अपने पास रखी एमएसआर रीडर मशीन में एटीएम स्वैप करके पैसे निकाल लेता हूं। इसके अलावा एटीएम मशीन को बटनों के माध्यम से नाजायज तरीके से हैक कर देता हूं और जब कस्टमर वहां से चला जाता है तो पुनः एटीएम मशीन को सही कर उस कस्टमर के पैसे निकाल लेता हूं। पुलिस टीम में प्रभारी स्वाट टीम अमर नाथ राय, मु0आरक्षी जाहिर खान, मु0आरक्षी सुरेश कुमार सिंह, मु0आरक्षी महेन्द्र प्रताप, आरक्षी राजेन्द्र कुमार, आरक्षी जागीर सिंह स्वाट टीम व उ0नि0 दयाल दास, उ0नि0 श्री शहंशाह खान मय हमराह थाना मांधाता शामिल रहे।

गैंगस्टर एक्ट में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में जनपद पुलिस द्वारा अपराध/अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना अन्तू के थानाध्यक्ष अर्जुन सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर मु0अ0सं0 122/2021 धारा 2/3 गैंगस्टर एक्ट से संबंधित वांछित अभियुक्त सोनू पाल पुत्र उमाशंकर नि0 मटियारी दादूपुर थाना अन्तू को थाना क्षेत्र अन्तू के सड़वा चण्डिका के पास से गिरफ्तार किया गया।

850 ग्राम अवैध गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज से उ0नि0 प्रमोद कुमार यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र रानीगंज के ग्राम राजापुर से खरहर जाने वाले मार्ग के किनारे बाग में से एक व्यक्ति अनिल कुमार मिश्रा पुत्र ब्रिजेन्द्र मिश्रा नि0 बलीपुर थाना कोतवाली नगर को 850 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना रानीगंज पर मु0अ0सं0 517/21 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया। पुलिस टीम में मुख्य आरक्षी इरफान अहमद व आरक्षी रवि सिंह थाना रानीगंज शामिल रहे।

चोरी के जेवरात के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के जीआईसी स्कूल के पास चेकिंग के दौरान पुलिस ने एक वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया। अभियुक्त के पास से पुलिस ने चोरी के जेवरात, 2200 रुपये नकद व दो पीतल के परात भी बरामद किया। वांछित अभियुक्त नगर कोतवाली क्षेत्र के अमान उल्ला उर्फ मुन्ना निवासी बेगम वार्ड का है। पुलिस ने अभियोग पंजीकृत किया है।

आबादी की जमीन पर दबंग कर रहे कब्जा, शिकायत

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के बाभनपुर गांव में कुछ दबंग आबादी की जमीन पर जबरन कब्जा कर रहे हैं। पीड़ित ने इसकी लिखित शिकायत आसपुर देवसरा पुलिस से की है। बाभनपुर गांव के रहने वाले कमलेश कुमार वर्मा ने पुलिस को दिए शिकायती पत्र में बताया कि उसकी आबादी की जमीन जिस पर उसका छप्पर बना हुआ है जिस पर पड़ोसी से विवाद है और जिसका मामला अदालत में विचाराधीन है और स्थगन आदेश है। पीड़ित कमलेश ने बताया कि आरोपी रामचंद्र दबंग व सरहंग किस्म का हैं। पैसे के बल पर वह उक्त जमीन पर कब्जा करना चाहता है। बांस की कोठ व पेड़ काटकर जबरन कब्जा कर लेने की धमकी दे रहा है।

खबर संक्षेप

तीन वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा तीन वारण्टी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कोखराज पुलिस उपनिरीक्षक अरुण कुमार मौर्य मय हमराह पुलिस बल द्वारा दो वारण्टी अभियुक्त कंधई और बुधई पुत्रगण जग्गा पासी निवासी इचौली थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना कौशाम्बी पुलिस उपनिरीक्षक जयन्त गुप्ता मय हमराह पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त पप्पू तिवारी पुत्र रामकृष्ण तिवारी निवासी ग्राम छोटा गढ़वा मजरा कोशम इनाम थाना कौशाम्बी को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है

पुलिस ने वसूला जुमार्ना

कौशाम्बी। जिले में लॉकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेशी के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेशानुसार जिले स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमें 176 वाहनों का ई चालान किया गया व 4 वाहनों से 1250 रुपए सम्मन शुल्क वसूल किया गया साथ ही बिना मास्क लगाए घूम रहे 11 व्यक्तियों से 1300 रुपए जुमार्ना वसूला गया।

गोवध के दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कौशाम्बी पुलिस थानाध्यक्ष रामशंकर सरोज मय हमराह पुलिस बल द्वारा गोवध निवारण अधिनियम में दो वांछित अभियुक्तो मो0 अमन पुत्र शकील अहमद व नौसाद पुत्र अफसार अहमद निवासी मलाक मोइउद्दीनपुर महँगाव थाना चरवा को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

पश्चिम शरीरा मंडल अध्यक्ष बने लवलेश सिंह लीधी

कौशाम्बी। युवा मंडल अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी पश्चिम सरीरा से लवलेश सिंह लोधी को बनाए जाने पर उनके साथियों कार्यकताओं ने लवलेश लोधी को माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया है स्वागत करने वालो में हरिओम रामयश केशरवानी बंगाली प्रदीप केशरवानी अमर सिंह संजय चौरसिया सचिन रैना सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

आशा कार्यकत्रियों एवं आशा संगिनियों को किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

आशा कार्यकत्रियों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं को जिस समर्णण के साथ घर-घर पहुंचाया जा रहा है, यह अतुलनीय कार्य है :अध्यक्षा कल्पना सोनकर

आशा कार्यकत्रयों को उनके मानदेय का भुगतान समय से किया जाय : विधायक संजय गुप्ता

आशा सम्मेलन में उपस्थित अधिकारीगण व विधायकगण उपस्थित आशा

कौशाम्बी। अध्यक्षा जिला पंचायत कल्पना सोनकर एवं विधायकगण लाल बहादुर संजय गुप्ता व शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल द्वारा नवीन मण्डी स्थल, ओसा में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत आयोजित जनपद स्तरीय आशा सम्मेलन कार्यक्रम का द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ तथा प्रत्येक विकास खण्ड से उत्कृष्ट कार्य करने वाली 03-03 आशा कार्यकत्रियों को क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया एवं पात्र लाभार्थियों को आयुष्मान योजना के तहत गोल्डेन कार्ड वितरित किया गया प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली आशा कार्यकत्री को 05 हजार रुपए द्वितीय स्थान पाने वाली आशा कार्यकत्री को 02 हजार रुपए एवं तृतीय स्थान पाने आशा कार्यकत्री को 01 हजार रुपए पुरस्कार स्वरूप ऑनलाइन हस्तान्तरित किया जायेगा। इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करने वाली जनपद की तीन सर्वश्रेष्ठ आशा संगिनी को भी पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने आशा कार्यकत्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जनपद की अनेक मातृशक्तियों ने देश के ऐतिहासिक, पौराणिक महत्ता एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना सराहनीय योगदान दिया है जनपद की ही ऐतिहासिक धरती शहजादपुर में जन्म लेने वाली दुगार्भाभी, स्वाधीनता संग्राम सेनानियों की प्रेरणास्रोत रही हैं उन्होने आशा कार्यकत्रियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि सरकार द्वारा संचालित अनेक जनकल्याणकारी योजनायें आपके द्वारा जिस समर्पण के साथ घर-घर तक पहुंचाया जा रहा है, यह अतुलनीय कार्य है उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार एवं प्रदेश सरकार ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के संकल्प को पूरा किया है इससे हमारी मातृशक्ति का गौरव एवं सम्मान बढ़ा है मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत गरीब कन्याओं का विवाह सरकार द्वारा कराया जा रहा है, यह अतुलनीय प्रयास है, इससे अब बेटी बोझ नहीं बल्कि स्वाभिमान हो गयी है उन्होने कहा कि इस योजना का लाभ हर गरीब परिवार तक पहुंच सके, इसके लिए सभी को अपना योगदान देना चाहिए विधायक संजय गुप्ता ने कहा कि आशा कार्यकत्री स्वास्थ्य विभाग की सभी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाती हैं। इनके द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है। उन्होने कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार ने आशा कार्यकत्रियों के मानदेय को बढ़ाने का कार्य किया है, उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी से अपेक्षा की कि सभी आशा कार्यकत्रियों को उनके मानदेय का भुगतान समय से हो जाय। यह सुनिश्चित किया जाय कि किसी आशा कार्यकत्री का मानदेय लंबित न रहने पाये उन्होने कहा कि आशा कार्यकत्रियों द्वारा कोविड काल के साथ ही जननी सुरक्षा योजना एवं नियमित टीकाकरण आदि कार्यों को सफलतापूर्वक किया जा रहा है विधायक सिराथू शीतला प्रसाद ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं का क्रियान्वयन आशा कार्यकत्रियों के अथक परिश्रम एंव निरन्तर प्रयास से ही सम्भव होता है। आशा कार्यकत्री अपने घर की जिम्मेदारियों के साथ साथ स्वास्थ्य विभाग के सभी कार्यक्रमों योजनाओं को पूर्ण निष्ठा के साथ धरातल पर उतारने का कार्य करती है। उन्होंने अपेक्षा की कि उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशा कार्यकत्रियों को सम्मानित करने का कार्यक्रम नियमित रूप से इसी प्रकार आयोजित किया जाय विधायक मंझनपुर लाल बहादुर ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए अनेक योजनायें संचालित की गयी हैं। उन्होने आशा कार्यकत्रियों से कहा कि कोविड-19 की रोकथाम में आप लोगों द्वारा भी अहम भूमिका निभायी गयी है। उन्होने आशा कार्यकत्रियों के कार्या की सराहना करते हुए कहा कि गांवो में आप सबके द्वारा अपने दायित्वों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन किया जा रहा है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है उन्हेने कहा कि आशा कार्यकत्री स्वास्थ्य विभाग की सबसे अहम कड़ी है। आशा कार्यकत्रियों द्वारा स्वास्थ्य विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों का जिम्मेदारी पूर्वक निवर्हन किया जा रहा है इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण डॉक्टर प्रभाकर राय एवं मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर केसी राय सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण एवं आशा कार्यकत्री उपस्थित रहीं।

प्रसव के बाद प्रसूता की मौत आक्रोशित लोगों ने किया हंगामा

बच्ची को जन्म देने के बाद हुई मौत डाक्टर पर आरोप लगा कर दो घंटे तक परिजनों समेत लोगों ने काटा बवाल

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के चायल कस्बा में स्थित सीएचसी में गुरुवार की शाम प्रसाव के बाद 25 वर्षीय प्रसूता सरिता देवी पत्नी सुशील कुमार की मौत हो गई। घटना की जानकारी होने पर परिजनों में कोहराम मच गया। मामले को लेकर आक्रोशित परिजनों समेत लोगों ने डाक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए अस्पताल में हंगामा शुरू कर दिया। सूचना पर पुलिस फोर्स के साथ पहुंचे पिपरी इंस्पेक्टर राधेश्याम वर्मा और चौकी प्रभारी आलोक सिंह ने लोगों को समझा बुझाकर शांत कराया। डेढ़ घंटे तक लोगों ने अस्पताल का घेराव किया। उसके बाद शव लेकर घर लौट गए । चरवा के जानकीपुर गांव निवासी सुशील कुमार पुत्र भगवती प्रसाद मजदूरी करके परिवार का भरण-पोषण करता है। करीब पांच वर्ष पहले सुशील की शादी कोखराज थाना के सैता गांव निवासी पितंबर लाल की बेटी सरिता देवी (25) के साथ हुई थी। इन दिनों सरिता अपने ससुराल में ही थी । गुरुवार की सुबह सरिता देवी को प्रसव पीड़ा हुई। पत्नी को लेकर सुशील कुमार सास छोटकी चाची समेत समय करीब आठ बजे चायल सीएचसी पहुंचा जहां पर उसका इलाज चल रहा था। इस बीच समय करीब दो बजे दोपहर सरिता देवी ने एक बच्ची को जन्म दिया। सुशील के मुताबिक तभी प्रसव कराने वाली स्टाप नर्स से रुपये को लेकर झिकझिक हुई आरोप है कि वह खुशी से न्योछावर के तौर पर आठ सौ रुपये की मांग कर रही थी। जबकि सुशील ने पास रहे छह सौ रुपये दिया था । जिसके कुछ ही देर बाद सरिता देवी के सीने समेत बदन में दर्द शुरू हो गया और वह अचेत होने लगी। हालत गंभीर होने पर डाक्टरों ने भी जिला अस्पताल ले जाने के लिए कहने लगे । जिला अस्पताल ले जाने की तैयारी चल ही रही थी कि समय करीब चार बजे सरिता देवी की मौत हो गई। घटना से मृतक के परिजनों में कोहराम मच गया। मामले को लेकर आक्रोशित परिजनों और स्थानीय ग्रामीणों ने डाक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए अस्पताल का घेराव कर हंगामा शुरू कर दिया। डेढ़ घंटे तक लोगों ने अस्पताल परिसर में बवाल काटा । पिपरी इंस्पेक्टर के समझाने पर शांत हुए परिजन शव लेकर वापस चले गए। मामले में पीड़ितों ने किसी भी प्रकार की कोई तहरीर नहीं दिया है।

पुलिस चौकी में हंगामा बुलानी पड़ी अतिरिक्त फोस

अखंड भारत संदेश

उपद्रव कर रहे लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया

हंगामा को सुलझती पुलिस उपस्थित ग्रामीण

इमामगंज कौशाम्बी। कोखराज थाना अंतर्गत मूरतगंज चौकी में गुरुवार की दोपहर अचानक हंगामा खड़ा हो गया एक पीड़ित महिला को आरोपी पक्ष पुलिस चौकी से घसीट कर पीटने का प्रयास करने लगे महिला के हो हल्ला मचाने पर पुलिस बीच-बचाव करने लगी लेकिन आरोपी पक्ष के लोग दबंगई दिखाते हुए महिला को पुलिस चौकी में गाली गलौज कर उस पर हमला करने का बार-बार प्रयास कर रहे थे आरोपियों की संख्या अधिक होने से पुलिस कमजोर पड़ने लगी जिस पर पुलिस ने अतिरिक्त फोर्स बुला ली और अतिरिक्त फोर्स आने के बाद उपद्रव कर रहे लोगों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है खबर लिखे जाने तक आरोपियों के विरूद्ध मुकदमा नहीं दर्ज हुआ है।

जानकारी के मुताबिक मूरतगंज पुलिस चौकी के रसूलपुर बदले गांव में पति की प्रताड़ना के चलते महिला ने पुलिस चौकी को शिकायती पत्र देकर न्याय मांगा था महिला की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पति को पुलिस चौकी बुलाया लेकिन पुलिस के बुलाने के बाद आरोपी पति सैकड़ो लोगों को लेकर पुलिस चौकी का घेराव किया और पुलिस चौकी में पुलिस की मौजूदगी में भीड़ उपद्रव करने लगी। जानकारी के अनुसार रंजीत पुत्र पताली निवासी रसूलपुर बदले का अपनी पत्नी सरमीला से किसी बात पर बराबर विवाद होता है।पति और पत्नी के आपसी विवाद के चलते दो दिन पहले पति और पत्नी में फिर विवाद हुआ था जिसके चलते पत्नी सरमीला ने मूरतगंज चौकी में लिखित प्रार्थना पत्र दिया था जिसपर मूरतगंज पुलिस ने दोनों पक्षो को गुरुवार को चौकी बुलाया जैसे ही इसकी सूचना ग्राम वासियो को हुई तो वह लड़के के पक्ष से भारी संख्या में पुलिस चौकी का घेराव कर दिया और सरमीला को अशब्द बोलने लगे कि इसको चौकी से बाहर निकालो और घसीट कर मारो।पुलिस ने बीच बचाव किया तो पुलिस से भी उपद्रवियों ने धक्का मुक्की की।जैसे ही माहौल बिगड़ता देखा तो पुलिस प्रशासन ने भारी फॉर्स बुला ली।जिससे पुलिस बल के साथ बिगड़ते माहौल को शांत कराया और शांति भंग करने वालो को पुलिस पकड़ कर थाना ले गयी।

किसान के गल्ले में घटतौली करने से मचा हंगामा

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र में किसान के गल्ले की तौल में हेराफेरी करने से हंगामा मच गया है मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई है मामले की जानकारी पुलिस को दी गई है सोम सिंह पुत्र दिनेश कुमार पासी ग्राम चक बादशाहपुर थाना चरवा ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर बताया कि सचिन तथा सचिन का चचेरा भाई संतोष केसरवानी पुत्र कुंवर बहादुर केसरवानी (धुल्ली) ग्राम बलीपुर टाटा गल्ला की खरीद-फरोख्त करते हैं दोनों व्यक्तियों ने सोम सिंह के घर गुरुवार को गल्ले की खरीद की आरोप है कि 7 क्विंटल 22 किलो गल्ला खरीदने के बाद उसमें हेराफेरी कर 5 कुंटल 22 किलो की रसीद बनाया गया रसीद किसान सोमसिंह को दे दिया जब सोमसिंह ने घटतौली का विरोध किया कि तुमने हमारे गल्ले में हेराफेरी किया है दूसरे कांटे पर गल्ला का वजन कराया गया तब मालूम हुआ कि गल्ला 7 कुंटल 22 किलो है हेराफेरी करने वालों की जब कलाई खुल गई तो उपरोक्त हेरा फेरी धोखाधड़ी करने वालों ने पूर्व में दी पर्ची 5 कुंटल 22 किलो की झपट कर फाड़ डाला क्रेता विक्रेता के बीच विवाद की जानकारी मिलते ही मौके पर उस समय गांव के तमाम लोग आ गए डायल 112 को फोन करके मामले की सूचना दी गयी मौके पर पुलिस डायल 112 पहुंच गयी खबर लिखे जाने तक मामले में कार्रवाई नहीं हुई है।

हंगामा के बाद मौके पर उपस्थित 112 डायल

युवा मंडल अध्यक्ष का अध्यक्ष प्रतिनिधि ने किया स्वागत

युवा मण्डल अध्यक्ष का अध्यक्ष प्रतिनिधि ने किया स्वागत

कौशाम्बी। पश्चिम शरीरा मंडल से भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के लवलेश सिंह लोधी को मंडल अध्यक्ष बनाए जाने के बाद जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेन्द्र सोनकर पूर्व ब्लाक प्रमुख ने मंडल अध्यक्ष लवलेश सिंह लोधी को मुख्यालय मंझनपुर में माल्यार्पण कर स्वागत किया है इस मौके पर पूर्व ब्लाक प्रमुख ने कहा कि लवलेश सिंह लोधी के मंडल अध्यक्ष बनाए जाने से भाजपा संगठन मजबूत होगा जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेंद्र सोनकर ने उन्हें माला पहनाकर सम्मानित किया जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेंद्र सोनकर ने लवलेश सिंह को गले लगाकर बधाई दी इस मौके पर तमाम पार्टी कार्यकर्ता पदाधिकारी और उसके समर्थक मौजूद रहे।

हैंडपंप व हाई स्ट्रीट लाइट लगाने का किया घोषणा

चौपाल लगाकर समस्या सुनते विधायक संजय गुप्ता

कौशाम्बी। नवगठित नगर पंचायत चरवा के वार्ड नंबर 3 अंबेडकरनगर चरवा खुर्द में विधायक ने जन चौपाल का कार्यक्रम किया जन चौपाल के माध्यम से उपस्थित क्षेत्रवासियों की प्रमुख समस्याओं से वह अवगत हुए विधायक ने स्थानीय लोगों की मांग पर एक हाई मास्ट स्ट्रीट लाइट स्थापित करने हेतु उन्होंने घोषणा किया लोगों ने मांग किया कि पेयजल हेतु समस्या होती है विधायक ने तत्काल 2 हैंड पंप स्थापित करने हेतु निर्देशित किया

अमित त्रिपाठी बने क्षेत्र पंचायत संघ के महामंत्री

क्षेत्र पंचायत स्वाभिमान संघ के नवनिर्वाचित जिला महामंत्री अमित कुमार त्रिपाठी व अन्य

विजया कौशाम्बी। क्षेत्र पंचायत स्वाभिमान संघ की एक बैठक विकासखंड कौशांबी क्षेत्र में संपन्न हुई है बैठक में क्षेत्र पंचायत सदस्यों की समस्याओं के समाधान के बारे में विचार विमर्श हुआ है इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि बीडीसी सदस्य के स्वाभिमान की हर वक्त रक्षा की जाएगी वक्ताओं ने बीडीसी सदस्य को मानदेय दिए जाने की मांग की है क्षेत्र पंचायत संघ की बैठक में जिला महामंत्री के रूप में अमित त्रिपाठी उर्फ अंशु को चयनित किया गया व अयूब सलमानी को ब्लॉक अध्यक्ष कौशाम्बी चयनित किया गया जिला महामंत्री और ब्लॉक अध्यक्ष के चयनित किए जाने पर क्षेत्र पंचायत स्वाभिमान संघ के पदाधिकारियों ने उन्हें माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया।

विधायक के सहयोग से जगह-जगह लग रहा हाई मास्क स्ट्रीट लाइट

नगर वासियों की मांग पर चायल विधायक ने सड़क नाली निर्माण कराए जाने का जेई को दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

भरावरी का भ्रमण करते चायल विधायक संजय गुप्ता उपस्थित ग्रामीण

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने गुरुवार को प्रातः 8:00 बजे भरवारी नगर के बिश्नोई मेहता रोड शिशु मंदिर कॉलोनी गुलाब विहार कॉलोनी के विकास कार्यों का औचक निरीक्षण किया स्थानीय जनमानस ने चायल विधायक से मोहल्लों की सड़क व नाली बनवाने की मांग किया विधायक श्री गुप्ता ने तत्काल जे ई उमेश सिंह को निर्देशित किया कि तत्काल एस्टीमेट बनवा कर कार्य योजना तैयार कराते हुए नाली और सड़क निर्माण तत्काल कराया जाने हेतु निर्देशित किया बिश्नोई मोहल्ला के लोगों ने कहा कि हमारे चौराहे पर अंधेरा रहता है विधायक ने तत्काल हाई मास्क स्ट्रीट लाइट स्थापित करने के लिए निर्देशित किया तथा गुलाब बिहार कॉलोनी के लोगों ने कहां कि हमारे मोहल्ले के चौराहे पर भी एक हाई मास्क स्ट्रीट लाइट लगाया जए विधायक ने तत्काल एक हाई मॉस्ट स्ट्रीट लाइट स्थापित करने के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया इसी प्रकार विधायक ने पूरे मोहल्ले की गलियों को घूम घूम कर औचक निरीक्षण किया स्थानीय लोगों की शिकायतों को जल्द ही निस्तारण करने के लिए उन्होंने आश्वस्त किया नगर भ्रमण के कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा नेता अशोक केसरवानी अंकुर रस्तोगी जितेंद्र मिश्रा नंदलाल कुशवाहा कविता केसरवानी उषा यादव सुधीर केसरवानी नीरज कौशल सानू कुशवाहा पिछड़ा मोर्चा जिला महामंत्री सूरज यादव युवा मोर्चा महामंत्री हर्ष केसरवानी सेक्टर संयोजक वेदांत उपाध्याय मौजूद रहे।

आवारा पशुओं की समस्या पर समर्थ किसान का हल्लाबोल

अजय सोनी ने कहा कि आवारा पशुओं की समस्या का समाधान नहीं कराया गया तो सड़क जाम करेंगे किसान

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में आवारा पशुओं की समस्या को लेकर तहसील सिराथू में पार्टी कार्यकताओं द्वारा जोरदार हल्लाबोल किया गया। साथ ही तहसील घेराव कर तहसील प्रशासन को एक ज्ञापन भी सौंपा गया।

आवारा पशुओं की समस्या से परेशान किसानों एवं पार्टी कार्यकताओं के झुंड के साथ पार्टी नेता अजय सोनी ने तहसील सिराथू में प्रदर्शन किया और नारेबाजी करते हुए तहसीलदार सिराथू संतोष सोनकर को पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। सौंपे गए ज्ञापन में आवारा पशुओं की समस्या से किसानों की फसलों को बचाने के लिए समुचित व्यवस्था कराने, अनेठा गौशाला सही रूप से संचालित कराने, प्रत्येक न्याय पंचायत में गौ वंश आश्रय स्थल बनवाने, सभी संचालित गौशालाओं में गौवंशों के चारे पानी की किल्लत को दूर करने, कलुआपुर मजरा उदहिन बुजुर्ग के गौवंश आश्रय स्थल में आवारा पशुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करने जैसी मांगे शामिल थीं। ज्ञापन स्वीकार करते हुए तहसीलदार सिराथू संतोष सोनकर ने सभी मांगों पर समुचित कार्यवाही कराने का आश्वासन दिया है। इसके पूर्व तहसील परिसर में पार्टी कार्यकताओं एवं किसानों को संबोधित करते हुए अजय सोनी ने कहा कि आवारा पशुओं की समस्या से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है और शासन प्रशासन के लोग किसानों की फसलों के नुकसान होने पर भी आवारा पशुओं की समस्या के समाधान के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं कर रहे हैं। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा बनवाए गए गौवंश आश्रय स्थल उंट के मुंह में जीरा साबित हो रहे हैं ।

आजादी का अमृत महोत्सव मनाएगी सरकार

कौशाम्बी। स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव 02 अक्टूबर 2021 से 14 नवम्बर 2021 तक मनाया जा रहा है आजादी के अमृत महोत्सव मनाए जाने की तैयारी सरकार के निर्देश पर प्रशासन ने शुरू कर दी है जिसके तत्वावधान में 08 नवम्बर 2021 से 14 नवम्बर 21 तक विधिक सहायता सप्ताह का आयोजन किया जाना है कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सभागार में राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आनलाइन मीटिंग के माध्यम से कार्ययोजना की जानकारी दी गयी इस हेतु डा. रिजवी कालेज आफ लॉ करारी के लीगल एड क्लीनिक सेल के वालेन्टियर विधि छात्रों को भी आमंत्रित किया गया है।

नाली ना बनने की वजह से हो रहा जलभराव

कौशाम्बी। मंझनपुर में चौड़ीकरण के नाम पर एक माह पूर्व अतिक्रमण हटाया गया था अतिक्रमण हटाए आज महीनों हो गए पर नाली बनने का कहीं नामोनिशान नहीं दिख रहा है नाली ना बनने की वजह से व्यापार पूरी तरह बाधित है जिससे व्यपारियों में आक्रोश व्याप्त है नाली ना बनने की वजह से जलभराव रहता है व आवागमन में लोगों को समस्याओ का सामना करना पड़ता है सड़को पर जलभराव होने के कारण लोगों के घरो के अंदर बारिश का पानी भर जाता है।

अलग अलग थानों द्वारा चार अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अपराध एंव अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अलग अलग थानों द्वारा चार अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कड़ाधाम पुलिस उपनिरीक्षक बिपलेश सिंह मय हमराह कांस्टेबल देवनारायण यादव व कांस्टेबल रूपम खत्री द्वारा अभियुक्त नन्हे उर्फ अभिषेक कुमार मौर्य पुत्र रामस्वरूप मौर्य व संजय मौर्य पुत्र बुदुन लाल मौर्य निवासी फरीदगंज थाना कड़ाधाम को फरीदगंज चौराहा के पास गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात अभिगुक्तगण को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस उपनिरीक्षक गौरव त्रिवेदी मय हमराह पुलिस बल द्वारा दो वांछित अभियुक्त मुन्ना पांडेय व मुन्ना पुत्र शुभहित पांडेय निवासी तिल्हापुर थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अमित राजपूत का हुआ जोरदार स्वागत

अखंड भारत संदेश

वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर का स्वागत करते ग्रामीण

कौशाम्बी। जिले में जैसे ही वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अमित राजपूत पहुंचे हैं उनको माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया गया है भव्य स्वागत के दौरान दर्जनों लोग मौजूद रहे इंडिया बुक आफ रिकार्ड एवं हावर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अमित राजपूत का स्वागत पूर्व ब्लाक प्रमुख चायल इंजी सोनू कुमार और माता पूर्व प्रधान लक्ष्मी देवी ने अपने आवास पर किया इस मौके पर खागा के चेयरमैन सुरेन्द्र सोनकर, पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि बिरेंद्र पासी, विनोद कुशवाहा,रवि साहू,कमलेश पासी ,मनीष पटेल,संजय,अजय,मानसिंह आदि लोगो ने स्वागत किया। इसके बाद उनका स्वागत प्रयागराज के पूरामुफ्ती में सुशेन्द्र उर्फ शनी ने अपने साथियों के साथ जोरदार स्वागत किया।

सम्पादकीय

फिर बेनकाब हुआ पाक, सार्क देशों की बैठक कैंसल, जानें क्या है इसके मायने

सार्क देशों के विदेश मंत्रियों की शनिवार 25 सितंबर को न्यू यॉर्क में प्रस्तावित बैठक कैंसल हो गई। इस प्रकरण में पाकिस्तान का वह चेहरा बिल्कुल बेनकाब हो गया, जिसे तरह-तरह के उपायों से दुनिया से छुपाने की नाकाम कोशिश वह लगातार करता रहा है। साउथ एशियन असोसिएशन फॉर रीजनल को-ऑपरेशन यानी सार्क देशों के विदेश मंत्रियों की शनिवार 25 सितंबर को न्यू यॉर्क में प्रस्तावित बैठक कैंसल हो गई। इस प्रकरण में पाकिस्तान का वह चेहरा बिल्कुल बेनकाब हो गया, जिसे तरह-तरह के उपायों से दुनिया से छुपाने की नाकाम कोशिश वह लगातार करता रहा है। हालांकि अफगानिस्तान में तालिबान को मिल रहे पाकिस्तानी समर्थन में किसी तरह का संदेह किसी को भी नहीं रहा है, लेकिन खुद पाकिस्तान इसके बावजूद दावा करता रहा है कि वह तालिबान का समर्थन नहीं कर रहा और अफगानिस्तान में अगर उसकी कोई दिलचस्पी है तो यही कि पूरे क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनी रहे। लेकिन काबुल पर तालिबानी कब्जे के बाद किसी अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय संगठन की बैठक का यह पहला मौका आया नहीं कि पाकिस्तान ने इसमें तालिबान की नुमाइंदगी का सवाल उठा दिया।

सभी जानते हैं कि तालिबान की कथित सरकार को अभी किसी भी देश की मान्यता नहीं मिली है। उसके द्वारा घोषित सरकार के घटकों के बीच भी रह-रह कर हिंसा और मारपीट की खबरें आ रही हैं। उस कथित सरकार के कई प्रमुख सदस्य संयुक्त राष्ट्र की आतंकी लिस्ट में या दूसरे देशों की वॉन्टेड लिस्ट में हैं। ऐसे में सार्क देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में तालिबान को शामिल करने की जिद का भला क्या औचित्य हो सकता है? स्वाभाविक ही अन्य सार्क देश इस आग्रह को विचार करने लायक मानने को भी तैयार नहीं हुए। चूंकि इस पर आपस में कोई सहमति नहीं बन पाई और सार्क में कोई भी फैसला सर्वसम्मति से ही लिया जाता है, इसलिए बैठक को रद्द कर दिया गया। आतंकवाद के सवाल पर पाकिस्तान की ऐसी संदिग्ध भूमिका के ही कारण सार्क का मंच निष्क्रिय ही नहीं मरणासन्न हो गया है।

2016 में इसकी 19वीं शिखर बैठक इस्लामाबाद में होने वाली थी, मगर उरी में इंडियन आर्मी कैंप पर हुए आतंकी हमले के चलते इसे रद्द करना पड़ा था। तब से इसका कोई शिखर सम्मेलन नहीं हुआ है। पाकिस्तान के अड़ियल रुख का असर इसके सामान्य कामकाज पर भी हुआ है। किसी मसले पर आम सहमति तक पहुंचना करीब-करीब नामुमकिन हो गया है, जिस वजह से एक दौर में संभावनाशील माना जाने वाला यह मंच निरर्थकता की गति को प्राप्त होता जा रहा है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और अफगानिस्तान- इन आठ दक्षिए एशियाई देशों की सदस्यता वाले इस संगठन से चीन, यूरोपीय समुदाय (ईयू), ईरान, साउथ कोरिया, जापान, ऑस्ट्रेलिया, मॉरिशस, म्यांमार और अमेरिका ऑब्जर्वर के रूप में जुड़े हुए हैं। जाहिर है, दुनिया के 3 फीसदी भौगोलिक क्षेत्र, 21 फीसदी आबादी और 4.21 फीसदी इकॉनमी को कवर करने वाले इस संगठन की इस पूरे क्षेत्र में शांति, सहयोग, और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती थी। ऐसा न हो पाना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा।

दलित शब्द के उपयोग से क्यों रोका जा रहा है ? क्या है दलित का शाब्दिक अर्थ ?

राकेश सैन

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ। भारतीय वांगमय में दलित का अर्थ शंकराचार्य जी ने मधुराष्टकम् में द्वैत से लिया है। उन्होंने 'दलितं मधुरं' कहकर श्रीकृष्ण को सम्बोधित किया, उनके कहने का अर्थ है कि श्रीकृष्ण जी के पांवों तले दली गई या कुचली गई हर वस्तु मधुर है। पंजाब अनुसूचित जाति आयोग ने चेतावनी दी है कि अनुसूचित जाति के लोगों के लिए प्रयोग किए जाने वाले दलित शब्द से गुरेज किया जाए। प्रदेश में हाल ही में हुए नेतृत्व परिवर्तन के दौरान नए मुख्यमन्त्री चरनजीत सिंह चन्नी को लेकर बार-बार दलित जैसे आपत्तिजनक व अपमानजनक शब्द का प्रयोग किया गया। आयोग की अध्यक्षा श्रीमती तेजिन्दर कौर ने इसे गम्भीरता से लेते हुए कहा कि देश के संविधान व विधान के किसी भी अध्याय में इस शब्द का वर्णन नहीं है, इसीलिए इंटरनेट मीडिया, प्रिंट मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ सामान्य बोलचाल की भाषा में अनुसूचित जाति के लिए दलित शब्द का प्रयोग न किया जाए। आयोग की अध्यक्षा ने सम्दर्भ दिया है कि मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की ग्वालियर पीठ की तरफ से 15 जनवरी, 2018 को जनहित याचिका 20420 का 2017, डॉ. मोहनलाल माहौर बनाम भारतीय संघ व अन्य के अन्तर्गत निर्देशित किया गया है कि केन्द्र या राज्य सरकार और इसके अधिकारी व कर्मचारी अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग करने से परहेज करें, क्योंकि यह भारत के संविधान या किसी कानून में मौजूद नहीं है। उच्च न्यायालय के निर्देशों का पालन करते हुए ही केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मन्त्रालय सभी राज्य व केन्द्र शासित प्रदेशों को निर्देश दे चुका है कि अनुसूचित जातियों से सम्बन्धित व्यक्तियों व वर्गों के लिए 'दलित' की बजाय 'अनुसूचित जाति' शब्द का ही प्रयोग किया जाए। हाल ही में पंजाब राज्य अनुसूचित जाति आयोग 13 सितम्बर, 2021 को प्रदेश की मुख्य सचिव विनी महाजन को लिखे एक पत्र में जाति आधारित नामों वाले गांवों, कस्बों और अन्य स्थानों के नाम बदलने और ऐसे शब्दों का प्रयोग करने से परहेज करने के लिए कह चुका है। इसके अलावा साल 2017 में राज्य सरकार की तरफ से सरकारी कामकाज में हरिजन और गिरिजन शब्द नहीं बरतने का भी निर्देश दिया था।

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ। भारतीय वांगमय में दलित का अर्थ शंकराचार्य जी ने मधुराष्टकम् में द्वैत से लिया है। उन्होंने 'दलितं मधुरं' कहकर श्रीकृष्ण को सम्बोधित किया, उनके कहने का अर्थ है कि श्रीकृष्ण जी के पांवों तले दली गई या कुचली गई हर वस्तु मधुर है। परन्तु महाराष्ट्र में चले बाबा साहिब भीमराव आम्बेडकर के आन्दोलन के बाद इस शब्द का प्रयोग जाति सूचक प्रतीकों के लिए किया जाने लगा। हिन्दी में जातिसूचक शब्द के रूप में यह शब्द मराठी से आया बताते हैं जिसका अर्थ किया जाने लगा कि वह व्यक्ति या वर्ग जिसका शोषण-उत्पीड़न हुआ है। रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में दलित का अर्थ लिखा है- मसला, मर्दित, दबाया, रौन्दा या कुचला, विनष्ट किया हुआ। पिछले छह-सात दशकों में 'दलित' शब्द का अर्थ काफी बदल गया और पूरी तरह जातिसूचक बन गया है। देश में चलने वाली जातिवादी राजनीति ने तो इसे पूरी तरह विकृत कर दिया है। इस दौरान देश में यह विमर्श भी चला कि दलित शब्द का प्रयोग केवल कुछ जातियों के लिए ही क्यों किया जाए, जबकि दलित तो हर भारतीय है जो कई सदियों तक कभी मुस्लिमों तो कभी यूरोप के इसाई लुटेरे हमलावरों व उनकी सत्ता द्वारा कुचला जाता रहा है। इन विदेशी शक्तियों की सत्ता के चलते करोड़ों भारतीयों की हत्या, जबरन धर्मान्तरण, महिलाओं से अत्याचार, अकूत धन सम्पदा की लूट हुई। और सबसे अधिक भयावह त्रासदी तो 1947 के देश विभाजन के समय के समय झेलनी पड़ी जब युगों से अखण्ड चले आ रहे एक राष्ट्र को दो हिस्सों में बांट दिया गया। लगभग 12 सदियों तक निरन्तर लूटपाट और अत्याचारों ने हर भारतीयों को मसला और दलित बना दिया। फिर प्रश्न पैदा हुआ कि इन पीड़ित भारतीयों के भीतर भी जो पिछड़े हुए लोग या वर्ग हैं उनको क्या नाम दिया जाए ? तो इनका 'वंचित वर्ग' का नामकरण किया गया। वंचित वर्ग अर्थात वह वर्ग जो आज केवल संसाधनों से वंचित है, अन्यथा उनके और समाज के बाकी अंगों में किसी स्तर का कोई अन्तर नहीं है। इन वर्गों का यह वंचित वर्ग नाम अलगाव को दूर करने वाला परन्तु दलित नामकरण अपमानजनक होने के साथ-साथ समाज में विभेद पैदा करने वाला है। देश में अलगाववाद का विमर्श स्थापित करने में लगी शक्तियों ने 'दलित' शब्द का खूब दोहन किया और वंचित वर्ग में अलगाव की भावना पैदा करने के लिए इसका खूब दुरुपयोग हुआ है। नक्सली, जिहादी व चर्च प्रायोजित संगठनों द्वारा प्रचारित दलितवाद, अम्बेडकरवाद, द्रविड़-आर्यवाद, मूलनिवासीवाद आदि इसके उदाहरण हैं कि किस तरह इस दलित शब्द को तलवार की तरह प्रयोग किया जाता रहा है। सुविधाजनक होने के चलते यह शब्द जातिवादी राजनीतिक विमर्श का भी हथियार बना, बहुजन समाज पार्टी हो या समाजवादी पार्टी या राष्ट्रीय जनता दल या फिर दक्षिण के द्रविड़ अस्मिता की राजनीति करने वाले दल, सभी ने दलित शब्द की आड़ में खूब सियासी मालपूए सेंके हैं। केवल इतना ही नहीं देश के छद्म धर्मनिरपेक्ष दल भी इस खेल में किसी से पीछे नहीं रहे, चाहे ऐसा करते हुए देश व समाज को कितना भी नुक्सान पहुंचा हो। राजनीति में यह विमर्श इतना वङ्कारूप ले चुका है कि मीडिया विश्लेषणों में भी इसका प्रचलन आम बात हो गयी है। हर चुनाव का विश्लेषण करते हुए लगभग हर मीडिया हमें बताता है कि अमुक इलाके में कितने हिन्दू मत हैं, कितने दलित और कितने अल्पसंख्यक। इन विश्लेषणों में दलित को हिन्दुत्व की मुख्यधारा से अलग करके दिखाया जाता है। अगर दलित शब्द को पूरी तरह प्रतिबन्धित करके अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति शब्द अनिवार्य कर दिया जाता है तो इस अलगाववादी विमर्श की धार अवश्य कुन्द होगी। देश अपनी स्वतन्त्रता की 75वीं जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा है और अमृत महोत्सवों की धूम है। यह बौद्धिक नवाचार व सुधारों की बेला है। यही उचित समय है कि समाज में प्रचलित भ्रामक, गलत, अपमानजनक और बिखराव पैदा करने वाली शब्दावलियों पर पूर्ण विराम लगाया जाए। हरियाणा सरकार ने हाल ही में गुरु गोरखनाथ सम्प्रदाय की भावनाओं को ध्यान में रख कर गोरखधन्धा शब्द के प्रयोग पर पूरी तरह रोक लगा दी है। कितने दशकों से गुरु गोरखनाथ जी के नाम से एक अपमानजनक विशेषण जोड़ कर उनको अपमानित किया जाता रहा है यह दुर्भाग्य की बात है। उसी तरह दलित शब्द से भारतीय समाज के एक वर्ग का भी अपमान हो रहा है और उनमें अलगाव की भावना पैदा हो रही है। उचित समय है कि दलित शब्द पर पूरी तरह से प्रतिबन्ध लगाया जाए और समाज में चल रहे झूठे विमर्श को रोका जाए।

सम्राट मिहिर भोज का इतिहास

यूपी में योगी आदित्यनाथ के लिए बना सिरदर्द

संजीव सिंह

भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के लिए मुश्किलें बढ़ सकती हैं। विडंबना यह है कि योगी आदित्यनाथ, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में विकासोन्मुख नेता के रूप में अपनी छवि बनाई है, उन्हें एक ऐसे समुदाय से नाराजगी और गुस्से का सामना करना पड़ रहा है जो उनको जी-जान से प्यार करता है - वह हैं राजपूत जिनको राज्य में ठाकुर के रूप में भी जाना जाता है। विधानसभा चुनावों से कुछ महीने पहले, ग्रेटर नोएडा के दादरी पीजी कॉलेज में एक छोटा सा प्रतिमा-अनावरण कार्यक्रम गूजर और राजपूत समुदायों के बीच एक ऐतिहासिक बहस का केंद्र बन गया है। इसने योगी आदित्यनाथ को एक नया सिरदर्द दे दिया है। सम्राट मिहिर भोज नौवीं शताब्दी के महानतम राजा थे जिन्होने अपनी तलवार और सक्षम प्रशासन के बल पर इस्लामी आक्रमणकारियों को सिन्ध पार नहीं करने दिया था। उनकी प्रतिमा के अनावरण को लेकर विवाद तब शुरू हुआ जब प्रतिमा की पट्टिका पर गुर्जर सम्राट लिखा गया। गूजर समुदाय का दावा है कि सम्राट मिहिर भोज गूजर हैं क्योंकि कुछ इतिहास की पाठ्यपुस्तकें उन्हें गुर्जर-प्रतिहार वंश से संबंधित बताती हैं। राजपूत समुदाय इससे नाराज है क्योंकि यह साबित करने के लिए पर्याप्त ऐतिहासिक साक्ष्य और सबूत हैं जो बताते हैं कि मिहिर भोज शाही प्रतिहार राजपूत वंश से संबंधित थे। इतिहास के उस दौर मे 'गुर्जर' शब्द हमेशा एक भूभाग (राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों)के लिये प्रयोग किया जाता था ना कि किसी जाति विशेष के लिये। राजपूतों को कॉलेज में स्थापित मूर्ति से कोई समस्या नहीं है क्योंकि सम्राट मिहिर भोज एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं; उनका गुस्सा विशेष रूप से प्रतिहार राजपूत राजा को पट्टिका में गलती से 'गुर्जर' कहे जाने पर है। वे इसे अपने इतिहास के विनियोग के रूप में देखते हैं। नाराज़गी का सबसे बड़ा कारण यह है कि योगी आदित्यनाथ, जो राजपूत युवाओं में भी बहुत लोकप्रिय हैं, ने सम्राट मिहिर भोज की मूर्ति का अनावरण किया जिन्हे गुर्जर के रूप में चित्रित किया गया है। पिछले कुछ दशकों से यही माना जाता है कि राजपूत समुदाय अंदरूनी कलह के कारण विभाजित रहता है। परंतु इस घटना ने दिखा दिया का आज का राजपूत युवा अपने अतीत को छोड़ कर एकजुट होने को तैयार है। उनकी सामूहिक ताकत जब दिखी जब युवाओं ने ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर 17 सितंबर को , 19 सितंबर को और 21 सितंबर को जैसे हैशटैग टॉप ट्रैन्ड्स मे शामिल कर दिया। इन तीनों हैशटेग पर क्रमशः 3 लाख से अधिक ट्वीट्स किये गये। ऑनलाइन आंदोलन की सुगबुगाहट ज़मीन पर भी दिखी जब कई राजपूत संगठनों ने दादरी में शक्ति प्रदर्शन की कोशिश की। हालांकि स्थानीय प्रशासन ने स्थिति पर काबू पाने में कामयाबी हासिल कर ली थी। कुछ समाचार एजेंसियों से पता चलता है कि 22 सितंबर को होने वाले आयोजन के 30 किमी के दायरे में आने वाले अधिकांश राजपूत गांवों में पुलिस ने कड़ी निगरानी रखी थी। यह भाजपा के लिए चिंता का विषय होना चाहिए, खासकर चुनावी मौसम के दौरान, जब विपक्षी दल भाजपा पर निशाना साधने के लिये भावनात्मक मुद्दों की तलाश कर रहे हैं।

विभिन्न अनुमानों के अनुसार, पश्चिमी यूपी में गूजर लगभग 2ज्ञ् मतदाता हैं और वे नोएडा और अविभाजित मुजफ्फरनगर जिलों में 6-8 सीटों को प्रभावित कर सकते हैं। राज्य में राजपूत वोट लगभग 10-12ज्ञ् है और समान रूप से फैला हुआ है। राजपूत बड़े मतदान पैटर्न पर प्रभाव डालते हैं, यही वजह है कि उन्हें राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव लड़ने के लिए अधिक सीटें मिलती हैं। पिछले कुछ समय से देखा गया है कि अधिकांश समुदाय राजनीतिक सत्ता मे बड़ा हिस्सा पाने के लिये अपनी संख्या बढ़-चढ़ कर बताते हैं। किंतु अगर हम भारत मे हुई जाति आधारित अंतिम जनगणना रिपोर्ट के हिसाब से देखें तो वास्तविक संख्या बनाम दावा की गई संख्या साफ हो जाती है। 1931 की जाति जनगणना के अनुसार, तत्कालीन युनाईटेड प्रॉविंसेस (अब उत्तर प्रदेश) में गूजरों की जनसंख्या 0.7ज्ञ् और राजपूतों की जनसंख्या 7.2ज्ञ् थी। भले ही योगी आदित्यनाथ राज्य भर में एक लोकप्रिय नेता के रूप मे उभरे हैं, लेकिन भाजपा का चुनावी गणित अब भी बिगड़ सकता है। गाज़ियाबाद और सहारनपुर के बीच पश्चिमी यूपी की लगभग 120 सीटों पर राजपूत वोट भाजपा की धार को कुंध सकता है। यह योगी आदित्यनाथ के लिए विडंबना होगी कि जिन्हें केवल एक राजपूत नेता के रूप में ब्रांडेड किया जाता है और अक्सर मुख्यधारा की मीडिया उनको राजपूतों के लिए एक सॉफ्ट कॉर्नर रखने के लिये उनकी आलोचना करती है, उन्हें उसी समुदाय के आक्रोश का सामना करना पड़ रहा है। शायद इस पहलू पर मीडिया कवरेज की कमी का एकमात्र कारण यह है कि यह मुद्दा उनके लोकप्रिय नैरेटिव में फिट नहीं बैठता है।

चौटाला की जींद रैली और विपक्षी एकता के यक्ष प्रश्न

राजेंद्र शर्मा

इस समर्थन के लिए इसका भरोसा होना भी जरूरी है कि संघ-भाजपा के सत्ता से हटाने का दावा करने वाली विपक्षी कतारबंदी, सचमुच आम जनता के हितों की रक्षा करेगी, उन्हें आगे बढ़ाएगी। जनता के मुद्दों पर संघर्ष के पक्ष में विपक्ष की बढ़ती एकता, ऐसा भरोसा दिलाने वाला राजनीतिक-नीतिगत मंच बनाएगी और विपक्षी पार्टियों को उसके प्रति प्रतिबद्घ भी करेगी। ऐसी एकता ही विपक्षी पार्टियों की बढ़ती संख्या को अंध-कांग्रेसविरोध की वैचारिक ग्रस्तता से भी निकालेगी। यह भारत में विपक्षी एकता का सीजन है। विपक्षी एकता के चर्चे हवाओं में हैं। ऐसे में अचरज की बात नहीं है कि शिक्षक भर्ती घोटले में अपनी सजा पूरी कर, हरियाणा में फिर से अपनी राजनीतिक जमीन दोबारा हासिल करने की कोशिश कर रहे ओमप्रकाश चौटाला, ऐलान कर गैर-कांग्रेसी, गैर-भाजपा पार्टियों को एकजुट करने के लिए मैदान में कूद पड़े हैं। इस अभियान के लिए, उनके लिए चौधरी देवीलाल के जन्म दिन पर आयोजित रैली से उपयुक्त दूसरा मौका नहीं हो सकता था। आखिरकार, चौधरी देवीलाल इमर्जेंसी के दौर से सामने आई कांग्रेसविरोधी विपक्षी एकता के प्रमुख स्तंभों में एक रहे थे और इसी विपक्षी एकता के बल पर देश के उप-प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचे थे। 25 सितंबर को जींद में आयोजित रैली के लिए, लगभग तमाम गैर-कांग्रेस, गैर-भाजपा पार्टियों को आमंत्रित किया गया है और चौटाला ने खुद कई विपक्षी नेताओं से मुलाकात कर उन्हें आमंत्रित किया है। बिहार की जदयू-भाजपा गठबंधन सरकार के मुख्यमंत्री, नीतीश कुमार के साथ उनकी मुलाकात ने खासतौर पर लोगों का ध्यान खींचा है। संयुक्त किसान मोर्चा द्वारा अपने आंदोलन के दस महीने पूरे होने पर प्रस्तावित, भारत बंद की तारीख, आगे खिसका कर 27 सितंबर किया जाना, देवीलाल के नाम के महत्व की ओर ही इशारा करता है।

बेशक, यह तो आने वाले दिनों में ही पता चलेगा कि जींद रैली में अंततः कौन-कौन से नेता जुटते हैं इससे भी महत्वपूर्ण सवाल यह है कि विपक्षी नेताओं के इस जमावड़े से क्या विपक्षी एकता के प्रयासों को क्या कोई वास्तविक गति मिलेगी वास्तव में यह कहना गलत नहीं होगा कि विपक्षी नेताओं के इस जमावड़े के जरिए, ओमप्रकाश चौटाला की पहली कोशिश तो देवीलाल के असली उत्तराधिकारी के रूप में अपना दावा मजबूत करने तथा अपने सहारे पार्टी के आईएनएलडी गुट की ताकत बढ़ाने की ही होगी। उनकी कोशिश होगी कि देवीलाल की विरासत की लड़ाई में, बागी होकर भाजपा के साथ गठजोड़ सरकार में मुख्यमंत्री बन गए, अपने पोते दुष्यंत चौटाला की जेजेपी को, अगर बेदखल नहीं भी किया जा सके तो, इतना कमजोर जरूर कर दिया जाए कि वह खुद, किसी सुलह-समझौते के लिए मजबूर हो जाए। इसी से आईएनएलडी अपने राजनीतिक अस्तित्व को बचाने की उम्मीद कर सकती है। सभी जानते हैं कि करीब दस महीने से जारी किसान आंदोलन के निशाने पर, हरियाणा सरकार के हिस्से के तौर पर दुष्यंत चौटाला की पार्टी भी आई है और इसे ओमप्रकाश चौटाला गुट, देवीलाल की विरासत के अपने दावे को मजबूत करने के लिए, सबसे अनुकूल मौका मान रहा है। इसलिए, जींद रैली में किसान आंदोलन का खूब जोर-शोर से समर्थन किया जाना भी तय है। वैसे भी देवीलाल की छवि तो चौधरी चरणसिंह के बाद, उत्तरी भारत के सबसे बड़े किसान नेता की ही है। अचरज नहीं होगा कि जींद रैली, अन्य अनेक गैर-कांग्रेसी विपक्षी नेताओं को एक मंच पर लाने के अलावा एक ओर प्रकाशसिंह बादल और दूसरी ओर नीतीश कुमार को एक मंच पर लाने में कामयाब हो जाए। किसान आंदोलन के दबाव में ही अकाली दल को, सत्ताधारी एनडीए से नाता तोड़ना पड़ा था, जबकि नीतीश कुमार और भाजपा के रिश्तों की असहजता किसी से छुपी नहीं है। दोनों अगर जींद रैली में पहुंचते हैं, तो यह एक बड़ी खबर होगी और इससे विपक्षी एकता के प्रयासों में एक नया तत्व जुड़ेगा। असंभव नहीं है कि विपक्षी एकता के प्रयासों के प्रति अब तक आम तौर पर उदासीन ही रहीं क्षेत्रीय पार्टियों में से भी किसी पार्टी की हाजिरी इस रैली में नजर आ जाए। अगर ऐसा होता है तो प्रकटतः इससे विपक्षी एकता के प्रयासों को कांग्रेस-विरोधी रास्ते पर ले जाने की कोशिशों को, कुछ न कुछ बल अवश्य मिलेगा। फिर भी, ज्यादा से ज्यादा निरंकुश होते मोदी निजाम के मुकाबले, एक वास्तविक अखिल भारतीय विकल्प के उभरने में, इससे कोई खास प्रगति होने की संभावना दिखाई नहीं देती है। इसकी वजह यह है कि इस तरह की कोई भी पहल, विपक्षी एकता के अंकगणित के एक साधारण से किंतु निर्णायक प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ है। प्रश्न यह है कि भाजपा के साथ ही, सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी, कांग्रेस को भी निशाने पर लेकर चलने वाला ऐसा कोई भी प्रयास, मोदी राज का व्यावहारिक विकल्प कैसे पेश कर सकता है। वास्तव में व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो, भाजपा के साथ ही कांग्रेस के भी विरोध से संचालित विपक्षी एकता की कोई भी कोशिश, मोदी सरकार के खिलाफ संसद के मानसून सत्र में जिस हद तक विपक्षी एकता देखने को मिली है, उसे आगे ले जाने के बजाय, उसे तोड़ने का ही दबाव बना रही होगी। इस लिहाज से इसे विपक्षी एकता की कोशिश कहना भी कितना सही होगा, यह अपने आप में एक बड़ा सवाल है इसे तो विपक्ष को बांटने की ही कोशिश माना जाएगा। और ठीक इसीलिए, ऐसी किसी भी कोशिश का जनता के अनुमोदन के अभाव में टांय-टांय फिस्स होकर रह जाना या अंततः विपक्षी ध्रुव में खुद को समायोजित करने पर मजबूर हो जाना तय है।

भाजपा-आरएसएस के केंद्र में सत्ता में आने के बाद, तीसरे मोर्चे की राजनीति के दिन सचमुच खत्म हो चुके हैं, जो कांग्रेस के राजनीतिक वर्चस्व के दौर में और उसके सामने व्यावहारिक चुनौती पेश करने के लिए उभरकर सामने आई थी। बाबरी मस्जिद के ध्वंस के साथ ही, तीसरे मोर्चे की राजनीति का भी अंत हो गया। 1996-97 के दौरान आईं देवगौड़ा तथा गुजराल की संयुक्त मोर्चा सरकारें, भाजपा के नेतृत्व वाले गठजोड़ के वर्चस्व के खिलाफ केंद्रित और कांग्रेस द्वारा समर्थित थीं। यूपीए-1 के दौर में, विपक्षी ध्रुव पर कांग्रेस और अन्य ताकतों के बीच का समीकरण पलट गया, जबकि विरोधी ध्रुव पर एनडीए ही बना रहा। और जहां तक वर्तमान का सवाल है, यह समझने के लिए राजनीति का विशेष ज्ञान होने की जरूरत नहीं है कि 2019 के चुनाव में 40 फीसद से ज्यादा वोट जुटाने में समर्थ हुए, मोदी-आरएसएस के नेतृत्व वाले मोर्चे को व्यावहारिक चुनौती, इस मोर्चे के खिलाफ या उससे बाहर पड़े करीब 60 फीसद वोट को कमोबेश एक ध्रुव पर इकट्ठा करने में समर्थ विपक्षी एकता से ही दी जा सकती है। वक्त का तकाजा है, व्यापक से व्यापक दूसरा मोर्चा, न कि तीसरे-चौथे मोर्चे खड़े करने की विभाजनकारी कवायद। लेकिन, यह दूसरा मोर्चा या व्यावहारिक विकल्प, सिर्फ अंकगणित का प्रश्न नहीं है। बेशक, प्रशांत किशोर का चर्चित अंकगणित, ऐसे मोर्चे की दिशा में बढ़ने में कुछ मददगार लगता है। इस अंकगणित का मूल सूत्र यह है कि दो सौ-सवा दो सौ सीटों पर कमोबेश सीधे, कांग्रेस और भाजपा का मुकाबला होना है। इन सीटों पर विपक्ष की ओर से कांग्रेस ही भाजपा तथा उसके सहयोगियों को चुनौती दे। और शेष तीन सौ से ज्यादा सीटों पर, जहां जो पार्टी क्षेत्रीय रूप से मजबूत है, वही अधिकतम-संभव एकता के साथ विपक्ष की ओर से सत्ताधारी गठबंधन को चुनौती दे। इस तरह की थोड़ी ढीली-ढाली विपक्षी कतारबंदी, एक व्यावहारिक चुनौती बन सकती है।

लेकिन, यह गणित कागज पर जितना आसान लगता है, उसे व्यवहार में उतारना उतना ही मुश्किल बल्कि असंभव है। फिलहाल तो स्थिति यह है कि आंध्र प्रदेश, तेलंगाना तथा ओडिशा के सत्ताधारी क्षेत्रीय दल, न सिर्फ सचेत रूप से विपक्षी एकता के सभी प्रयासों से दूर बने रहे हैं बल्कि संसद में जब-तब मोदी राज की मदद भी करते रहे हैं। वास्तव में कांग्रेस-विरोधी मुद्रा, उनके इस रुख के लिए सैद्घांतिक जामा मुहैया कराती है। इतना ही नहीं, बसपा तथा यहां तक कि सपा भी, सबसे बढ़कर उत्तर प्रदेश में विपक्ष में अपने वर्चस्व की चिंता में, विपक्षी एकता के प्रयासों के प्रति दुविधापूर्ण स्थिति बनाए रहे हैं। कहने का अर्थ यह कि वैकल्पिक कतारबंदी के प्रश्न का अंकगणित के प्रश्न के रूप में हल होना मुश्किल बल्कि असंभव ही है। वास्तव में इस प्रश्न को रसायन-गणित यानी रसायन आधारित अंकगणित के प्रश्न के रूप में ही हल किया जा सकता है। यह रसायन आएगा जनता की इच्छा से, उसके समर्थन से। विपक्षी एकता में यह रसायन सिर्फ मोदी राज के विरुद्घ विपक्षी नेताओं को जमा करने से नहीं पैदा होगा। यह रसायन पैदा होता है अपने हितों के लिए, जनता के प्रमुख हिस्सों की शासन से टक्कर से। संघर्षों के बीच से अपने वास्तविक हितों के प्रति ज्यादा से ज्यादा जागरूक होती और अपने हितों के अनुकूल पड़ने वाली राजनीति तथा राजनीतिक ताकतों को ज्यादा से ज्यादा पहचानती जनता का दबाव ही, न सिर्फ मौजूदा सत्ताधारियों से बाहर की सभी ताकतों पर एकजुट होने का दबाव बनाएगा, बल्कि खुद सत्ताधारियों के जनसमर्थन को उत्तरोत्तर कमजोर करेगा। ऐतिहासिक किसान आंदोलन ने मोदी राज और भाजपाई राज्य सरकारों के खिलाफ भी जन गोलबंदी का रास्ता दिखा दिया है।

चांदनी चौक की रौनक़ हैं ये

ऐसी कौन सी जगह है, जहाँ स्ट्रीट वेंडर्स ना हो? इंडिया गेट के पास आइसक्रीम बेचती रेहड़ियां, यूपीएससी के पीछे की चाट, यहाँ तक एयरपोर्ट पर भी वेंडर्स होते हैं। जहाँ आम आदमी हैं, वहां उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए वेंडर हैं। हाल ही में दिल्ली हाई कोर्ट ने उत्तरी दिल्ली नगर निगम और दिल्ली पुलिस से चांदनी चौक - जो कि एक नो-वेंडिंग जोन है - में वेंडर्स की उपस्थिति का कारण पूछा। कोर्ट जवाब चाहता है कि आखिर चांदनी चौक से स्ट्रीट वेंडर्स को पूरी तरह से क्यों हटाया नहीं गया। स्ट्रीट वेंडर कानून 2014 के अनुसार 'नो-वेंडिंग इलाका' नगर निगम या स्थानीय प्राधिकरण, टाउन वेंडिंग समिति की सलाह से ही तय कर सकता है। मगर हाई कोर्ट का तर्क है कि चांदनी चौक 'पहले से' ही नो-वेंडिंग इलाका घोषित है। पहले से एक समस्या है - जिसका समाधान ये नया कानून यानि कि 2014 का कानून है। चूँकि 'पहले से' कोई विधायिका द्वारा पास किया कानून नहीं था, सिर्फ कागज़ी नीतियों के आधार पर नगर निगम नो-वेंडिंग जोन बनाती गयी। कुछ केसों में, अदालतों ने नो-वेंडिंग जोन को हरी झंडी दी। लेकिन हमारी संवैधानिक व्यवस्था में कानून बनाने का अधिकार सिर्फ विधायिका के पास है - कार्यपालिका और न्यायपालिका के पास नहीं। इसी सिद्धांत के अनुरूप, सर्वोच्च न्यायलय ने 9 सितम्बर 2013 को 'महाराष्ट्र एकता हॉकर्स यूनियन' केस में एक आदेश दिया - कि पुराने जो भी, जितने निर्देश और आदेश है, वो सिर्फ नया कानून आने तक ही वैध होंगे। अब जब संसद द्वारा पास किया कानून लागू है, तो पुराने सर्वे और नो-वेंडिंग ज़ोन की मान्यता का प्रश्न ही नहीं उठता। 2014 का कानून भी साफ़-साफ़ कहता है कि जब तक कानून के अनुसार सर्वे नहीं हो जाता, तब तक कोई वेंडर को उसकी जगह से हटाया न जाए। कानून की पूरी तरह धज्जियाँ उड़ाते हुए कई शहरों में वेंडर्स को उनकी जगह से बेदखल किया गया। नए कानून के अनुसार, कोई नेचुरल मार्किट, जहाँ वेंडर्स अपना बाजार लगाते रहे हो, वो कभी नो-वेंडिंग इलाका नहीं हो सकता। भीड़-भाड़ और ट्रैफिक जाम के कारण कभी वेंडर्स को हटाया नहीं जा सकता। क्योंकि भीड़-भाड़ और जाम लगने के कारण तो पैदल चालक, गाड़ियों, रिक्शों, और दुकानदार की वजह से भी होता है या हो सकता है, ऐसे में केवल स्ट्रीट वेंडर ही ज़िम्मेदार क्यों? साफ़-सफाई रखना नगर निगम का काम है, और गंदगी फ़ैलाने पर निगम के पास जुर्माना लगाने का अधिकार भी है, इसलिए गंदगी की वजह से भी वेंडरों को हटाया नहीं जा सकता। नया कानून तो यहाँ तक कहता है कि सर्वे से पहले नो-वेंडिंग जोन तय नहीं किया जा सकता। जहाँ पथ है , वहां पथिक है और पथ विक्रेता भी है। और विक्रेता है, तो ग्राहक भी है। इसी से तो शहर की रौनक है। कानून इस बात को बखूबी समझता है। पर, शायद उसे पढ़ने वाले नहीं।

-प्रशांत नारंग

मुंबई इंडियंस को केकेआर के इस ऑलराउंडर से है सबसे बड़ा खतरा

पिछली भिड़ंत में 2 ओवर में ही झटके थे 5 विकेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2021 के यूएई एडिशन के पांचवें और टूर्नामेंट के 34वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस का सामना कोलकाता नाइट राइडर्स की टीम से होगा। मुंबई को अपने आखिरी मैच में चेन्नई सुपर किंग्स के हाथों हार झेलनी पड़ी थी, वहीं इयोन मोर्गन की टीम ने एकतरफा मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को 9 विकेट से रौंदा था। इस सीजन जब यह दोनों टीमें मैदान पर एक दूसरे के खिलाफ उतरी थीं, तो बाजी रोहित शर्मा की पलटन ने मारी थी। हालांकि, केकेआर के स्टार ऑलराउंडर आंद्रे रसेल ने मुंबई के बैटिंग ऑर्डर को महज 2 ही ओवर में तहस-नहस किया था। ऐसे में डिफेंडिंग चैंपियन को कोलकाता के इस खिलाड़ी से काफी सर्तक रहना होगा।

आंद्रे रसेल ने बैंगलोर के खिलाप आखिरी मुकाबले में भी कमाल की गेंदबाजी की थी और अपने 3 ओवर में सिर्फ 9 रन देकर तीन बड़े विकेट हासिल किए थे। मुंबई के खिलाफ आईपीएल 2021 में खेले गए 5वें मुकाबले में रसेल ने 2 ओवर में 15 रन देकर पांच विकेट चटकाए थे। इस दौरान उन्होंने कीरोन पोलार्ड जैसे बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाई थी। हालांकि, रसेल उस मैच में बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके थे और 15 गेंदों का सामना करने के बाद सिर्फ 9 रन ही बना पाए थे। पहले बल्लेबाजी करते हुए मुंबई की टीम रसेल के शानदार स्पैल के चलते 152 रनों पर ऑलआउट हो गई थी। 153 रनों के लक्ष्य का केकेआर के बल्लेबाज पीछा करने में नाकाम रहे थे और 7 विकेट खोकर 142 रन ही बना सके थे। केकेआर के गेंदबाजों का प्रदर्शन बैंगलोर के खिलाफ आखिरी मैच में लाजवाब रहा था। वरुण चक्रवर्ती और रसेल की जोड़ी के आगे आरसीबी के बल्लेबाजों ने पूरी तरह से घुटने टेक दिए थे और टीम सिर्फ 92 रन ही बना सकी थी। बल्लेबाजी में शुभमन गिल और आईपीएल में अपना डेब्यू करने वाले वेंकटेश अय्यर ने धुआंधार बैटिंग की थी और टीम को महज 10 ओवर में जीत दिलाई थी। चेन्नई के खिलाफ मुंबई की टीम अपने नियमित कप्तान रोहित शर्मा और हार्दिक पांड्या के बिना उतरी थी। अब देखना दिलचस्प होगा कि यह दोनों इस मैच में उतरते हैं या नहीं।

शिखर धवन ने ऑरेंज कैप पर किया कब्जा, स्ट्राइक रेट को लेकर कही बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग(आईपीएल) 2021 के दूसरे फेज में दिल्ली कैपिटल्स ने अपने अभियान का आगाज जीत के साथ किया। दिल्ली कैपिटल्स की तरफ से शिखर धवन ने एक बार फिर शानदार पारी खेली। उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेले गए मैच में 37 गेंदो में 42 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में छह चौके और एक छक्का जड़ा। इसी के साथ शिखर धवन ने आईपीएल 14 में एक बार फिर से ऑरेंज कैप हासिल कर ली है। आईपीएल 2021 में शिखर धवन ने जबरदस्त अंदाज में बल्लेबाजी की है।

उन्होंने ऑरेंज कैप पंजाब किंग्स के कप्तान केएल राहुल को पछाड़ कर हासिल की। धवन ने ऑरेंज कैप के बारे में पूछने पर कहा कि वह जिस तरह से बल्लेबाजी कर रहे हैं उसका आनंद ले रहे हैं। उन्होंने स्टार स्पोर्ट्स से कहा,'मैं कैप पहनने का मजा ले रहा हूं, मैं जिस तरह से गेंद को टाइम कर रहा हूं उसका आनंद ले रहा हूं। विकेट के अनुसार हम लोगों ने अपना प्लान बनाया था। वहां जाकर जीत दर्ज करना बेहद शानदार रहा। धवन ने अपने स्ट्राइक रेट को लकेर हा कि मेरी कोशिश है स्ट्राइक रेट को और बेहतर करूं। क्योंकि मैं टीम के लिए सबसे ज्यादा प्रभाव रखने वाला प्लेयर बनना चाहता हूं। उन्होंने रबाडा और नॉर्टजे की तारीफ करते हुए कहा कि वे हमारे स्पेशल प्लेयर हैं। रबाडा हमारे लिए हमेशा विकेट लेते हैं। नॉर्टजे की गेंदबाजी काफी तेज है और उनमें पहले से ज्यादा सुधार हुआ है। वह बल्लेबाजों को काफी तंग कर रहे हैं। धवन के मौजूदा आईपीएल में 9 मैचों में 422 रन हो गए हैं। उन्होंने लगातार छठे साल आईपीएल में 400 से ज्यादा रन बनाए हैं।

केकेआर के खिलाफ 18 रन बनाते ही अईपीएल में ऐसा करने वाले पहले बल्लेबाज बन जाएंगे मुंबई इंडियंस रोहित शर्मा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2021 में आज अबु धाबी के शेख जायद स्टेडियम में मुंबई इंडियंस और कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के बीच मैच खेला जाना है। मुंबई इंडियंस ने केकेआर के खिलाफ 22 मैच जीते हैं, जबकि केकेआर ने आजतक इस टीम के खिलाफ महज छह जीत दर्ज की हैं। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा का रिकॉर्ड भी केकेआर के खिलाफ शानदार रहा है। रोहित अगर इस मैच में खेलते हैं और 18 या इससे ज्यादा रन बना लेते हैं, तो वह एक खास उपलब्धि हासिल कर लेंगे। आईपीएल में किसी एक टीम के खिलाफ 1000 रनों का आंकड़ा छूने वाले रोहित पहले बल्लेबाज बन जाएंगे। केकेआर के खिलाफ रोहित शर्मा अभी तक 982 रन बना चुके हैं। रोहित ने केकेआर के खिलाफ चार बार मैन ऑफ द मैच अवॉर्ड जीता है। मुंबई इंडियंस और केकेआर के बीच मैच के दौरान सबसे ज्यादा बार मैन ऑफ द मैच अवॉर्ड जीतने का रिकॉर्ड भी रोहित के नाम दर्ज है। उनके बाद सचिन तेंदुलकर और हार्दिक पांड्या का नंबर आता है। दोनों ने तीन-तीन बार मुंबई इंडियंस और केकेआर के बीच हुए मैच में मैन ऑफ द मैच अवॉर्ड जीता है। रोहित आईपीएल 2021 के दूसरे फेज के पहले मैच में नहीं खेल सके थे, जिसमें मुंबई इंडियंस को चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के खिलाफ 20 रनों से हार का सामना करना पड़ा था।खबरों की माने तो रोहित इस मैच को खेलने के लिए पूरी तरह से फिट हैं और अनमोलप्रीत सिंह की जगह क्विंटन डिकॉक के साथ पारी का आगाज करेंगे। रोहित के अगर ओवरऑल आईपीएल करियर की बात करें, तो उन्होंने 207 आईपीएल मैचों में 31.49 की औसत से 5480 रन बनाए हैं, जिसमें एक सेंचुरी और 40 हाफसेंचुरी शामिल हैं। रोहित आईपीएल इतिहास के सबसे सफल कप्तान भी हैं, जिन्होंने अपनी कप्तानी में मुंबई इंडियंस को पांच बार आईपीएल खिताब जिताया है।

मुंबई इंडियंस के ऑलराउर क्रुणाल पांड्या ने कहा, एक ओवर में छह छक्के जड़ना है मेरा लक्ष्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंटरनेशनल क्रिकेट में एक ओवर में 6 छक्के लगाना एक खास उपलब्धि है। यूएस के जसकरन मल्होत्रा ने पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ मैच में गेंदबाज गॉडी तोका के ओवर में छह छक्के लगाए। मुंबई इंडियंस के ऑलराउंडर क्रुणाल पांड्या ने एक ओवर में 6 छक्के लगाने वाले की इच्छा जताई है। जसकरन से पहले तीन खिलाड़ियों ने इंटरनेशनल क्रिकेट में एक ओवर में 6 छक्के लगाए हैं। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज हर्शल गिब्स इंटरनेशनल क्रिकेट में 6 छक्के लगाने वाले पहले खिलाड़ी हैं। ईएसपीएन की एक इंटरव्यू के दौरान जब कृणाल से यह पूछा गया कि वो एक रिकॉर्ड के बारे में बताएं जो वो बनाना चाहते हैं। इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा,'एक ओवर में 6 छक्के लगाना उनका लक्ष्य है।' उनसे जब पूछा गया कि किस बल्लेबाज को बॉलिंग करना कठिन है तो उन्होंने वेस्टइंडीज के पावर हिटर क्रिस गेल का नाम लिया। गौरतलब है कि गिब्स ने नीदरलैंड के खिलाफ साल 2007 के आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप के दौरान सबसे पहले एक ओवर में छह छक्के लगाए थे। गिब्स ने नीदरलैंड के गेंदबाज डैन वैन बुंगे के खिलाफ पारी के 30वें ओवर में एक ही ओवर में 6 छक्के जड़ दिए थे।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के सपोर्ट में उतरे ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर उस्मान ख्वाजा, बोले- कोई भारत को ना नहीं कहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट इन दिनों मुश्किल में घिरा हुआ है। न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) और इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने पाकिस्तान दौरा रद्द कर दिया। न्यूजीलैंड की टीम तो पाकिस्तान दौरे पर थी और जिस दिन पहला वनडे इंटरनेशनल मैच खेला जाना था, उसी दिन दौरे रद्द करने की बात सामने आई। इन सबके बीच ऑस्ट्रेलिया के क्रिकेटर और पाकिस्तान में जन्मे उस्मान ख्वाजा पीसीबी के सपोर्ट में सामने आए हैं। ख्वाजा ने कहा कि पैसा बोलता है, ऐसा पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ किया जा सकता है, लेकिन भारत के खिलाफ कोई ऐसा नहीं करेगा। एनजेडसी ने सिक्योरिटी थ्रेट का हवाला देते हुए पाकिस्तान दौरा रद्द किया और अपनी टीम को वापस बुला लिया, वहीं इंग्लैंड ने कोविड रिस्ट्रिक्शन के चलते पाकिस्तान का दौरा रद्द किया। ख्वाजा का जन्म पाकिस्तान में ही हुआ है, लेकिन जब वह पांच साल के थे, तभी उनका परिवार सिडनी शिफ्ट हो गया था। ख्वाजा ने कहा कि पाकिस्तान क्रिकेट के साथ जो कुछ हो रहा है, उससे वह काफी निराश हैं।

डिमेंशिया एक गंभीर समस्या : सीएमओ

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत इन दिनों डिमेंशिया जागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा हैं। इसी कड़ी में आज मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. संतोष चक की अध्यक्षता में संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि डिमेंशिया की समस्या अत्यधिक गंभीर होती है। इसके तमाम चिंताजनक लक्षण होते हैं। इन लक्षणों का असर मरीज के रोजमर्रा के जीवन पर पड़ता है। ये समस्याएं उम्र बढने के साथ और ज्यादा बढ़ती जाती हैं। एडिशनल सीएमओ डॉ0 विवेक श्रीवास्तव ने बताया कि भूलने की बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए जरूरी है कि शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के साथ ही मानसिक रूप से अपने को स्वस्थ रखें। डी0एम0ओ0 रामाश्रय ने बताया कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती हैं वैसे वैसे ही मस्तिष्क में भी बदलाव होते हैं। जिसके कारण कई बातों को याद करने में समस्याएं आ जाती हैं। इन समस्याओं के लिए तत्काल मनोचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। मनोचिकित्सक अभिनव पांडेय द्वारा डिमेंशिया रोग के लक्षण कारण और बचाव के उपाय के बारे में जागरूक किया गया। नैदानिक मनोवैज्ञानिक डॉ अशोक परासर द्वारा मानसिक स्वास्थ्य के प्रति विस्तृत जानकारी प्रदान किया गया। मनोचिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता डॉ0 शांति द्वारा जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ एवं जिला परामर्श केंद्र के बारे में अवगत कराया गया।

सड़क पर गिट्टी डालकर छोड़ दिये जाने से बढ़ी परेशाना

मोढ़। क्षेत्र के हरिपट्टी, कोछिया गड़ेरियापुर तक जाने वाला मार्ग पर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत चौड़ीकरण का कार्य चल रहा है। जिसकी दूरी लगभग छह किलोमीटर है। वहीं ठेकेदार द्वारा उक्त मार्ग पर कहीं-कहीं सिर्फ बड़े-बड़े बोल्डर डालकर छोड़ दिया गया है। जिससे उक्त मार्ग से आने जाने वाले राहगीरों को काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है और वे गिरकर चुटहिल भी हो जा रहे है। उक्त मार्ग पर चलने वाले ग्रामीणों ने कहा कि यदि उक्त मार्ग पर डाले गये गिट्टी पर राबिस डालकर दबा दिया जाए तो रास्ता आने जाने के लिए बाधित नहीं रहेगा।

गरीब कल्याण दिवस पर लगेगा 'सुविधाओं का मेला'

ब्लाकवार किए जाएंगे विभिन्न आयोजन, सीडीओ ने की तैयारियों की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

भदोही। प्रदेश के समस्त जनपदों के समस्त विकास खंड कार्यालयों पर आगामी 25 सितंबर 2021 को गरीब कल्याण दिवस के रूप में मनाये जाने के संबंध में मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह की अध्यक्षता में आज विकास भवन सभागार में आगामी गरीब कल्याण दिवस के रूप में मनाए जाने के संबंध में बैठक हुई, जिसमें समस्त संबंधित विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया।सीडीओ भानु प्रताप सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम जनपद के प्रत्येक विकास खंड स्तर पर आयोजित किया जाना है और उसमें राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनसामान्य को उपलब्ध करायी जायेगी तथा गरीबों के कल्याण हेतु संचालित कार्यक्रमों का आयोजन जनसामान्य के लिए किया जायेगा।

मुख्य विकास अधिकारी भानू प्रताप सिंह ने समस्त विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा जनपद के समस्त विकास खण्ड कार्यालयों पर गरीब कल्याण दिवस को वृहद स्तर पर सफलतापूर्वक मनाये जाने के सम्बन्ध में उसकी पूर्व तैयारियां कर ली जायें। सभी विभागों से अधिकतम जितनी भी योजनाएं हैं राजस्व विभाग की जितनी स्कीम हैं वह भी तथा समस्त विभागों द्वारा लाभार्थियों को लाभ दिया जाएगा, मुख्य चिकित्साधिकारी डा. संतोष चक को निर्देश देते हुये कहा आरोग्य मेला का आयोजन भी होगा, आयुष्मान कार्ड बनवाने की सुविधा भी की जाएगी, कोविड टीकाकरण की भी व्यवस्था वहीं पर होगी।एलडीएम से ऋण देने को कहा, कृषि संयंत्रों के वितरण की व्यवस्था पहले से ही ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को मिनिमम टारगेट देकर कराने के निर्देश दिए। प्रधानमंत्री आवास योजना, ग्रामीणश्शहरी के लिए परियोजना निदेशक को तथा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लिए जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित किया। उन्होंने कहा समस्त गांव की सफाई, सैनिटाइजर की व्यवस्था भी अवश्य होनी चाहिए। वृद्धावस्था पेंशन योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना, व विकलांग विभाग द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के फॉर्म भी समस्त विकास खंडों में आनॅलाइन भरवाए जाएंगे तथा समस्त लाभार्थियों को लाभ दिलाया जाएगा। धात्री महिलाओं व कुपोषित बच्चों के पोषाहार का वितरण का कार्य जिला कार्यक्रम अधिकारी को सौंपा गया है। मुख्य विकास अधिकारी ने समस्त अधिशासी अधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्यक्रम स्थल पर टैंकर की व्यवस्था कराना सुनिश्चित करें।

मुख्य विकास अधिकारी ने बताया उक्त कार्यक्रम जनप्रतिनिधि गणों की उपस्थिति में आयोजित किया जाएगा, सभी विभागों के अधिकारी गणों को जिस विभाग की जो भी योजनाएं हैं उनका व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार कराने और लाभार्थियों को लाभान्वित कराना ही मुख्य उद्देश्य है।

नवनिर्वाचित सीईपीसी सदस्य असलम को किया गया सम्मानित

भदोही। कालीन निर्यात संवर्धन परिषद (सीईपीसी) के हुए चुनाव में एकमा के मानद सचिव असलम महबूब प्रशासनिक समिति के सदस्य चुने गए। गुरुवार को उनके स्टेशन रोड स्थित प्रतिष्ठान में पहुंचकर सपा के जिला उपाध्यक्ष मो. हसनैन अंसारी व वरिष्ठ कालीन निर्यातक श्यामनारायण यादव ने शाल ओढ़ाकर व फूल माला पहनाकर सम्मानित किया और बधाई दी।

इस दौरान सपा जिला उपाध्यक्ष मो. हसनैन अंसारी व वरिष्ठ कालीन निर्यातक श्यामनारायण यादव ने कहा कि सीईपीसी प्रशासनिक समिति के सदस्य के चुनाव में इस बार इंडस्ट्रीज के लोगों ने काफी ऊर्जावान लोगों को जीताया है। जिसमें बुजुर्ग व अनुभवी लोगों के साथ ही साथ युवा भी शामिल हैं। जिनमें काम करने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि कालीन उद्योग के लोगों का सीईपीसी के नई टीम से काफी आशाएं जुड़ी हुई है। जिस पर नवनिर्वाचित सीईपीसी के प्रशासनिक समिति के सदस्य असलम महबूब ने कहा कि इंडस्ट्रीज के लोगों ने जिस विश्वास व उम्मीद के साथ चुनाव में सहयोग किया।

आयुष्मान आरोग्य योजनाः इलाज करने और करवाने वाले हुए सम्मानित

तीन वर्ष पूरे होने पर जनपद मुख्यालय पर 'आयुष्मान भारत दिवस' का आयोजन

अखंड भारत संदेश

भदोही। आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तीन वर्ष पूरे होने पर आज सीएमओ दफ्तर में 'आयुष्मान भारत दिवस' का आयोजन किया गया। इस आयोजन के जरिए उक्त योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार का निर्देश जिला प्रशासन व स्वास्थ्य महकमे ने दिया है।जिलाधिकारी आर्यका अखौरी के द्वारा 10 लाभार्थियों को गोल्डेन कार्ड दिया गया। आयुष्मान कार्ड के द्वारा उपचार कराने वाले पांच लाभार्थियों को पौधा दिया गया। जिलाधिकारी ने सीएचसी गोपीगंज एवं जीवनधारा हास्पिटल आयुष्मान कार्ड धारकों के लाभार्थियों का ज्यादा उपचार किये जाने पर प्रशस्ति पत्र दिया। जिलाधिकारी ने कहा कि आर्थिक तंगी के कारण गरीब परिवार अपना और अपने परिजनों की गंभीर बीमारियों का इलाज अच्छे अस्पतालों में नहीं करा पाते हैं। सरकार ने गरीबों का जीवन बचाने व उन्हे इस बहुत बड़ी समस्या से निजात दिलाने के लिए आयुष्मान भारत जैसी महत्वकांक्षी योजना को लांच किया। मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देश दिया कि गरीब कल्याण दिवस के सभी ब्लाकों में कैंप लगाकर लाभार्थियों को लाभांवित कराने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि आयुष्मान योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए, जिससे कि पात्र लाभार्थियों को लाभांवित कराया जा सके। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भानू प्रताप सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 संतोष चक, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी जेसी सरोज, जेपी सिंह, आशीष श्रीवास्तव, मनीष कुमार, शैलेन्द्र प्रताप सिंह एवं लाभार्थीगण उपस्थित रहे।

गंभीर रोग से पीडित जरूरतमंद लोगों के लिए संजीवनी है योजनाः आर्यका

भदोही जनपद में आज

भदोही। गरीब कल्याण दिवस, 25 सितंबर के आयोजन को लेकर सीडीओ की अध्यक्षता में बैठक विकास भवन में, 11.30 बजे से होगी।

अपराध अभियोजन/भू-विवाद निस्तारण व सदर मालखाना/थाने में जमा माल के निस्तारण एवं नाबालिक लड़कियों के साथ दुराचार की घटनाओं को रोकने के संबंध में बैठक, कलेक्ट्रेट सभागार में अपरान्ह तीन बजे से।सार्वजनिक स्थानों पर धार्मिक प्रकृति के अतिक्रमण हटाए जाने के संबंध में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एक आवश्यक बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में चार बजे से।

पत्रकारों ने शोक सभा कर अर्पित की श्रद्धांजली

मोढ़। पत्रकार इंजी. अंकित मिश्र की बड़ी माता दयावंती देवी के निधन पर पत्रकारों ने मोढ़ स्थित एक निजी प्रतिष्ठान पर शोक सभा कर दो मिनट का मौन रखकर गतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शोक सभा में पत्रकार प्रेस क्लब के प्रदेश उपाध्यक्ष कृष्ण कुमार द्विवेदी, हरीश सिंह, सत्येंद्र द्विवेदी, पंकज द्विवेदी, मोनू मिश्र, डॉ. गोपीचंद तिवारी सहित अन्य पत्रकार शामिल रहे।

कोराना की संभावित तीसरी लहर को लेकर स्वास्थ्य महकमा सतर्क

स्वास्थ्य सुविधाओं को चुस्त दुरूस्त करने के लिए सीएमओ द्वारा प्रतिदिन किया जा रहा है सीएचसी व पीएचसी का निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। कोरोना की संभावित तीसरी लहर को लेकर जिले में स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए मुख्यचिकित्साधिकारी द्वारा प्रतिदिन पीएचसी, सीएचसी व जिला अस्पताल का निरीक्षण किया जा रहा है। मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा कोरोना की तीसरी लहर आने से पहले ही स्वास्थ्य महकमा को पूरी तरह से तैयार रखने व समय से चिकित्सकों व चिकित्सकीय स्टाफ को अस्पताल पहुंचने एवं अस्पताल परिसर व वार्डो में साफ-सफाई को लेकर प्रतिदिन सीएचसी, पीएचसी का तुफानी दौरा किया जा रहा है।

इसी क्रम में आज मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.संतोष चक ने जनपद के हरदोपट्टी में स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान समस्त स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित पाए गए। वहीं अस्पताल परिसर में गंदगी देखकर सीएमओ भड़क गए और वार्ड बॉय को सख्त हिदायत देते हुए अंतिम चेतावनी दी कि अगर इस बार नहीं सुधरे तो अगली बार सख्त कार्रवाई आपके खिलाफ होगी।

दिव्यांगों और बुजुर्गों को घर के पास ही लग सकेगा कोरोना का टीका, केंद्र सरकार ने दी मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। वैक्सीनेशन सेंटर तक पहुंचने में असमर्थ लोगों के लिए केंद्र सरकार ने घर में ही टीकाकरण की व्यवस्था किए जाने को मंजूरी दे दी है। हेल्थ मिनिस्ट्री ने गुरुवार को कहा कि ऐसे लोगों को घर पर ही हेल्थ टीमों की ओर से टीका लगाया जाएगा। इसके लिए उन्हें कहीं भी टीकाकरण के लिए आवेजन करने की जरूरत नहीं होगी। नीति आयोग के सदस्य डॉ. वीके पॉल ने साप्ताहिक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सरकार के इस फैसले के बारे में जानकारी दी। इस फैसले के तहत ज्ञ्ज्ञ्ण् यानी नियर टू होम कोविड वैक्सीनेशन सेंटर्स स्थापित किए जाएंगे। इससे दिव्यांगों और बुजुर्गों को कोरोना टीका लगवाने के लिए यात्रा करने की जरूरत नहीं होगी और उन्हें नजदीक में ही टीका लग सकेगा। हेल्थ मिनिस्ट्री के सचिव राजेश भूषण की ओर से जारी

सूचना में बताया गया कि घर-घर जाकर वैक्सीनेशन का प्रस्ताव एक्सपर्ट कमिटी के सामने रखा गया था। लेकिन इस प्रस्ताव को मंजूरी नहीं मिली। हालांकि जरूरमंद लोगों के घर के पास ही वैक्सीनेशन सेंटर्स बनाकर उन्हें टीका लगाए जाने का फैसला लिया गया है। इस प्रस्ताव के तहत कम्युनिटी सेंटर्स, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन सेंटर, पंचायत बिल्डिंग, स्कूल की इमारत आदि में केंद्र स्थापित किए जाएंगे और वहीं कोरोना के टीके लगाए जाएंगे।

स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी आदेश के मुताबिक 60 साल से अधिक आयु के किसी भी व्यक्ति को उसके घर के पास ही टीका लग सकेगा। इसके अलावा 60 साल से कम आयु के दिव्यांगों को भी उनके घर के नजदीक ही वैक्सीनेशन की सुविधा दी जाएगी। इसके लिए वे अन्य लोगों की तरह पहले से अपॉइंटमेंट ले सकते हैं। यही नहीं यदि वे चाहें तो सेंटर पर पहुंचकर ऑन साइट रजिस्ट्रेशन के जरिए भी टीका लगवा सकते हैं। स्थानीय स्तर पर शहरी निकाय के कर्मचारी या फिर गांवों में आशा वर्कर यह सूची बनाएंगी कि किस क्षेत्र में कितने बुजुर्ग और दिव्यांग हैं और फिर उसके बाद उस क्षेत्र में नजदीक ही वैक्सीनेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा। हर वैक्सीनेशन सेंटर पर 5 लोगों की टीम को नियुक्त किया जाएगा। इसमें एक डॉक्टर, एक प्रशिक्षित नर्स और तीन वैक्सीनेशन ऑफिसर शामिल होंगे, जो पूरी कागजी कार्रवाई करेंगे।

पीएम मोदी ने विमान में फाइल पढ़ते तस्वीर की शेयर, जवाब में कांग्रेस ने मनमोहन सिंह की तस्वीर शेयर कर कसा तंज

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका जाते वक्त अपनी एक तस्वीर विमान के अंदर से शेयर की थी। इस तस्वीर में नजर आ रहा था कि एयर इंडिया की फ्लाइट में बैठे पीएम अहम फाइल वर्क निपटा रहे हैं। उनके सामने कई महत्वपूर्ण कागज रखे हैं और वो उन्हें बारिकी से पढ़ और जांच रहे हैं। इस तस्वीर को शेयर करते हुए प्रधानमंत्री ने लिखा था एक लंबी यात्रा इस बात का अवसर भी देती है कि आप कागजात पढ़ें और कुछ फाइल वर्क भी निपटा लें। प्रधानमंत्री की इस तस्वीर को देखने के बाद अब कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की कुछ तस्वीरें शेयर कर तंज कसा है। कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से यह तस्वीर शेयर की गई है। पार्टी की तरफ से लिखा गया है, कुछ तस्वीरों को कॉपी करना कठिन होता है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह एयर इंडिया के विमान में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए। पार्टी ने पूर्व पीएम की कुल 3 तस्वीरें शेयर की

हैं और इन सभी तस्वीरों के बारे में बताया भी है। एक तस्वीर के बारे में बताया गया है कि 17 सितंबर, 2006 को भारत लौटते वक्त पूर्व पीएम एयर इंडिया के विमान में मीडिया से बातचीत करते हुए। एक अन्य तस्वीर के बारे में बताया गया है कि फ्लाइट में मीडिया से बातचीत करते हुए। एक तस्वीर नॉन अलाइंग मूवमेंट समिट के बाद दिल्ली लौट रहे पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह की है, जिसमें वो फ्लाइट के अंदर मीडिया से रूबरू हैं। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका की यात्रा पर हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अमेरिका की यात्रा के पहले दिन बृहस्पतिवार को आठ बैठकें करने का कार्यक्रम है जिसमें अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के साथ मुलाकात भी शामिल है। व्हाइट हाउस में हैरिस से मुलाकात के अलावा प्रधानमंत्री ऑस्ट्रेलिया और जापान के अपने समकक्षों क्रमशः स्कॉट मॉरिसन और योशिहिदे सुगा के साथ दो द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे। ग्लोबल सीईओ के साथ मुलाकात में पीएम मोदी उन्हें भारत में निवेश का आमंत्रण देंगे।

जम्मू-कश्मीरः सेना ने 24 घंटे में चार आतंकवादियों को किया ढेर, 5 एके-47 के साथ भारी विस्फोटक बरामद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने गुरुवार को एलओसी पर उरी के पास रामपुर सेक्टर में 3 आतंकवादियों को ढेर कर दिया है। ये आतंकवादी हाल ही में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से भारतीय सीमा प्रवेश किए थे। सरकारी सूत्रों ने बताया कि सेना की ओर से किए गए इस ऑपरेशन में ढेर हुए आतंकवादियों के पास से पांच एके-47, 8 पिस्तौल और 70 हथगोले बरामद किए गए हैं। इस संबंध में अभी पूरी जानकारी आनी बाकी है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर के शोपियां में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के साथ हुई मुठभेड़ में एक आतंकावादी मारा गया था। यह मुठभेड़ बुधवार की रात को हुई थी। कश्मीर क्षेत्र की पुलिस ने ट्वीट कर बताया कि कल रात, आतंकवादी अनायत अशरफ डार ने जीवर हमीद भाटी में एक नागरिक पर गोलियां चला दी थी, जिससे वह व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया और अब भी अस्पताल में भर्ती है। पुलिस ने बताया कि मादक पदार्थ के धंधे में शामिल अनायत गरैकानूनी तरीके से हासिल किए गए हथियारों के दम पर अपने गांव वालों और उसके बाहर के लोगों को भी धमकाता था। घटना को लेकर पुलिस ने बताया कि सूत्रों से मिली जानकारियों के आधार पर काशना गांव में घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया गया था। तलाशी अभियान के दौरान ही अनायत ने फायरिंग कर दी। पुलिस ने कहा कि अनायत से पूरी रात आत्मसमर्पण करने को कहा गया, लेकिन वह नहीं माना। इसके बाद मुठभेड़ में वह मारा गया। एक पिस्तौल और गोला-बारूद भी मौके से बरामद हुआ है।

खास पत्थर से बना है विष्णु पद मंदिर, जहां पितरों के लिए खुलता है पितृलोक का द्वार

अतुल तिवारी

प्रयागराज। इस बात से तो सब वाकिफ ही हैं कि इस समय पितृ पक्ष चल रहा है। कहते हैं कि इस दौरान अपने पितरों का श्राद्ध करने से उनकी आत्मा को मोक्ष मिलता है और इसके साथ ही वह अपना आशीर्वाद भी अपने परिवार पर बनाए रखते हैं। शास्त्रों में भी कहा गया है कि अगर कोई गया जी में एक बार अपने पितरों का श्राद्ध कर आए तो मृतक की आत्मा को सदा के लिए मोक्ष मिल जाता है और फिर बार-बार श्राद्ध भी नहीं करना पड़ता है। आज हम आपको बिहार के गया में स्थित एक ऐसे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसके बारे में शायद ही कोई जानता होगा।

बिहार के गया में भगवान विष्णु के पदचिह्नों पर मंदिर बना है। जिसे विष्णुपद मंदिर कहा जाता है। यहां पितृपक्ष के अवसर पर श्रद्धालुओं की काफी भीड़ जुटती है और इसे धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है। कहते हैं कि जो लोग यहां अपने पितरों का तर्पण करने आते हैं वे इस विष्णु मंदिर में भगवान के चरणों के दर्शन करने भी अवश्य आते हैं। मान्यता है कि भगवान के चरणों के दर्शन करने से इंसान के सारे दुखों का नाश होता है एवं उनके पूर्वज पुण्यलोक को प्राप्त करते हैं। मंदिर में भगवान के चरणों का श्रृंगार रक्त चंदन से किया जाता है और ये काफी पुरानी परंपरा बताई जाती है। विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिह्न ऋषि मरीची की पत्नी माता धर्मवत्ता की शिला पर है। राक्षस गयासुर को स्थिर करने के लिए धर्मपुरी से माता धर्मवत्ता शिला को लाया गया था, जिसे गयासुर पर रख भगवान विष्णु ने अपने पैरों से दबाया। इसके बाद शिला पर भगवान के चरण चिह्न है। माना जाता है कि विश्व में विष्णुपद ही एक ऐसा स्थान है, जहां भगवान विष्णु के चरण का साक्षात दर्शन कर सकते हैं। विष्णुपद मंदिर सोने को कसने वाला पत्थर कसौटी से बना है, जिसे जिले के अतरी प्रखंड के पत्थरकट्?टी से लाया गया था। इस मंदिर की ऊंचाई करीब सौ फीट है। सभा मंडप में 44 पीलर हैं। 54 वेदियों में से 19 वेदी विष्णुपद में ही हैं, जहां पर पितरों के मुक्ति के लिए पिंडदान होता है। यहां पूरे सालभर पिंडदान होता है। मंदिर के शीर्ष पर 50 किलो सोने का कलश और 50 किलो सोने की ध्वजा लगी है। विष्णुपद गर्भगृह में 50 किलो चांदी का छत्र और 50 किलो चांदी का अष्टपहल है, जिसके अंदर भगवान विष्णु की चरण पादुका विराजमान है। यहां भगवान विष्णु के चरण चिन्ह के स्पर्श से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं। विष्णुपद मंदिर के ठीक सामने फल्गु नदी के पूर्वी तट पर स्थित है सीताकुंड। यहां स्वयं माता सीता ने महाराज दशरथ का पिंडदान किया। बताया जाता है कि पौराणिक काल में यह स्थल अरण्य वन जंगल के नाम से प्रसिद्ध था। भगवान श्रीराम, माता सीता के साथ महाराज दशरथ का पिंडदान करने आए थे, जहां माता सीता ने महाराज दशरथ को बालू फल्गु जल से पिंड अर्पित किया था, जिसके बाद से यहां बालू से बने पिंड देने का महत्व है।गया तीर्थ में पितरों का श्राद्ध और तर्पण किए जाने का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। पुराणों के अनुसार, गयासुर नाम के एक असुर ने घोर तपस्या करके भगवान से आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। भगवान से मिले आशीर्वाद का दुरुपयोग करके गयासुर ने देवताओं को परेशान करना शुरू कर दिया। गयासुर के अत्याचार से दुःखी देवताओं ने भगवान विष्णु की शरण ली और उनसे प्रार्थना की कि वह गयासुर से देवताओं की रक्षा करें। इस पर विष्णु ने अपनी गदा से गयासुर का वध कर दिया। बाद में भगवान विष्णु ने गयासुर के सिर पर एक पत्थर रख कर उसे मोक्ष प्रदान किया।

कांग्रेस के लिए 2022 में सिरदर्द होंगे कैप्टन अमरिंदर सिंह? इस रणनीति से सतर्क हुई पार्टी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। कैप्टन अमरिंदर सिंह के इस्तीफे के बाद चरणजीत सिंह चन्नी को भले ही कांग्रेस ने पंजाब का सीएम बना दिया है, लेकिन अब भी पार्टी को दिग्गज नेता की ओर से अभयदान नहीं मिला है। यही वजह है कि कांग्रेस फिलहाल कैप्टन अमरिंदर सिंह को लेकर बेहद सतर्क है और उनकी एक्टिविटीज पर नजर बनाए हुए हैं। अब उनके दिल्ली स्थित ओएसडी नरेंद्र भांबरी के एक ट्वीट को लेकर कांग्रेस में चर्चा हो रही है। भांबरी ने ट्विटर पर एक पोस्टर शेयर किया है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि कैप्टन 2022। उनके इस ट्वीट से यह कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या कैप्टन अमरिंदर सिंह 2022 के विधानसभा चुनाव में उतर सकते हैं। भांबरी ने बुधवार की शाम को ही यह ट्वीट किया था और फिर कुछ देर के बाद ही कैप्टन अमरिंदर सिंह की ओर से जारी बयान में कहा गया कि वे 2022 के विधानसभा चुनाव में नवजोत सिंद्धू के खिलाफ मजबूत उम्मीदवार उतारेंगे। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कहा कि मैं सिद्धू को सीएम नहीं बनने दूंगा और इसके लिए हरसंभव प्रयास करूंगा। कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि पार्टी पहले

ही अमरिंदर सिंह को लेकर सतर्क है और उन पर नजर बनाए हुए हैं। इंडियन एक्सप्रेस ने कांग्रेस सूत्र के हवाले से अपनी रिपोर्ट में कहा, ये रिपोर्ट्स भी चल रही हैं कि कैप्टन अमरिंदर सिंह 2 अक्टूबर को बड़ा ऐलान कर सकते हैं।

पंजाब में चर्चा है कि कैप्टन अमरिंदर सिंह के कुछ किसान यूनियनों से बहुत अच्छे रिश्ते हैं। इसके चलते वे केंद्र सरकार और किसानों के बीच बातचीत के लिए एक सेतु के तौर पर काम कर सकते हैं। कांग्रेस सूत्र ने कहा कि उन्होंने सीएम पद से हटने के बाद से जितने भी इंटरव्यू दिए हैं, उसमें पार्टी को लेकर तो बात की है, लेकिन भाजपा पर चुप्पी साधे रखी है। ऐसे में कांग्रेस उन्हें लेकर सतर्क है। पंजाब के राजनीतिक जानकारों का कहना है कि कैप्टन अमरिंदर सिंह इसलिए फिलहाल इंतजार कर रहे हैं क्योंकि मंत्रि परिषद का गठन नहीं हुआ है।

कैबिनेट के गठन के बाद कैप्टन अमरिंदर सिंह नाराज नेताओं को साथ लेकर कोई ऐलान कर सकते हैं। फिलहाल उनके ओएसडी की ओर से पोस्टर शेयर किए जाने के बाद से इस बात की चर्चा जोरों पर है कि क्या कैप्टन अमरिंदर सिंह 2022 का चुनाव लड़ेंगे। कहा जा रहा है कि कैप्टन अमरिंदर सिंह का कुछ प्लान जरूर है। सिद्धू के खिलाफ उम्मीदवार उतारने की बात करके उन्होंने इसके संकेत जरूर दे दिए हैं।

कैप्टन अमरिंदर सिंह की रणनीति को ध्यान में रखकर ही कांग्रेस संभलकर चल रही है। इसीलिए पार्टी ने एक तरफ दलित सिख को सीएम बनाया है तो वहीं जाट सिख और सवर्ण हिंदू समुदाय के नेता को डिप्टी सीएम बनाया है। अब मंत्रिपरिषद के गठन में भी जातीय और क्षेत्रीय समीकरणों को साधने का प्रयास किया जाएगा। हाल ही में सीएम चरणजीत सिंह चन्नी और प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू दिल्ली गए थे ताकि मंत्रिपरिषद पर चर्चा की जा सके।

तालिबान राज में अफगान मीडिया का बुरा हाल, 150 अखबार हुए बंद, ऑनलाइन का ही सहारा

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान राष्ट्रीय पत्रकार यूनियन ने दावा किया है कि वित्तीय संकट के कारण अफगानिस्तान में लगभग 150 प्रिंट मीडिया आउटलेट्स ने पूर्व सरकार के पतन के बाद से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की छपाई बंद कर दी है। टोलो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, तालिबान राज के आते ही अफगानिस्तान मीडिया भारी वित्तीय संकट से जूझ रहा है. अफगानिस्तान में राष्ट्रीय पत्रकार संघ के मुख्य कार्यकारी अहमद शोएब फाना ने कहा, ड्ढदेश में प्रिंट मीडिया बंद हो गया है। अगर ऐसे ही हालात रहे तो हमें सामाजिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। '8 सोभ' अखबार के लिए काम करने वाले पत्रकार अली हकमल की रिपोर्ट कहती है कि आउटलेट अब ऑनलाइन प्रकाशित हो रहा है। उन्होंने कहाः हमने वह करने का प्रयास किया जो लोग उम्मीद करते हैं।

ऐसे कैसे कम होगी ड्रैगन की दादागिरी? चीन विरोधी गठबंधन 'ऑकस' में भारत को शामिल नहीं करेगा अमेरिका

वाशिंगटन (एजेंसी)। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की घेराबंदी के लिए अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के साथ मिलकर एक नया गठबंधन बनाया है, जिसका नाम है 'ऑकस'। अमेरिका ने इस त्रिपक्षीय गठबंधन 'ऑकस' (एयूकेयूएस) में भारत या जापान को शामिल किए जाने की संभावना को खारिज कर दिया है। अमेरिका ने स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि वह इस नए गठबंधन में भारत को शामिल नहीं करेगा। मगर यहां सवाल उठता है कि चीन विरोधी गठबंधन ऑकस में क्या भारत को शामिल किये बिना ही अमेरिका हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ड्रैगन की दादागिरी को अमेरिका कम कर पाएगा। दरअल, व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव जेन साकी ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पिछले हफ्ते ऑकस की घोषणा केवल सांकेतिक नहीं थी और मुझे लगता है कि राष्ट्रपति जो बाइडन ने भी फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों को यही संदेश दिया है कि हिंद-प्रशांत की सुरक्षा के लिए बनाए गठबंधन में किसी अन्य देश को

शामिल नहीं किया जाएगा। साकी से सवाल किया गया था कि क्या भारत या जापान को इस गठबंधन में शामिल किया जाएगा, जिसके जवाब में उन्होंने उक्त जवाब दिया।

अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया ने हिंद-प्रशांत में चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण इस क्षेत्र के लिए नए त्रिपक्षीय सुरक्षा गठबंधन 'ऑकस' (एयूकेयूएस) की 15 सितंबर को घोषणा की थी, ताकि वे अपने साझा हितों की रक्षा कर सकें और परमाणु ऊर्जा से संचालित पनडुब्बियां हासिल करने में ऑस्ट्रेलिया की मदद करने समेत रक्षा क्षमताओं को बेहतर तरीके से साझा कर सकें। इस समझौते के कारण उसने फ्रांस के साथ अनुबंध रद्द कर दिया है।अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के इस गुट में भारत का शामिल न होना फिलहाल झटका होगा या नहीं, यह कहना मुश्किल है। मगर जिस तरह से पनडुब्बी डील को लेकर अमेरिका और फ्रांस के बीच तनातनी है, ऐसे में माना जा सकता है कि अमेरिका उस क्वाड को तवज्जो देना कम कर सकता है, जो चीन के वर्चस्व को कम करने के लिए बना है। क्वाड में भारत और फ्रांस शामिल हैं।

डरावनी हो चुकी है समुद्रों की हालत

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक नई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पिछले 41 सालों में जर्मनी के आकार से छह गुना ज्यादा आर्कटिक की बर्फ पिघल गई. इससे पूरी दुनिया में समुद्रों का सतह नाटकीय रूप से बढ़ा है. कॉपरनिकस मरीन एनवायरनमेंटल मॉनिटरिंग सर्विस की पांचवीं सालाना रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के समुद्रों की हालत बदतर होती चली जा रही है. इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए यूरोपीय आयोग ने 150 वैज्ञानिकों को जिम्मेदारी सौंपी थी. इन वैज्ञानिकों ने रिपोर्ट में यह दिखाने की कोशिश की है कि मानवीय हस्तक्षेप की वजह से समुद्र कितनी जल्दी बदल रहे हैं. सबसे बुरा परिणाम यह हुआ है कि समुद्रों के गर्म होने और बर्फ के पिघलने से

समुद्र का स्तर बढ़ रहा है. आने वाले परिणाम भूमध्य-सागर में यह वृद्धि सालाना 2.5 मिलीमीटर और दुनिया के बाकि हिस्सों में 3.1 मिलीमीटर तक की दर से दर्ज की जा रही है. रिपोर्ट में कहा गया है कि नवंबर 2019 में वेनिस में जो बाढ़ आई थी वो आने वाले परिणामों का उदाहरण है. वेनिस में पानी का स्तर 1.89 मीटर तक ऊपर चला गया था. समुद्रों के गर्म होने से समुद्री जीव-जंतु और ठंडे पानी की तरफ प्रवास कर रहे हैं। इसके अलावा कुछ प्रजातियों की तो आबादी ही घट रही है. 1979 से लेकर 2020 के बीच में आर्कटिक ने इतनी बर्फ खो दी जो जर्मनी के कुल आकार से छह गुना ज्यादा मात्रा में थी. 1979 से ले कर अब तक बर्फ 12.89 प्रतिशत कम हुई है. रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि अगर आर्कटिक की समुद्री बर्फ इसी तरह पिघलती रही तो इससे इस इलाके में तापमान और बढ़ सकता है।

डब्ल्यूएचओः वायु प्रदूषण से हर साल ७० लाख लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा कि वायु प्रदूषण के कारण होने वाली बीमारी का बोझ अस्वास्थ्यकारी आहार और धूम्रपान के बराबर है.संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य एजेंसी ने अब वायु प्रदूषण को धूम्रपान या अस्वास्थ्यकारी आहार के बराबर माना है. नतीजतन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नए सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं. संगठन का दावा है कि इससे लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है. डब्ल्यूएचओ ने 22 सितंबर को कहा कि वायु प्रदूषण अब मानव जीवन के लिए सबसे बड़े पर्यावरणीय खतरों में से एक है, जिससे हर साल 70 लाख लोगों की अकाल मृत्यु होती है. संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने यह भी कहा कि तत्काल कार्रवाई की जरूरत को पहचानने के बाद वह अपने वायु गुणवत्ता दिशानिर्देशों को

मजबूत कर रही है. नए दिशानिर्देश 'लाखों लोगों की जान बचा सकते हैं' नए दिशानिर्देश ओजोन, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड समेत पदार्थों पर लागू होते हैं. डब्ल्यूएचओ ने एक बयान में कहा, ठडब्ल्यूएचओ ने लगभग सभी वायु गुणवत्ता दिशानिर्देश स्तरों को नीचे की ओर समायोजित किया है यह चेतावनी देते हुए कि नए स्तर से अधिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण जोखिम से जुड़ा हैठ एजेंसी का कहना है, ठउनका पालन करने से लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती हैठ दिशानिर्देशों का उद्देश्य लोगों को वायु प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभावों से बचाना है. डब्ल्यूएचओ का कहना है कि वह सरकारों से अपील करती है कि दिशानिर्देशों का पालन करे. जितना सोचा जाता था उससे ज्यादा खतरनाक डब्ल्यूएचओ ने आखिरी बार 2005 में वायु गुणवत्ता दिशानिर्देश जारी किए थे, जिसका दुनिया भर में पर्यावरण नीतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था. हालांकि संगठन का कहना है कि पिछले 16 सालों में ऐसे सबूत सामने आए हैं जिनसे पता चलता है कि वायु प्रदूषण सेहत को प्रभावित करता है. उसका कहना है कि पहले की तुलना में वायु प्रदूषण इंसान की सेहत पर कहीं अधिक प्रभाव डाल रहा है. डब्ल्यूएचओ ने कहा, ठन सिर्फ खास देशों या क्षेत्रों में बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रमुख वायु प्रदूषकों को कम करने के लिए इकट्ठा सबूत कार्रवाई को सही ठहराने के लिए पर्याप्त हैठ नए दिशानिर्देश ण्ध्इ26 वैश्विक जलवायु शिखर सम्मेलन से पहले जारी किए गए हैं।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025